हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

अप्रैल 2002 | वर्ष 1 | अंक 2

सम्पादक :
डा० हारून रशीद सिद्दीकी

सहायक :
मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय :
मासिक सच्चा राही!
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 787250
फैक्स : 787310
e-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि :

एक प्रति	रु० 9/-
वार्षिक	रु० 100/-
विशेष वार्षिक	रु० 500/-
विदेशो में (वार्षिक)	25 US डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ - 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित किया।

एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने से गुज़रा जो शारीरिक रूप से स्वस्थ और मज़बूत हाथ पांव का था। सहाबा रज़ी० ने अर्ज़ किया, क्या ही अच्छा होता ऐसा व्यक्ति जिहाद में शरीक होता। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :–

यदि यह व्यक्ति अपने बच्चों के पालन पोषण के लिए ह़लाल तरीके से रोज़ी की तलाश में निकला है तो यह भी अल्लाह के रास्ते में उसका जिहाद है और यदि इसलिए निकला है कि इतनी रोज़ी अपनी मेहनत मज़दूरी से प्राप्त कर ले कि लोगों के सामने लज्जित न होना पड़े तो यह भी जिहाद है। हां यदि दिखाने और नुमाईश के लिए निकला है तो वह शैतान की राह में है।

मौलाना अली मियाँ

☆☆☆

विषय एक नज़र में

- ✦ मानव जाति को मानवता का संदेश — *सम्पादकीय* 3
- ✦ कुर्आन की शिक्षा — *मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)* 5
- ✦ प्यारे नबी का प्यारी बातें — *मौलाना सय्यद अब्दुल हयी हसनी (रह०)* 7
- ✦ जिस टहनी पर हमने अपना घोंसला बनाया — *मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)* 10
- ✦ ज़िन्दगी के बिगाड़ का वास्तविक उपचार — *मौलाना सय्यद मु० राबे हसनी* 17
- ✦ दुआ और उसकी फ़ज़ीलत — *मौलाना मु० मन्ज़ूर नोमानी (रह०)* 19
- ✦ उज्जवल भविष्य की ओर — *मौलाना सय्यद मुहम्मदुल हसनी* 21
- ✦ पारदर्शिता — *मो० हसन अन्सारी* 23
- ✦ इस्लाम में सत्रे औरत अर्थात नग्न अंग का छुपाना — *मा० कलीमुल्लाह खाँ* 24
- ✦ जीवन में सदव्योवहार - अच्छे अख़लाक़ — *अनुवाद - मो० अतहर हुसैन* 28
- ✦ तकलीफ़ देने वाला मिज़ाह — *इदारा* 31
- ✦ मोटापा कारण एवं निवारण — *वैद्य के० एस० अरोरा* 32
- ✦ इस्लामी व्यवस्था में ही मोक्ष है — *अनुवाद - हबीबुल्लाह आज़मी* 33
- ✦ देवनागरी लिपी और अरबी भाषा — *डा० एच० रशीद* 35
- ✦ आपकी समस्याऐं और उनका हल — *मु० सरवर फ़ारूक़ी* 37
- ✦ अंतर्राष्ट्रीय समाचार — *मुईद अशरफ़ नदवी* 39
- ✦ नवीन प्रकाशनों का परिचय — *इदारा* 40

❐❐❐

मानव जाति को मानवता का सन्देश

— डा० हारून रशीद सिद्दीकी

मुसलमान कहते हैं कि हम उस रसूल पर ईमान रखते हैं जिस को अल्लाह ने समस्त ब्रह्माण्ड के लिये करूणा पात्र बनाकर भेजा है, हिन्दू कहते हैं कि हम उस राम के श्रद्धालु हैं जो रावण जैसे अत्याचारी तथा उसके अत्याचार के विनाश के लिये अवतरित हुआ था परंतु समझ में नही आता कि फरवरी के अन्तिम सप्ताह में अयोध्या से अहमदाबाद तक, चलती रेलों से यात्रियों को ढकेल देने वाले, उठाकर फेंक देने वाले, भुजाली भोंक कर वध कर देने वाले, दुकानदारों से बे पैसा खा पी कर डाँट बता देने वाले, रेल में आग लगाकर यात्रियों को जीवित जला देने वाले, और ऐसे लोग जिन्हों ने ना तो किसी को गाली दी थी न किसी को बुरा कहा था ना किसी को हानि पहुँचाई थी, उनको, उन की बीवी बच्चों समेत जीवित जला देने वाले किस के अनुयायी थे ?

हमारा ईमान है और हर धर्म वाले का विश्वास है, तथा हमारा अनुभव भी इस बात पर साक्षी है कि जिस सर्वशक्तिमान ने यह सृष्टि रची है उस के यहाँ किसी कारण देर तो है पर अन्धेर नहीं है, वह अत्याचारी को दण्ड देकर रहता है अत्याचारी चाहे रावण हो, कंस हो, हिरण्यकशिपु हो फिरओन हो नमरूद हो, हिन्दू हो, मुसलमान हो जो भी हो उस को पीड़ित की हाय भसम कर के छोड़ेगी, यह तो होकर रहेगा, अब अत्याचारी चाहे ईशप्रकोप से भय खा कर अपने भविष्य के लिये चिन्तित हो, चाहे बाघ बन कर उसका सामना करे।

परन्तु हम मानव हैं मानवता के नाते हमको कुछ ऐसे उपायों की चिन्ता करना चाहिये जिससे भविष्य में इस प्रकार का रक्तक्रीड़ा न खेला जाय। इन रोमांचक घटनाओं से हर हृदय चिल्ला पड़ा है, पत्थर हृदय वाला भी बस–बस और त्राहि–त्राहि पुकारने लगा है। भविष्य में ऐसा न हो इस के लिये सामाजिक समितियाँ, राजनैतिक पार्टियां, शासन प्रबन्ध सभी की चेष्ठाएं चल रही हैं और वह सब लाभदायक होंगी परन्तु इस जटिल समस्या के समाधान में मानवता के प्रयासों की जो भूमिका हो सकती है उसकी बराबरी नहीं हो सकती, इसी प्रकार की पिछली घटनाओं को देखते हुए विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त महाज्ञानी, महापुरुष स्वर्गवासी मौलाना सय्यद अबुलहसन अली हसनी नदवी (रह०) ने मानवता का सन्देश घर–घर पहुंचाने के लिये "पयामे इन्सानियत फोरम नाम की एक समिति स्थापित की थी और एक आन्दोलन चलाया था, आज भी वह समिति कार्यशील है। आज उस आन्दोलन में तेजी लाने की आवश्यकता है और देश में उसको प्रचलित करने की जरूरत है।

यह सत्य है कि धर्म ही मानवता का सन्देश है, परंतु हमारे देश में अनेक धर्म हैं जिनके विश्वासों तथा कर्मों में जमीन व आसमान का अन्तर है वह केवल इस बात में सहमत हैं कि इस सृष्टि का कोई रचियता है, अतः यह असम्भव है कि सभी धर्म एक हो जांए, इस लिये कि हर धर्म का अनुयायी अपने धर्म से सन्तुष्ट है, अतः एक धर्म वाला जब दूसरे धर्म वाले को अपने धर्म का निमंत्रण देगा तो वह उससे लड़ पड़ेगा जबकि शान्ति पूर्वक जीवन बिताने के लिये पारस्परिक मेल जोल और प्रेम अति आवश्यक है इसको मालिक की मेहरबानी ही कहें कि एक आदर्श तथा शान्तिमय समाज के लिये जिन मानवी गुणों की आवश्यकता है वह हर धर्म में पाये जाते हैं अतः उन मानवी गुणों का प्रसारण और उनको एक दूसरे तक पहुंचाना ही मानव जाति को मानवता का सन्देश पहुँचाना है, हम यहाँ ऐसे कुछ गुणों का वर्णन करते हैं जो हर धर्म में अभीष्ट हैं जैसे :–

1. किसी परोक्ष सर्वशक्तिमान जाति पर विश्वास, साथ ही उसके समक्ष उत्तर दायी होने का विश्वास, तथा उसकी ओर से पुरस्कृत अथवा दन्डित किये जाने का विश्वास।

2. सत्य ग्रहण करना तथा झूट से दूर रहना।

3. न्यायधारी होना तथा न्याय भंगक और कपटी होने से घृणा करना।

4. प्रतिज्ञा पालक होना तथा विश्वास घाती होने से बचना।

5. सतीत्वधारी बनना और व्यभिचारिता से घृणा होना।

यह और इसी प्रकार की और अनेक बातें हैं जो हर धर्म में पाई जाती हैं हम उनको दूसरों तक पहुँचायें साथ ही वह व्यवहार जो हर समाज में प्रचलित भी हैं और प्रिय भी यदि उन में कोताही हो रही है तो उन का प्रचलन भी आवश्यक है, जैसे–

1. पड़ोसी बीमार हो तो उसे देखने जाना, आवश्यकता हो तो शक्तिनुसार उनकी सहायता करना।

2. बीमारी के अतिरिक्त कोई भी आपत्ति आ जाये तो अपने पड़ोसी के साथ यही व्यवहार करना।

3. अपने पड़ोसी की रक्षा में भी कोई कमी नही होना चाहिये।

अपनी बोली बानी, रहन–सहन, प्रेम, संयम तथा सहानुभूति से दूसरों का मन मोह लेना चाहिये।

इस समय जो बातें याद आईं प्रस्तुत कर दीं अधिक जानकारी के लिये आप पयामे इन्सानियत आफिस से सम्पर्क करें[1] परंतु इन उपायों का पालन जभी होगा जब इस ब्रह्माण्ण के रचयिता पर पूर्ण विश्वास होगा, और इन उपायों का लाभ जभी होगा जब सर्वशक्तिमान जगत निर्माता के समक्ष उत्तरदायित्व का भय होगा इसके बिना पाप अत्याचार भ्रष्टाचार सब चलते रहेंगे, अत्याचारियों को इस संसार में दण्ड मिलेगा, पापों पर इस जगत में पकड़ होगी परन्तु सत्यमार्ग न मिल सकेगा यहाँ तक कि दूसरे दुखदायी जीवन में प्रवेश कर जायेंगे।

इस विषय के अन्त में एक महत्वपूर्ण बात की ओर आपका ध्यान लेजाना चाहता हूँ कि इस युग का एक फैशन यह भी है हो गया है कि जगत विधाता से माँगने तथा प्रार्थना करने का कर्म समाप्त होता जा रहा है, यह मनुष्य की भूल है जहाँ मनुष्य के लिये वैध चेष्ठा आवश्यक है, वहीं उससे माँगना और प्रार्थना करना भी अनिवार्य है, मेरी जानकारी में अपने मालिक (ईश्वर) से माँगना हर धर्म में है लेकिन इस्लाम में दुआ (प्रार्थना) का बड़ा महत्व हैं, पवित्र कुर्आन की प्रथम सूरत ही में प्रार्थना की शिक्षा दी गई है, यह भी याद रहे कि वन्दना और है तथा प्रार्थना और है, हमारे लिये अति आवश्यक है कि हम अपनी समस्याओं के समाधान के लिये वैध शारीरिक प्रयासों के साथ अपने सृजनहार, पालनहार महादाता से प्रार्थना भी किया करें।

1-पयामे इन्सानियत फोरम, पो०बा० नं० 93 नदवा लखनऊ 226 007

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया कि जो लोगों के सदव्यवहार पर उनका शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) नहीं होता वह अल्लाह का शुक्रगुज़ार नहीं होता।

(तिर्मिज़ी)

क़ुर्आन की शिक्षा

अल्लाह उस के रसूल उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों पर ईमान

(क़ुर्आन के हवाले में पहला नम्बर सूरे का है और दूसरा आयत का)

– मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी नगरामी रह०

ऐ वह लोगो जो ईमान ला चुके हो ईमान लाओ अल्लाह पर, उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो पहले उतारी और जो इन्कार करेगा ख़ुदा का और उस के फ़रिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और क़ियामत के दिन का वह पथ भ्रष्ट होकर बड़ी दूर जा पड़ा। (4:136)

अल्लाह पर ईमान

हम दुन्या की ओर आँख उठा कर देखते हैं तो बड़े–बड़े घर, चलती फिरती गाड़ियाँ, रेल और मोटर भांति–भांति के कपड़े, बड़ी और छोटी मशीनें और इनके सिवा बहुत सी चीज़ें नज़र आती हैं, हम विश्वास करते हैं कि यह चीज़ें ख़ुद ही नहीं बन गई हैं बल्कि किसी बनाने वाले ने इनको अवश्य बनाया होगा, इसी प्रकार सारी दुन्या पर ग़ौर करने से साफ़ ज्ञात होता है कि जब यह साधारण तथा छोटी–छोटी वस्तुएं बिना बनाये नहीं बन गईं तो यह ज़मीन, आसमान, पहाड़, चाँद, सूरज, सितारे, हरी भरी घास, रंग बिरंग के फूल, तरह–तरह के जानवर, बहती हुई नदियाँ, और समुद्र क्या किसी बनाने वाले के बिना बन गये, स्वयं अपने आप को देखना चाहिए, यह हाथ, पैर, आँख, नाक, कान, इस सुन्दरता तथा मध्यता के साथ क्या स्वयं ही पैदा हो गये ?

जाड़े गर्मी बरसात का अपने–अपने समय पर आना और जाना, दिन के पश्चात् रात और रात के पश्चात् दिन का निकलना क्या किसी नियम के बिना है ?

हम मुसलमान विश्वास रखते हैं कि जिसने दुन्या के पूरे कारख़ाने को बनाया और विशेष प्रबन्ध से चलाया, वही हमारा अल्लाह है, मुसलमान होने के लिये पहली तथा आवश्यक बात यही है कि हम अपने मालिक को मान लें।

वह तुम्हारा पालनहार है, हर चीज़ का पैदा करने वाला है। (क़ुर्आन 40 : 62)

यह प्राकृतिक नियम बनाया हुआ है उस (मालिक) का जो महाज्ञानी प्रभुत्वशाली है। (36 : 38)

यह ख़ुदा की कारीगरी है जिसने हर वस्तु को नियम पूवर्क बहुत अच्छा बनाया है। (27 : 88)

हमारा यह मालिक किन गुणों वाला है वह स्वयं बताता है :

अल्लाह वह है कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं वह ज़िन्दा है सब का काम पूरा करने वाला है, उसको न ऊंघ आती है न नींद। (2 : 55)

वह जानता है जो उनके सामने है और जो उनके पीछे है। (2 : 255)

वही जीवित करता है और वही मारता है। (40 : 68)

ज़मीन और आसमान की कुंजियाँ उसी के अधिकार में हैं। (39 : 63)

पृथ्वी पर कोई (जीविका खाने वाला) जीवधारी ऐसा नहीं जिसकी जीविका का प्रबन्ध अल्लाह ने न किया हो। (11 : 6)

निःसंदेह अल्लाह वह है जो किसी पर कण भर भी अत्याचार नहीं करता। (4 : 40)

निःसंदेह अल्लाह वह है जो अपने बन्दों के साथ नर्मी का बरताव करता है। (42 : 19)

बेशक अल्लाह वह है जो नेकी करने वालों की मेहनत को नष्ट नहीं होने देता। (9 : 120)

वह मालिक एक है, अकेला है, उस जैसा दूसरा कोई नहीं, कोई उस का साझी नहीं, अगर कोई और ख़ुदा होता तो यह जगत नष्ट हो जाता।

अगर ज़मीन और आसमान में एक ख़ुदा के सिवा और भी ख़ुदा होते तो ज़मीन और आसमान बरबाद हो जाते। (क़ुर्आन 21 : 22)

बरबादी इस प्रकार होती जैसे एक कहता पानी बरसे, दूसरा चाहता कि धूप निकले, एक किसी को ज़िन्दा रखता तो दूसरा उसको मारता, नतीजा यह होता कि यह सब बना बनाया कारखाना ख़ाक में मिल जाता, लेकिन हम देखते है कि ऐसा नहीं है, तो ज्ञात हुआ कि ख़ुदा एक ही है।

जो लोग उस ख़ुदा को छोड़कर दूसरों को पूजते हैं ईंट, पत्थर, लकड़ी, पेड़, नदी और पशुओं को ख़ुदा (पूज्य) बनाते हैं उनमें से किसी में भी ख़ुदाई की शान नहीं है, न वह किसी को मार सकते हैं और न वह किसी को जीवन दे सकते हैं, न किसी रोगी को स्वस्थ कर सकते हैं, न किसी को कुछ दे सकते हैं, बल्कि यह सब तो हमारे हाथों ही के बनाये हुये हैं,

वह ख़ुद कुछ नहीं बना सकते दूसरे उनको बनाते हैं और वह अपनी हानि या अपने लाभ के मालिक भी नहीं हैं न

किसी को मार सकते है न किसी को जिला सकते हैं न ही कियामत में दोबारा जिलाने की शक्ति रखते हैं। (25:3)

अगर मक्खी उनसे कोई चीज़ छीन ले तो उसे वापस नहीं ले सकते। (22:73)

रसूल पर ईमान

"और ईमान लाओ उस के रसूल पर"

ख़ुदा अपने बन्दों पर बहुत प्यार करता है, इसी प्यार की वजह से वह दुन्या में ऐसे आदमी भेजता रहा है जो बन्दों को उसके हुक्म की वह बातें जिनसे ख़ुदा ख़ुश होता है उनको करने का हुक्म दें, और उन बातों से रोकें जो उनकों पसन्द नहीं हैं, उन आदमियों को रसूल और नबी कहते हैं, और उन के द्वारा बन्दों को जो हुक्म (आदेश) मिलते हैं उनकों दीन और शरीअ़त कहते हैं, यह रसूल सच्चे और आज्ञाकारी बन्दे होते हैं, अच्छे कामों का हुक्म देते हैं, बुराईयों से रोकते हैं, उनके पास "वह्य" आती है, दुन्या में अ़ल्लाह के बहुत से रसूल आये हैं, उन सब को मानना और उन सब को अपना रसूल जानना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है, हज़रते आदम, हज़रते नूह, हज़रते इब्राहीम, हज़रते मूसा, हज़रते ईसा (अ़लैहिमुस्सलाम) बड़े–बड़े रसूलों के नाम हैं।

हमारे रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम सब रसूलों के बाद आये, यह आख़िरी नबी हैं, इनके पश्चात् कोई और नबी नहीं आयेगा।

हम मुसलमान सब रसूलों का सम्मान करते है और जनाब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम) को सबसे बड़ा बुजुर्ग और आख़िरी नबी मानते हैं।

फ़िरिश्तों पर ईमान

शुरू की आयत में आ चुका कि : "जो इन्कार करेगा अल्लाह का और उसके फ़िरिश्तों का और उसकी किताबों का और उस के रसूलों का और कियामत के दिन का वह पथ भ्रष्ट (गुमराह) है अतः फ़िरिश्तों पर भी ईमान अनिवार्य है।

रसूलों के पास अल्लाह के पैग़ाम (सन्देश) लाने वाले को "फ़िरिश्ता" कहते हैं, इन फ़िरिश्तों को मानना और उनको अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने में सच्चा जानना आवश्यक है।

फ़िरिश्ते ख़ुदा की अवज्ञा नहीं करते हैं, सदैव उसके गुणों का जाप करते रहते हैं, उस से डरते और कांपते रहते हैं, जमीन वालों के लिये विशेषतया नेक लोगों के लिये क्षमा मांगते रहते हैं, कुकर्मियों पर लानत करते हैं, फ़िरिश्ते ही लोगों पर ख़ुदा की बरकत या अ़ज़ाब लेकर आते हैं, मौत के वक़्त रूह (जान) भी फ़िरिश्ते निकालते हैं। परन्तु यह समझे रहना चाहिये कि किसी को हानि या लाभ पहुँचाने में इन फ़िरिश्तों को तनिक भी अधिकार नहीं है, यह अ़ल्लाह के हुक्म के बन्दे हैं, जो हुक्म मिलता है, वहीं करते हैं।

ख़ुदा की किताबों पर ईमान

"और (ईमान लाओ) उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो पहले उतारी। (4:136)

अ़ल्लाह ने अपने बन्दों की शिक्षा के लिये रसूलों की किताबें दीं हैं, इन किताबों में अल्लाह के हुक्म और भलाई की बातें लिखी हैं, हम मुसलमान ख़ुदा की इन सब किताबों पर विश्वास रखते हैं, इन किताबों में से प्रसिद्ध किताबों के नाम यह हैं–

तौरात :– यह हज़रत मूसा (अ०) को दी गई।

ज़बूर :– यह हज़रत दाऊद (अ०) को दी गई।

इंजील :– यह हज़रत ईसा (अ०) को दी गई।

जो किताब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम) को दी गई वह "कुर्आन" है, यह ख़ुदा की आख़िरी किताब है, ख़ुदा के सिवा किसी में यह ताक़त नहीं कि कुर्आन जैसी किताब तैयार कर सके इस बरकत वाली किताब के विषय में ख़ुदा ख़ुद बताता है–

कुर्आन उन चीज़ों की ओर रास्ता दिखाता है जो अत्यन्त उचित हैं। (17:9)

(कुर्आन) सत्य मार्ग दिखाता है। (72:2)

जो लोग इस पर (कुर्आन पर) विश्वास रखते हैं उनको यह सत्य मार्ग दिखाता है शुभ सूचना देता है।

आख़िरत पर ईमान

और वह परलोक (आख़िरत) पर ईमान रखते हैं। (2:4)

हम मुसलमान इस बात का यक़ीन रखते है कि एक दिन यह सारी दुन्या मिट जायेगी और हम अपने अल्लाह के सामने जायेंगे, जिसने इस दुन्या में अच्छे काम किये हैं। वहाँ उसको उन अच्छे कामों का इनआम मिलेगा, और जिसने बुरे काम किये हैं अल्लाह तआला उसको सज़ा देंगे या माफ कर देंगे इसी का नाम आख़िरत है जिसे आप हिन्दी में परलोक कह लीजिये।

अब समझना चाहिये कि मुसलमान वह है जो एक अल्लाह को माने और उसके फ़िरिश्तों को माने और यह माने कि यह दुन्या एक दिन ख़त्म हो जायेंगी और हर आदमी का उसके अच्छे या बुरे कामों को ख़ुदा के यहाँ बदला मिलेगा।

एक शख़्स ने रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से पूछा कि ईमान किस को कहते हैं ? आपने फ़र्माया कि ईमान यह है कि अल्लाह, उसके फ़िरिश्तों, उसके रसूलों, उसकी किताबों और कियामत के दिन पर यक़ीन रखो।

●●●

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना सय्यद अब्दुल हयी हसनी (रह०)

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत (कथन) है कि जब रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन भेजा तो उनसे फ़रमाया तुम ऐसे लोगों के पास जा रहे हो जो अहले किताब हैं, इसलिए तुम उन लोगों को सबसे पहले अल्लाह को एक मानने की दावत देना जब वह इसको समझ लें तो उनको बताना कि अल्लाह तआ़ला ने दिन–रात में पाँच नमाज़ें फ़र्ज (अनिवार्य) की हैं। **(बुखारी)**

2. हज़रत मुआज़ बिन जबल रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुआज़ क्या तुम जानते हो अल्लाह का बन्दों पर क्या हक़ है हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह का हक़ बन्दों पर यह है कि उसकी इबादत करें और उसके साथ किसी को साझीदार न बनायें। फिर फरमाया क्या तुमको मालूम है कि बन्दों का अल्लाह पर क्या हक़ है जवाब में हज़रत मुआज़ रजियल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह पर बन्दों का यह हक़ है कि वह उन्हें अज़ाब न दें। **(बुखारी)**

3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हुमा फरमाते हैं कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया ग़ैब की कुंजियाँ पाँच है जिनको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि बच्चेदानी में क्या है (नर या मादा) और उसके सिवा किसी को ख़बर नहीं कि बारिश कब होगी, और किसी को नहीं, मालूम कि उसकी मौत किस ज़मीन पर होगी और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि क़ियामत कब आयेगी। **(बुखारी)**

3. हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक रात हुदैबिया में तमाम रात पानी बरसा, सुबह को रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ाई, जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हम सब की ओर मुतवज्जेह हो कर फरमाया ! तुम जानते हो कि तुम्हारे रब ने क्या फरमाया ! लोगों ने फरमाया ! अल्लाह और उस के रसूल (सल्ल०) खूब जानते हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि आज सुबह के वक़्त मेरे कुछ बन्दों ने मेरी कुदरत को मान लिया और कुछ ने न माना जिन्होंने कहा यह बारिश अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत से हुई तो यह मेरे मोमिन बन्दे हैं, सितारों के इन्कार करने वाले है जिन लोगों ने कहा कि नक्षत्र की वजह से हुआ तो वह मेरा इन्कर करने वाले हैं और सितारों पर यक़ीन करने वाले हैं। **(मुस्लिम)**

5. हज़रत मुआ़विया बिन हकम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैने रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा या रसूलल्लाह मुझे इस्लाम लाये हुए थोड़े दिन गुज़रे हैं अब अल्लाह के फ़ज़्ल से इस्लाम का दौर है लेकिन अभी हममें कुछ लोग ऐसे है जो लोग काहिनों (अभिचारक) के पास जाते है, रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम काहिनों (अभिचारक) के पास न जाना मैंने अर्ज़ किया हममें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो शगून लेते है, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया यह एक चीज़ है जिसको लोग अपने दिल में पाते हैं तो उनको चाहिए कि यह चाल उनको काम से न रोके मैंने अर्ज किया ऐसे भी कुछ लोग हैं जो खत (चिन्ह) खींचते हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक नबी ख़त (चिन्ह) खींचते थे तो अगर लोगों का ख़त उनके ख़त (चिन्ह) के मुताबिक़ हो तो ठीक है।

नोट : इससे अब मना किया गया है क्योंकि जब खत (चिन्ह) खींचने का इल्म खत्म हो चुका हो तो उस पर अमल

करना हराम है अर्थात् वह क्या जानेगा कि पैग़म्बर किस तरह खत खींचते थे इसलिए जब मालूम न हुआ तो हराम है।

6. हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया छूत–छात कोई चीज़ नहीं न परिंदों से शुगून लेना ठीक है न हाम्मा का कोई वुजूद है और न सफ़र (महीना) में कोई नहूसत है। **(बुखारी)**

नोट : (i) छूत–छात, बिमारी का लगना या न लगना यह सब अल्लाह की मर्जी से होता है यह यक़ीन रखना कि छूत–छात का असर जरूर होता ही है यह सही नही है इस हदीस में इसका इन्कार किया गया है।

(ii) परिंदों से शुगून लेना सही नहीं अर्थात् उनके दाहिने बायें उड़ने से किसी चीज़ का शुगून लेना दुरुस्त नहीं।

(iii) हाम्मा : उल्लू के बोलने, बैठने या ऊपर से उड़ने को मन्हूस जानना या यह समझना कि यह किसी मरे हुए का रूप हैं जो क़ातिल से बदला लेने का मुतालबा करता है, जब इन्तिक़ाम ले लिया जाता है तो वह उड़ जाती है।

(iv) सफर : विभिन्न महीनों और घड़ियों को मन्हूस समझने का अकीदा हर जगह पाया जाता रहा है आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस तरह के अक़ीदे और ख़्यालों को गलत बताया है, सब महीने अल्लाह के हैं किसी महीने में भी कोई अच्छा काम किया जा सकता है।

7. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है एक दिन मैं रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पीछे था आपने फ़रमाया "लड़के मैं तुम को कुछ शब्द बताता हूँ तुम अल्लाह के हुक्मों की हिफ़ाज़त करो वह तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा अल्लाह को याद रखो उसको अपने सामने पाओंगे जब सवाल करना तो अल्लाह ही से करना जब मदद चाहना तो अल्लाह ही से चाहना जान लो कि अगर पूरी दुनिया इस बात पर इत्तिफ़ाक कर ले कि तुझको फायदा पहुँचाये, तो तुझको कुछ फायदा नहीं पहुँचा सकती मगर वही जो अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है और अगर पूरी दुनिया इस बात पर इत्तिफ़ाक कर ले कि तुझको नुकसान पहुचाये तो नुक़सान नहीं पहुँचा सकती मगर वही जो अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है कलम उठा लिये गये और सहीफ़े खुश्क कर दिये गये। (अर्थात् मुकद्दर का लिखा अब नहीं मिट सकता) **(तिर्मिज़ी)**

8. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है, कि तुममें से हर व्यक्ति को अपनी तमाम ज़रूरतें अल्लाह तआ़ला से माँगना चाहिए यहाँ तक कि जब उस के जूते का तस्मा (बदधी) टूट जाए वह भी अल्लाह तआ़ला (ही) से माँगें। **(तिर्मिज़ी)**

9. हज़रत अ़दी बिन हातिम रजि यल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ और मेरे गले में सोने का सलीब पड़ा हुआ था। रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया! अ़दी ! इस बुत को (अपने गले से उतार कर) फेंक दो, फिर मैंने आपको "सूरःअलबरात" की यह आयत पढ़ते सुना "इत्तखजु अहबारहुम व रुहबानहुम अरबाबम्मिन दूनिल्लाहि" अर्थात् इन्होंने अल्लाह को छोड़कर आ़लिमों और राहिबों को अल्लाह मान लिया। फिर इर्शाद फरमाया वह उनकी इबादत नहीं करते थे लेकन जब वह किसी चीज़ को हलाल कर देते तो यह लोग हलाल समझने लगते और किसी चीज़ को इन पर हराम करते तो यह उसको हराम समझते। **(तिर्मिज़ी)**

नोट : अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बताई हुई हलाल चीज़ को कोई हराम नहीं कर सकता और हराम बताई हुई चीज़ को कोई हलाल नहीं कह सकता, न कोई आ़लिम और न कोई बुजुर्ग और जो ऐसा करने वाले आदमी की बात मान ले और उसके लिए हराम व हलाल करने की इजाज़त समझे तो वह इसमें शामिल हो जायेगा।

10. हज़रत क़ैस बिन सअ़द बिन उबादह खज़रजी अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है! फ़रमाया कि मैं "हीरा" नामी जगह गया, तो वहाँ के लोगों को देखा कि वह अपने सरदार को सज्दः करते हैं मैंने कहा कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो ज़्यादह हक़दार है कि आप को सज्दः किया जाय उसके बाद मैं रसूलुल्लाहि (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर हुआ और अर्ज़ किया कि {ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)} मैं हीरा (नामी जगह) गया था (तो मैंने वहाँ यह) देखा कि वह लोग अपने सरदार को सज्दः करते हैं आप तो उससे कहीं ज़्यादा हक़दार हैं कि हम आप को सज्दः करें। आप ने मुझ से फरमाया कि यह बताओ कि अगर तुम मेरी कब्र के पास से गुज़रोगे तो क्या उसको सज्दः क़रोगे? मैंने अर्ज़ किया नहीं तब आप ने फरमाया तुम (लोग) ऐसा न करो। **(अबूदाऊद)**

नोट : सहाब–ए–कराम (रजि०) को अल्लाह के रसूल के सामने सज्दः करने का कभी खयाल भी नहीं आया जब दूसरे मुल्क में सज्दः करते देखा तो उनको भी

खयाल पैदा हुआ लेकिन उन्होंने खयाल पर अमल नहीं किया बल्कि पहले पूछा। तो रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मना फरमा दिया और अपनी आखिरी वसीयत में उन लोगों पर लानत भेजी जिन्होंने अपने अम्बिया की कब्रों को सज्दागाह और जश्नगाह बना लिया था।

12. हज़रत रबीअ़ बिन्त मुअव्विज़ बिन अफ़रा रजियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है फ़रमाया! कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) तशरीफ लाए पहली रात में इस तरह मेरे बिस्तर पर बैठे जैसे आप बैठे हुए हैं। इतने में हमारी कुछ बच्चियाँ दुफ (डफुला) बजाने लगीं और हमारे बाप दादों में जो काम आये थे उनकी मरसियाख्वानी करने लगीं इतने में एक लड़की ने कहा और हममें एक ऐसे नबी हैं जो कल की बात जानते हैं। आप (सल्ल.) ने फरमाया यह छोड़ दो (मत कहो) वह कहो जो तुम कह रही थीं। **(बुखारी)**

नोट : (i) इसमें जहाँ बिस्तर पर बैठने का ज़िक्र है यह परदा का हुकम नाज़िल होने से पहले का वाक़िया है।

(ii) ग़ैब (परोक्ष) की बात को अपनी तरफ सुनकर रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तुरन्त इस्लाह़ फ़रमा दी ताकि आगे चलकर अक़ीदा न बिगड़ने पाये।

13. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) हज़रत उमर (रज़ि०) से रिवायत करते हुए फरमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को फरमाते हुए सुना है कि मेरी हद से बढ़ी हुई तारीफ़ न बयान करना जैसा कि नसारा (ईसाइयों) ने हज़रत ईसा बिन मरयम (अलै०) की ग़लत और हद से बढ़ी हुई तारीफ़ की मैं तो उसका बन्दा हूँ तो तुम भी (मुझे) अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल कहो। **(बुख़ारी)**

नोट : ईसाइयों ने हज़रत ईसा (अ़लै०) के मोजिज़े (चमत्कार) को देख कर यह कहना शुरू कर दिया कि वह अल्लाह के बेटे है कुछ ने कहा अल्लाह उन की सूरत में उतर आया है और ज़्यादातर लोगों ने "तस्लीस" का अक़ीदा अपना लिया इसी तरह अगर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के बारे में ऐसा अक़ीदा रखे तो मुश्रिक हो जाएगा, या कहे कि आप आलिमुलग़ैब हैं, हाज़िर नाज़िर हैं, मुख्तारे कुल हैं यह सब ही शिर्क की बातें है।

14. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लहि (सल्ल०) ने फरमाया तुम में कोई व्यक्ति हरगिज़ न कहे मेरा बन्दा, मेरी बन्दी, (इसलिए कि) तुम सब अल्लाह तआ़ला के बन्दे हो और तुम्हारी सब औ़रतें अल्लाह तआ़ला की बन्दियाँ हैं। लेकिन चाहिए कि वह यूँ कहे मेरा गुलाम मेरी बाँदी, मेरे नौजवान मर्द, और मेरी नौजवान औरत (मेरे लड़के मेरी लड़की) और गुलाम (अपने आक़ा को) मेरा रब न कहे, उसको चाहिए कि वह यूँ कहे मेरे आक़ा, मेरे मौला और एक रिवायत में है कि गुलाम मौला भी न कहे इस लिए कि तुम्हारा मौला अल्लाह है। **(मुस्लिम)**

15. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह ने तुम को बाप दादा की क़सम खाने से मन किया है। जिसको क़सम खाना हो वह अल्लाह की क़सम खाए वरना ख़ामोश रहे। **(बुखारी, मुस्लिम)**

16. हज़रत आ़बिस बिन रबीअ़ (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने हज़रत उमर (रज़ि०) को देखा हज्र अस्वद चूम रहे थे और कह रहे थे कि मै जानता हूं कि तू पत्थर है न फायदा पहुँचा सकता है न नुकसान, अगर मैं रसूलुल्लाहि (सल्ल०) को चूमते न देखता तो मैं भी न चूमता। **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

नोट : हज़रत उमर (रज़ि०) ने उम्मत को अ़क़ीदा की खराबी से बचाने और महफ़ूज़ रखने के लिए जहाँ–जहाँ बेजा अकीदे पैदा होने का अन्देश था उस का इलाज फरमा दिया, यहाँ पर भी हज्र अस्वद को मुखातब करते हुए साफ कर दिया कि फायदा, नुक़सान केवल अल्लाह के हाथ में है, दूसरी तरफ बैते रिज़वान जिस दरख्त के नीचे हुई थी उसको भी कटवा दिया ताकि उस दरख़्त से बेजा अक़ीदे न हो जाय।

अनुवादक **मुहम्मद सरवर फारुक़ी नदवी**

●●●

पहली बार ... **पवित्र क़ुर्आन "पारा अम्म" का अनुवाद और व्याख्या**

पवित्र क़ुर्आन अल्लाह की नाज़िल की हुई पूरी दुनिया के तमाम इन्सानों के लिए किताबे हिदायत है जिसके तर्जुमे और तफसीर दुनिया की विभिन्न ज़बानों में आ चुके हैं उसी की एक कड़ी हिन्दी ज़बान में जिसको बेहद जरूरत थी अपनी विशेषता के अनुसार पहली कोशिश है।

इसमें हर सूरः से पहले उसका संक्षिप्त परिचय शाब्दिक अर्थ और अलग–अलग तर्जुमे के साथ आख़िरी में पूरी तफ़सीर दी गयी है जो न केवल मुस्लिमों के लिए बल्कि दुनिया के तमाम इन्सानों के लिए बेहद लाभदायक और पथ प्रदर्शक है।

(इसी तरह आइन्दा इंशा अल्लाह और भी पारे आने वाले है)

प्रकाशक : मकतबः पयामे अम्न, फारूक़ी, नदवा रोड लखनऊ

मिलने का पता : मजलिसे तहक़ीक़ात, नदवा लखनऊ, यू.पी.

साइज़ 22×32/8 **Rs. 100/-**

जिस टहनी पर हमने अपना घोसला बनाया है आज हम उसी पर आरी चला रहे हैं

राजनैतिक पार्टियों के सामने केवल एक यही उद्देश्य रह गया है कि चुनाव किस प्रकार जीता जाए !

– मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी

इलाहाबाद की एक सार्वजनिक सभा में हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह० ने "वर्तमान परिस्थित में हमारी सोसाइटी क्या रोल अदा कर सकती है" इस विषय पर तक़रीर फ़रमायी जलसे में हज़ारों की संख्या में मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम शिक्षित वर्ग के लोग शरीक थे। पूरी तक़रीर शांतिपूर्वक सुनीगई और उसे हर एक ने दिल की आवाज़ समझा आम लोगों के फ़ायदे के लिए यह तक़रीर प्रकाशित की जा रही है।

कभी–कभी वर्षो बाद ऐसा अवसर आता है कि इन्सान किसी गंभीर बीमारी से दो चार होता है। यूँ तो इन्सान बीमार होकर,अच्छा होकर भूख को बताकर, खाने का मुहताज बन कर अपनी इन्सानियत को ज़ाहिर करता है और अपनी इन्सानियत का सुबूत देता है लेकिन जिस को बुहरानी कैफ़ियत (असाधारण परिस्थित) कहते हैं, हिस्टीरिया का हमला कहते हैं और पूरी इन्सानी सोसाइटी जिस का शिकार हो वह कभी शताब्दियों के बाद हुआ करता है। बाज़ मुख्य कारणों की बिना पर कुछ तत्व (Factors) ऐसे होते हैं जो अपना काम करते रहते हैं। उस समय लोगों को ख़्याल नहीं होता कि वह क्या अमल कर रहे हैं, उनको आज़ाद छोड़ दिया जाता है। बहुत से लोग उनका नोटिस लेने की ज़रुरत महसूस करते हैं परन्तु यह तत्व (Factors) अपना काम करते रहते है और फिर वह काम करते–करते जिस तरीक़े से हर चीज़ की एक मंजिल होती है वह उसी तरह विकसित (Develop) होती है कि उसका हमला हिस्टीरिया जैसा होता है और वह अचानक ही होता है और बहुत शदीद (तीव्र) होता है। आदमी हैरान रह जाता है कि यह मुसीबत कहां से आई हालांकि ऐसा नहीं होता है। इस का माद्दा (पदार्थ) कई दिनों से तैयार हो रहा था इन्सान का शरीर उसकी मुवाफ़कत करने से उस को रिजेक्ट (Reject) करने से उसका मुक़ाबला करने से हार गया था, उसके सामने हथियार डाल चुका था यहां तक कि इस बीमारी का पूरी तरह क़ब्ज़ा हो गया।

इस समय जो हालात हमारे मुल्क में है और पूरी दुनिया में पाए जा रहे हैं वह प्रतिकूल और असाधारण हैं लेकिन यह मानने के लिए मैं तैयार नहीं और आप में से सभी लोग शिक्षित और विद्वान हैं और जानते हैं कि यह हालात अचानक ऐक्सीडेंट (Accident) की तरह पेश नहीं आए बल्कि यह उस विकास (Evolution) का नतीजा है जो सैकड़ों वर्षो से काम कर रहा था। इन बीमारियों की रफ़तार कम व बेश होती रहती है। कभी मोटर की रफ़तार से तो कभी ऐटमिक इनर्जी की रफ़तार से भी अधिक तेज़ होती है।

इस समय जो बुनियादी हालात हमारे देश के सामने हैं यह अचानक नहीं पैदा हो गये। आप को बहुत अचम्भा हो या आप उसे आशा के ख़िलाफ़ बात समझ रहे हों लेकिन मैं इस पर किसी हैरत और अचम्भे का इज़हार नहीं करता–मुझे इन परिस्थितियों से निराशा भी नहीं और मुझे इनसे अधिक दुख भी नहीं। यह परिस्थितियां तो मेरे नज़दीक जीवन का लक्षण है। यह हालात तो पैदा होते रहते हैं। हमारे इतिहास का जितना रिकार्ड हमारे पास मौजूद है यह बताता है कि इन्सान फ़रिश्तों की तरह या बेनफ़्स (अस्वार्थी) इन्सानों की तरह जिस के अन्दर शर (बुराई) की क्षमता ही न हो बल्कि वह अच्छाइयों का पुतला बन गया हो। उसके अन्दर सिवाए भलाई, और भलाई चाहने के किसी प्रकार की क्षमता ही न रही हो इतिहास में ऐसा कोई काल नहीं गुज़रा। यदि गुज़रा भी है तो वह किसी पैग़म्बर (ईशदूत) की कोशिश, किसी बड़े समाज सुधारक के प्रयत्न से लेकिन इस का धेय भी बहुत सीमित था। यह नहीं रहा कि सदियों तक यह परिस्थित क़ायम रही हो और सारे संसार पर और पूरी पृथ्वी पर उसका प्रभाव हो ऐसा नहीं हुआ। आमतौर पर हर *ज़माने में अक्सरियत* मध्यम वर्ग के लोगों की रही है। जीनियस (Genius) क़िस्म के लोग हर काल में बहुत कम होते हैं और इस ज़माने में भी कम हैं।

हमारे देश में जो इस समय अव्यवस्था है, धन पैदा करने की जो होड़ है, खुदग़र्ज़ी हमारे ऊपर छाई हुई है, इस समय जो

दौलत की भूख और प्यास इस सीमा तक बढ़ गई है कि आदमी दीवाना हो गया है। इस समय जो करप्शन फ़ैला हुआ है, इस समय जो आवश्यकता की वस्तुओं को जमा करने की होड़ है, इस समय अपनी–अपनी की जो पड़ी है, कर्त्तव्य पालन की कमी है, इस समय ईमानदारी और अमानत नहीं पायी जाती है मुझे इस पर अधिक दुख भी नहीं है। मैं इस सूरत हाल से बिल्कुल निराश नहीं हूँ।

वर्तमान परिस्थिति से न मैं खिन्न हूँ न निराश यह जो कुछ हो रहा है स्वाभाविक रूप में हो रहा है। मुख्य तत्वों और उनके विकास का नतीजा है और यही होना चाहिये। मुझे तअ़ज्जुब केवल दो चीज़ों पर है। एक तो यह कि हर चीज़ सीमा को लांघ जाए और इसमें सामूहिक लाभ इस तरह पीठ पीछे चले जाएं कि मानों इसकी कोई अस्लीयत ही नहीं है अर्थात धनी बनना यह जज़्बा कोई बुरी चीज़ नहीं है। यह हमेशा रहा है। दुनिया की उन्नति और चहल–पहल इसी जज़्बे पर निर्भर है। यदि यह कहा जाए तो ग़लत न होगा कि अगर यह जज़्बा इन्सानों में न होता तो सभ्यता और सांइस इतनी तरक़्क़ी न करती बल्कि सच तो यह है कि हमारा साहित्य हमारी शायरी उन्नति न करती। इसलिए कि हमारी शायरी और साहित्य को इसी से प्रेरणा मिलती है।

इन्सान के अन्दर बड़े बनने का जज़्बा स्वाभाविक है। उसके अन्दर मुक़ाबले का जज़्बा स्वाभाविक तौर पर है। वह एक दूसरे से बाज़ी ले जाना चाहता है। इसके अन्दर सुन्दरता की अनुभूति है इसके अन्दर कमाल की क़द्र है। ज्ञान, साहित्य, कविता और फ़लसफ़े (दर्शन) को वह क़द्र की निग़ाह से देखता है।

अलबत्ता दो चीज़ें शिक़ायत के योग्य और चिन्ताजनक हैं। उसके कारण यदि हम और आप चिन्तित हों, हमारी और आपकी नींद प्रभावित हो तो वह बिल्कुल उचित और स्वाभाविक है। एक तो यह कि इन्सान की यह इच्छा अंधी और बहरी हो जाए और वह इन इच्छाओं के पीछे दीवाना और पागल हो जाए कि वह हर क़ीमत पर दौलतमन्द बनना चाहे, हर क़ीमत पर सुखी जीवन व्यतीत करना चाहे, हर क़ीमत पर धनी होना चाहे और वह चाहे कि कम से कम समय में अधिक से अधिक धन उसके पास जमा हो जाए, एक रात में लखपती, करोड़पती बन जाए।

यदि आप दुनिया के नैतिक मूल्यों के इतिहास का अध्ययन करें, परन्तु अफ़सोस तो यह है कि ऐसा कोई इतिहास लिखा ही नहीं गया जिस में दुनिया की तरक़्क़ी को और उस पर जो घटनाएं घटित हुई और इन्सान में जो रुजहान काम करते हैं उनको नैतिक मूल्यों के पैमाने से नापा गया हो, कोई ऐसा थर्मामीटर नहीं रहा लेकिन यदि आप ख़ुद दुनिया के नैतिक मूल्यों के इतिहास का अपनी कोशिश और ज़िहानत से अध्ययन करें तो आप को मालूम होगा कि दुनिया को इस जज़्बे से इतनी हानि नहीं पहुंची, अधिकार प्राप्त करने के जज़्बे, दौलत हासिल करने के जज़्बे ने इंसानियत को कभी कोई नुक़सान नहीं पहुंचाया। यह चीज़े तो साधारण लोगों में हमेशा रही हैं बल्कि बहुत से नेक इन्सानों में भी रही है, पैग़म्बरों की तर्बियत की हुई (प्रशिक्षित) जमाअत में भी रही हैं लेकिन हानि जिस चीज़ से पहुंची वह अन्धाधुंध दौलत की इच्छा और कम से कम समय में आंखमूंद कर मालदार बन जाने का जज़्बा है। आप देखेंगे कि दुनिया में जो बड़ी जंगें हुई हैं, दुनिया में जो तबाही और बरबादी फैली, वह उन लोगों के हाथों नहीं हुई जिन के अन्दर मध्यम दर्जे का धनी बनना, सुख के साथ जीवन व्यतीत करना और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने का जज़्बा था।

दुनिया की तबाही उन लोगों के हाथों हुई जो अपनी इच्छाओं के पीछे अन्धे और बहरे होकर पड़ गये। यह ख़ूनी लकीरें जो आप को इतिहास के माथे पर नज़र आती हैं, इतिहास के अन्दर जो एक काल को दूसरे काल से अलग करती हैं और एक देश को दूसरे देश से, एक राज्य को दूसरे राज्य से, और एक समुदाय के विभिन्न वर्गो, एक बिरादरी को दूसरी बिरादरी से टकराती रहती हैं और खूनी लकीरें इन्सानों के गर्म, ताज़ा और गाढ़े खून से खिंची हुई हैं, यह लकीरें उन लोगों की बनाई हुई हैं जिनके अन्दर यह जज़्बा जुनून की हद तक पहुंच गया था और जिन्होंने तमाम इन्सानी फ़ायदों, सामूहिक मसलेहतों, इन्सान के भविष्य को इन्सान के अधिकार को चैलेंज किया था, इनसे इन्कार किया था इनको ठुकरा दिया था, सब को मटिया मेट कर दिया, सबका गला घूंट देने की कोशिश की थी। यह जो बड़े–बड़े राजे महाराजे, बड़े–बड़े विजयी आपको नज़र आते हैं वह इसलिए नहीं हुए थे कि आवश्यकतानुसार दौलत हासिल करें, जरूरत के अनुसार शक्ति प्राप्त करें, अपने देश से विदेशियों के शासन को समाप्त करें आवश्यकतानुसार अपने देश का सम्मान और उसकी सुरक्षा करें और क़ब्ज़ा जमाने वाले विदेशियों को अपने देश से निकालें, यह तो बहुत पवित्र उद्देश्य था। उस ज़माने के दीनदार, फ़लसफ़ी (दार्शनिक) और बुद्धिजीवी इसकी प्रशंसा करते। कौन इससे इन्कार कर सकता था। हमारे देश पर अंग्रेज शासन

करते थे। उनको इस देश पर क़ब्ज़ा करने का क्या अधिकार था। जिन लोगों ने इसके विरोध में आंदोलन किया वह एक पवित्र कर्तव्य को अदा करने के लिए उठे थे। हर आदमी ने उनकी पीठ ठोंकी उनको शाबाशी दी। वह कौन सा नामुराद, कौन सा वतन दुश्मन, कौन सा अभागा था जिसने इसकी मुख़ालफ़त की। यह जज़्बा तो हर ज़माने में निहायत पवित्र, सम्मान जनक और हर तरह प्रशंसनीय था। इससे न कभी हानि पहुंची और न पहुंच सकती है। मैं एक विद्यार्थी की हैसियत से चैलेंज करता हूँ और दावा करता हूँ कि आप दिखा दें कि कभी किसी देश को उसका उचित अधिकार दिलानें के लिए जो भी चेष्टाएं की गई उनसे किसी आन्दोलन को हानि पहुंची हो और किसी सभ्यता को नुक़्सान पहुंचा हो लेकिन यही कोशिशे जब सीमा को फ़लांग जाती है और खून ख़राबे का रूपधारण कर लेती हैं और हिस्टीरिया की शक्ल में ज़ाहिर होती है तो फिर दुनिया में वह तबाही व बरबादी आती है जिस के विचार से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह तबाही इतनी अधिक आम होती है जितने साधन इन आन्दोलन कारियों के पास होते हैं। अल्लामा इक़बाल ने कहा है:–

सिकंदर व चंगेज़ के हाथों से जहां मे
सौ बार हुई हज़रते इन्सान की कुबा चाक

जब यह ख़ूनी सैलाब आता है तो तमाम सभ्यताएं, हर प्रकार की संस्कृति, हज़ारों वर्ष के जमा किये हुए ख़ज़ाने, हज़ारों वर्षों की जमा की हुई पुस्तकें जिनके लिए बुद्धिजीवियों ने अपनी आंखे फोड़ी थीं, रातों को जाग–जाग कर मेहनतें की थीं, कवियों के काव्य संग्रह जिनको उन्होंने ख़ूने जिगर से तैयार किया था और जो इन्सानी ज़िहानत के बेहतरीन नमूने थे क्षण भर में बिल्कुल राख हो जाते हैं और पूरा नगर नहीं बल्कि कभी–कभी पूरा देश मलबे में बदल जाता है। इसलिए मुझको इससे कोई शिकायत नहीं है और न मैं अपने भाईयों से इस कारण निराश हूँ कि वह सफ़ल जीवन व्यतीत करने की इच्छा कर रहे हैं।

लेकिन मुझे अफ़सोस इस बात पर होता है कि सामूहिक लाभ को बिल्कुल उपेक्षित कर दें और सामूहिक फायदें के मलबे और क़ब्र पर अपना निजी लाभ की नई इमारत तैयार करें। जब किसी शहर या किसी समाज या सोसाइटी में यह बीमारी पैदा हो जाए अर्थात उनके अन्दर यह जज़्बा पैदा हो जाए कि इन्सान की लाशों पर गुज़र कर हम को आराम करना है। हमको आम इन्सानों के जज़्बात को कुचलते हुए, उनके जीवन की अवश्यकताओं का इन्कार करते हुए, उनके बच्चों को यतीम बनाते हुए और उनकी औरतों को सोगवार और बेसहारा करते हुए अपनी आवश्यकताओं और अपनी इच्छाओं को पूरा करना है तो यह जज़्बा ख़तरनाक है। जब किसी सोसाइटी में यह ज़हर पैदा हो जाए तो वह सोसाइटी और समुदाय ज़ियादा दिनों तक दुनियाा में रहने के क़ाबिल नहीं रह जाता बल्कि यह जज़्बा पूरी क़ौम को, पूरी इन्सानियत को हलाक व बरबाद कर देता है।

सोसाइटी हमेशा उन लोगों के पांव के नीचे कुचली गई है, रौंदी गई है जो बिल्कुल मस्त हाथी की तरह रहते थे जिनका उद्देश्य यह था कि हमको दौलत हासिल करनी है, हमें तो इज़्ज़त पैदा करनी है, हमें तो मंत्री बनना है चाहे इसके लिए कोई मूल्य अदा करना पड़े हर क़ीमत पर इसको हासिल करना है। इसलिए वह अपने गांव, नगर क़स्बे बल्कि पूरी सोसाइटी व समुदाय को दाँव पर लगा देते हैं और तमाम इन्सानों को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कुर्बानगाह पर चढ़ा देते हैं

यही बीमारी कुछ दिनों से हमारे अन्दर भी पैदा हो गई है। यह बीमारी बड़ी ख़तरनाक है और जो कुछ आप इस समय देख रहे है, आम ज़िन्दगी में जो असमानता है सब कुछ होते हुए हमें कुछ नहीं मिल रहा है। हमें इस पर इतना अफ़सोस न होता अगर यह देश कृषि प्रधान न होता। हमें ग़ल्ला न मिलने पर इतना अफ़सोस न होता यदि हमारे इस देश के साधन सीमित होते, यहां खेती न होती, इतना बड़ा देश हमको न मिला होता, आबादी बहुत लेकिन छोटा सा होता। यदि हमारे देश में प्रकृति का वरदान और अल्लाह की नेअ़मतें न आती जैसा कि यूरोप के बहुत से देश हैं। वहां सब कुछ है मगर पैदाईश बहुत कम होती है। आप मध्य यूरोप जाएं आपको वहां ऐसे छोटे–छोटे देश मिलेंगे कि जिनके यहां साधन की बहुत कमी है लेकिन इसके बावजूद वहां यह बेचैनी व दुख दिखाई नहीं पड़ता है।

आप बताइये आप में से यहां बहुत पढ़े लिखे लोग हैं क्या हमारा देश कृषी प्रधान देश नहीं है? क्या यहां साधन और ज़िन्दगी की कमी है? क्या यहां नदियों की कमी है? क्या यह एक बंजर और छोटा सा देश है हमारे देश में किसी चीज़ की कमी नहीं है। परमेश्वर ने बख़्शिश और वरदान देने में इस देश के साथ कोई कमी नहीं की है बल्कि सत्य यह है कि इस देश को प्राकृतिक ख़ज़ानों से माला–माल कर दिया गया है। जो लोग यह समझते हैं या कहते हैं कि इस देश की ख़राबी अनाज व जीवन की दूसरी आवश्यकताओं की

कमी के कारण से है तो मैं उनको चुनौती देता हूँ कि वह इस देश से वाक़िफ़ नहीं हैं। उनको अपने देश की क़द्र नहीं है। उन्होंने अपने देश को देखा नहीं है। मैंने इस देश को ख़ूब देखा है। शायद इस समारोह में कम ही लोग होंगे जिन्होंने मेरी तरह इस देश को घूम फिर कर देखा हो। मैंने विभिन्न कारणों से इस देश को छान डाला है। मुझे प्रयटन का शौक़ भी है और उसके अवसर भी मिलते रहते है और बाज़ प्रतिनिधि मण्डल के साथ भी दौरा करना पड़ा तो चकित रह गया अल्लाहु अकबर (परमेश्वर बड़ा महान है) कितना विशाल देश ख़ुदा ने हमको दिया है।

मैं मद्रास, केरल और कर्नाटक गया हूँ। आप यदि इलाहाबाद से कालीकट जाएं तो आप को इस देश की अस्लियत मालूम हो जाए। अब यदि इस देश में अनाज की कमी होती या इस देश में क्षमता न होती या इस देश में प्राकृतिक पैदावार न होती या इस देश के लोग ज़िहानत (बुद्धि) से वंचित होते तो हमको तसल्ली हो जाती और हम सोचते कि हमारे भाग्य में यही लिखा है लेकिन अल्लाह की तरफ़ से कोई कमी नहीं है। उसने इस देश को सबकुछ दिया है। उसकी झोली भरदी है इस देश का दामन भर दिया है और ऐसा भरा है कि उसका उठाना कठिन हो गया है और यही दौलत, यही ज़रख़ेजी (उपजाऊ पन) इस देश के लिए मुसीबत बनी, सिकन्दर को कौन सी चीज़ इस देश की तरफ़ लाई। तुर्कों और मोग़लों को दीन के जज़्बे ने इस पर आमादा किया था। मैं इसको मानता हूं लेकिन यह देश सोने की चिड़िया थी उनका भी जी चाहता था कि जाएँ और अपनी ज़िहानत का नमूना दिखाएं। इस देश की भी सेवा करें। तो क्या यह दौलतें छीन ली गईं। वह कौन सी रात थी, कौन सा दिन था, वह कौन सी घड़ी थी, ख़ुदा के लिए जन्तरी देख कर बताया जाए समाचार पत्रों का अध्यन कर के बताया जाए कि वह कौन सी मनहूस रात थी कि जिसकी सुबह को मालूम हुआ कि यहां कि सब दौलत ख़त्म हो गई है। यदि ऐसा नहीं है कि देश फ़क़ीर है। इस देश में ख़ाक उड़ रही है, क्या इस कारण से कि यहां के लोग खाना चाहते हैं, पीना चाहते हैं लेकिन कमाना नहीं चाहते--नहीं यह बात नहीं है बल्कि अल्लाह ने खाने पीने की चीज़ो की बुहतात इसलिए की है कि ख़ुद खाएं परन्तु इसके साथ--साथ दूसरों को भी खिलाएं। खुद पहनें और दूसरे को भी पहनाएं लेकिन क्या बात है कि यहां अनगिनत लोगों को दो वक़्त की रोटी भी नसीब नहीं होती पहनने के लिए कपड़े नसीब नहीं होते।

सही बात यह है कि दौलत का इश्क़ दौलत का जुनून लोगों पर सवार है। इश्क़ आप जानते है कि अन्धा होता है। हुकूमत हासिल करने का जज़्बा ही नहीं होना चाहिये कि इन्सान ने हुकूमत हासिल करने का जज़्बा इश्क़ की हद तक पहुंच जाए कि उसे कुछ परवाह न हो कि उसके इस कार्य से देश पर क्या गुज़र रही है और लोग मर रहे हैं या जी रहे हैं, सारा देश लाशों में तब्दील हो जाए परन्तु हमारी कुर्सी सुरक्षित रहे। यह अत्यन्त अस्वाभाविक जज़्बा है। यह शहवानी (वासना) और हैवानी जज़्बा है। यह व्यक्ति और समुदाय और पूरे देश को हलाक कर देना है।

यदि कोई हुकूमत हासिल करना चाहता है, उसके नज़दीक देश के विकास के जो सिद्धांत हैं उन्हें काम में लाना चाहता है और उसे सफल बनाना चाहता है उसके द्वारा यदि अपने देशवासियों की सेवा करना चाहता है तो वह मुबारकबाद के क़ाबिल है। शौक़ से सेवा करो लेकिन जब उसके अन्दर यह जज़्बा जुनून और इश्क़ की सीमा तक पहुंच जाये उसमें व्यक्तित्व और इगो (Ego) तरक़्क़ी कर जाए अनानियत (स्वाभिमान) उसमें इस सीमा तक पहुंच जाए कि वह किसी की न सुने। उसके नज़दीक किसी मनुष्य की क़ीमत है तो वोटर की क़ीमत है। मैं आप को यक़ीन दिलाता हूँ कि हमारे यहां यदि एलेक्शन की यही हालत रही तो वह समय आनेवाला है जबकि आदमी के नज़दीक मां की क़द्र (Value) उसी समय होगी जब वह वोटर हो और बेटे को प्रेम के योग्य उसी वक़्त समझा जाएगा जब वह वोटर हो। यदि इन्सान वोटर नहीं है तो नाकारा और बेकार है। वह यदि मर जाए तो उसका कोई अफ़सोस नहीं होगा। वह समय आने वाला है जब किसी को मालूम होगा कि फुला मुहल्ले में अमुक व्यक्ति मर गया है तो वह पूछेगा कि वह मेरा वोटर तो नहीं था। अगर मालूम हो गया कि वह उसका वोटर नहीं था तो उसकी मौत का उसे कोई दुख नहीं होगा। तो जब सारी दिलचस्पियाँ, सारी एहसासात सिमट कर एलेक्शन की साईकालॉजी में आ जाएं तो इन्सान उस की ऐनक से हर चीज़ को देखेगा और उसी के कान से हर चीज़ को सुनेगा उसी के हाथ से हर चीज़ को छुऐगा तो इस देश के लिए इससे बढ़कर ख़तरा क्या हो सकता है।

हज़रात! मुझे अफ़सोस यह है कि अपनी आवाज़ देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक नहीं पहुंचा सकता हूँ मेरी शक्ति भी सीमित है और मेरे साधन भी और मु

र एक छाप भी लगी हुई है जैसे कि
भी मेरे एक मित्र ने कहा है कि मैं एक
ार्मिक व्यक्ति समझा जाता हूँ तो मैं
ज़ार बात इन्सानियत की कहूं। घटनाएं
ाज़मर्रह की ज़िन्दगी की कहूं लेकिन मेरे
ऊपर तो एक ठप्पा सा लगा हुआ है कि
एक धार्मिक इन्सान हूं। मैं इससे इन्कार
हीं करना चाहता बल्कि मैं इसको स्वीकार
रता हूँ लेकिन इसमें एक हानि यह है
क मेरी बात को जितना ध्यान से सुनना
ाहिये, एक इन्सान की बात जो इन्सान
ो समस्याओं को लेकर खड़ा हुआ है,
स में अन्तर हो जाता है। लोग यह
मझते हैं कि न जाने कहां से यह
ादमी मोड़ देगा और तबलीग़ (धर्मप्रचार)
रने लगेगा, तो भाई एलेक्शन में एक
ादमी ग़लत से ग़लत बात कह सकता
और अपनी पार्टी की हिमायत (पक्ष)
र सकता है तो मैं जिस धर्म को सही
मझता हूँ तो उसका प्रचार करुं तो क्या
रा है लेकिन इस समय तबलीग़ नहीं
रुंगा। यह अवसर इसका नहीं है और
ाप सब पढ़े लिखे लोग हैं जो बातें
हूंगा वह आपके लिए जानी बूझी होंगी।
। मुझे अफ़सोस है कि मैं अपनी आवाज़
श के एक कोने से दूसरे कोने तक नहीं
ुंचा सकता। लेकिन आदमी यदि किसी
न कह सके तो क्या अपने घर वालों
भी नहीं कह सकता है। अगर वह
पने दोस्तों से भी न कह सके तो वह
ट–घुट कर मर जाएगा। अतः मैं
भी–कभी अपनी ज़िन्दगी बाक़ी रखने
लिए ऐसे सुनने वाले कान और ऐसे
र्दमंद लोगों को चाहता हूँ जो मेरी बातों
ा सुनें और ग़ौर करें।

तो मैं कह रहा था कि इस समय जो
ज़ देश के लिए सबसे अधिक ख़तरनाक
वह सामूहिक लाभ से आँखे फेर लेना
है। **एक सोसाइटी जभी अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार सकती है जब उसके हर सदस्य को खाने को मिलता हो और सबकी मूलभूत आवश्यकताएं पूरी होती हों, जब सब एक दूसरे पर भरोसा रखते हों, जब सब एक दूसरे से घबराते न हों, एक दूसरे को दुश्मन न समझते हों सांप बिच्छू न समझते हों लेकिन आजकल हमारे समाज में यही चीज़े पैदा हो गई हैं मुख्यतः हमारा शिक्षित वर्ग दूरगामी नतीजों से नहीं बल्कि निकटवर्ती नतीजों से भी बेपरवाह हो गया है।**

दशा तो अब यह हो गई है कि हमारे स्कूल का विद्यार्थी इस की परवाह नहीं करता कि इस ट्रेन पर बैठे हुए मुसाफिरों को कब पहुंचना है। कोई अपनी बीमार मां को देखने जा रहा है कोई अपने गंभीर बीमार बाप को दवा देने जा रहा है, कोई महीनों बाद अपने घर जा रहा है। उस को अपने घरवालों से मिलने के लिए कितना शौक है, जगह–जगह जंजीरें खींचना, अपने गांव या क़स्बे के सामने गाड़ी रोकना, फ़लदार बाग़ यदि नज़र आ जाए तो उतर कर उसे सत्यानाश कर देना। इस बाग़ को जो नुक़सान पहुंचा सो पहुंचा ही, और उन मुसाफ़िरों पर जो गुज़री वह गुज़री लेकिन किसी देश की यह दशा हो जाए कि सामूहिक हितों से बिल्कुल आंख बंद कर ली जाए तो मैं भविष्यवाणी तो नहीं करता परन्तु यह ज़रूर कहूंगा कि यह विकास के तमाम प्रयत्न बेकार हैं और यूनीवर्स्टियां और पुस्तकालयों व कार्यशालाएं और सारे प्रयोग, ज्ञान, साहित्य और शायरी की तमाम कोशिशें बेकार हैं। **यदि इस देश में यह बीमारी फैल गई तो राह में चलना फिरना कठिन हो जाएगा रेल पर यात्रा करना मुश्किल हो जाएगा अस्पताल से दवा लेना और दफ्तरों और कचेहरियों में कार्य करना कठिन हो जाएगा, शादियों और उत्सवों में भाग लेना असंभव हो जाएगा और अन्त में नौबत यहां तक आएगी की प्यासों को पानी न मिलेगा और भूखों को रोटी न मिलेगी। इस देश को सब से बड़ा ख़तरा है कि हर आदमी आंखे बंद करके अपने स्वार्थ के पीछे दीवाना हो गया है और चाहता है कि रात को सोंऊ और दिन को लखपती बन जाऊं।**

हमारी राजनीतिक पार्टियों के सामने केवल एक उद्देश्य रह गया है कि चुनाव किस तरह जीता जाये और अपनी पार्टी किस प्रकार सत्ता में लाई जाये किस तरह राज्य के साधनों पर कब्ज़ा किया जाये और जैसा कि इससे पहले मैंने एक समारोह में कहा था कि इससे कोई बेज़ारी और शिक़ायत नहीं कि काम ग़लत हो रहा है, कहना यह है कि यह ग़लत काम हमारी देखरेख में हो। अरे साहब कांग्रेस पार्टी को बहुत दिन ग़लतकारी करते हुए हो गये और इस देश को लूटते हुए अब हमारी पार्टी को अवसर दीजिये और कांग्रेस पार्टी कहती है कि हमने देश को आज़ाद कराया अतः इस देश को लूटने और लाभ उठाने का अधिकार हमारा है। जब यह विचारधारा हो जाए कि हमारा स्वार्थ सिद्ध हो, हमारा उल्लू सीधा हो जाये और लोगों पर चाहे जो गुज़र जाये, चाहे *कुछ भी बीते। यही* ज़ेहनियत आज काम कर रही है। देश की क्या दशा बना रखी है क्या गत बना रखी है। अनाज यहां मौजूद, ज़मीन भी अत्याधिक उपजाऊ इस के अतिरिक्त हमारे पास कितना बड़ा देश और कितनी बड़ी क़ौम है और योग्य पुरुष यहां मौजूद है और यह मानने में भी कोई लज्जा नहीं

है कि राजनीत, साहित्य, विज्ञान, हुनर और उद्योग में हमारे देश में प्रथम श्रेणी के लोग मौजूद हैं लेकिन इन सबके होते हुए जो हमारे देश की यह दशा हो रही है कि कोई व्यक्ति संतुष्ट नहीं है। किसी को कल के बारे में विश्वास नहीं है कि कल क्या होगा। मंहगाई की एक लहर चली हुई है और हर आदमी ऐसा मालूम होता है कि वह इस देश को एक दूध वाली गाय के समान समझ रहा है कि इससे जितना दूध दूहा जा सके दूह ले।

अर्थात, अब हरएक इसी विचार में लगा है कि इससे जितना लाभ उठा सको उठा लो। यह खतरनाक परिस्थित है। यह किसी ऐसे भी देश के लिए उचित नहीं है जिस का न कोई इतिहास हो न कोई सभ्यतः और संस्कृति हो और न परम्परायें हों। हमारा देश तो प्राचीन ऐतिहासिक देश है एक शानदार विकसित साहित्य व संस्कृति का देश है। इसने शिक्षित समाज में बहुत बड़े–बड़े दार्शनिक, बुद्धिजीवी पैदा किये, बड़े–बड़े ऋषि मुनि पैदा किये, मुसलमानों में भी और हिन्दू भाईयों में भी ऐसे–ऐसे लोग पैदा हुए जिनके कारनामों पर संसार हमेशा गर्व करता रहेगा। परन्तु जब इस देश की ऐसी दशा हो जाये कि सब के सब अपने–अपने हाल में मस्त होकर आस्तीन चढ़ाए हुए इस मुर्दे से जो कुछ हासिल हो सके हासिल करने के विचार में लगे हुए हैं तो इसकी क्या हालत होगी। उसको मुर्दा करने के हमी मुजरिम (अपराधी) हैं

जिस टहनी पर हमने अपना घोसंला बनाया है हम उसी पर आरी चला रहे हैं, उसी पर कुल्हाड़ी चला रहे है और प्रसन्न हो रहे हैं। हम उस नाव को डूबोने की फ़िक्र में लगे हुए हैं जिस पर हमारा सारा सामान लदा हुआ है। हमारी और हमारी औलाद का भविष्य इसी कश्ती (नाव) से सँबन्धित है। कश्ती डूबी तो हम कहां जायेंगे।

परन्तु दो चीज़ें ऐसी पाई जाती है जो आदमी को सीमा के आगे बढ़ने से रोकती हैं। एक तो वह चीज़ जिस पर मेरा गहरा विश्वास है, वह धर्म है अर्थात धर्म की शिक्षा यानी ख़ुदा (परमेश्वर) का भय मरने का ख़्याल और ख़ुदा (ईश्वर) के सामने हिसाब क़िताब पेश करने का विचार और क़ब्र की मंज़िल और उस का अन्धेरा और पुलसिरात और हश्र का मैदान (प्रलय का मैदान)। असल शक्ति तो इसमें है। यदि यह बात होती तो इस प्रकार की घटनाएं पेश आयेंगी जैसा कि आप ने सुना होगा कि एक आदमी को मालेग़नीमत में कई लाख़ रुपयों के जवाहिरात की चीज़ मिली, ईरान के शहंशाह का जड़ाऊ ताज मिला जिसे वह अपने दामन के नीचे छुपा कर ले जा रहा था ताकि अपने सेना अध्यक्ष हज़रत समद बिन अबी वक़्क़ास (रजि०) के सामने पेश करे और ले जाकर उनके सामने पेश कर दिया। अमीरे लशकर (Commander) ने कई बार उसको सिर से पांव तक देखा कि अल्लाहु अकबर ऐसे भी आदमी पाए जाते हैं कि वह ख़ुद रखने के बजाए यहां ले आया। ख़ैर यह तो कोई अचम्भे की बात नहीं है, वह ज़माना बड़ी ख़ैर व बरकत वाला था रसूलुल्लाहि (सल्ल०) के देहान्त को थोड़े वर्ष गुज़रे थे लेकिन तअ़ज्जुब की बात यह है कि जब उन्हों ने उसका नाम पूछा तो उस बद्दू ने कहा कि मैंने जिसके ख़्याल से यह काम किया है वह मेरा नाम जानता है आपको बताने की ज़रूरत नहीं है। यह कहकर सलाम किया और चल दिया। यह घटनाएं इस विश्वास के फलस्वरूप पेश आई है। आपने सुन होगा कि हज़रत उमर (रज़ि०) ने एला किया कि दूध में पानी न मिलाया जाये वह गश्त कर रहे थे, इतने में एक मका से गुज़रे तो उन्हों ने सुना कि एक और कह रही है अरे बेटी देख उजाला हो वाला है दूध में पानी मिलाने की कार्रवा कर, उस लड़की ने जवाब दिया कि अम्म क्या आप को मालूम नहीं है कि अमीरुलमोमिनीन (मुसलमानों के ख़लीफ़ा ने एलान किया है और उनका यह आर्डीनें है कि दूध में पानी न मिलाया जाये। म ने उत्तर दिया कि बेटी इस समय कौ देख रहा है? तो बच्ची ने कहा अगर उम (रजि०) नहीं देख रहे हैं तो ख़ुदा तो देख रहा है।

तो असल शक्ति तो इस विश्वास में लेकिन दूसरी ताक़त भी है। कोशिश त यह करनी चाहिये कि मुसलमानों में य विश्वास पैदा हो जिस का ज़िक्र मैं क चुका हूँ और हमारे हिन्दू भाईयों में भी य विश्वास पैदा हो कि परमेश्वर कोई चीज है वह देखता है।

दूसरी चीज़ जिस को यूरोप ने उस एक बदल (Substitute) की हैसियत अपनाया है वह देश प्रेम (Patriatism सच्ची मुहब्बत अपने देश और वहां निवासियों से असली सम्बन्ध हो। य एक ऐसा विचार है जिसे सबने स्वीक किया है। यह देश हमारा है इसमें को ग़लत कार्रवाई नहीं होनी चाहिये। इ देश में करपशन नहीं होना चाहिये इससे देश को हानि पहुंचेगी। इस देश यह नहीं हो सकता कि हक़ और विशेष (Merit) एक को प्राप्त हो और हम तरक़्क़ किसी और को दे दें। यह नहीं हो सकत इससे सोसाईटी और हुकूमत का प्रब अस्त–व्यस्त हो जाएगा। यह बहुत ओ

विचार है और इस धर्मिक विश्वास के मुक़ाबले में इसकी जड़ें इतनी मज़बूत और गहरी नहीं हैं लेकिन यह भी लाभदायक चीज़ है। यूरोप आज इसी विचार और अमल से थमा हुआ है। अवश्य आप में कोई ऐसे होंगे जिन्होंने यूरोप की यात्रा की होगी। वह जानते हैं कि यूरोप में आप कोई चीज़ कहीं छोड़ दें वहां (Loss Property) के लिए एक जगह है। वहां तमाम खोई हुई वस्तु मिल जाती हैं। इसकी एक फ़ीस निर्धारित है वह आप को देनी होगी। अर्थात जैसे आप अपना पर्स कहीं भूल गए हैं तो वह आपको वहीं मिल जाएगा। इस प्रकार की घटनाएं वहां रोज़ाना होती रहती है। यूरोप की जनता कोई बहुत सोम व सलात (धार्मिक उपासनाओं) की पाबंद नहीं है। ख़ुदा परस्त लोग नहीं है और न सच्चे ईसाई हैं लेकिन उन्हों ने एक ऐसी चीज़ एक पारस पत्थर मालूम कर लिया है इस कारण यह देश अपनी बहुत सी कमियों और ख़राबियों के बावजूद अपने केन्द्र बिन्दु पर टिका हुआ है। अर्थात यह नहीं कि वहां बिना रिश्वत दिये कोई काम ही न बनता हो। हमारे यहां तो रिश्वत की फ़ीस देनी होगी। रिश्वत यहां एक कारोबार बन गया है। यूरोप में यह बातें नहीं हैं वहां और बहुत सी ख़राबियां हैं। वहां बहुत पाप होते हैं। जो न होना चाहिये वह होता है। वहां भोग विलास को अधिकता है लेकिन हुकूमत के नियम व क़ानून की वह पूरी पाबन्दी करते हैं।

धार्मिक विश्वास के विस्तार में नहीं जाना चाहता क्योंकि इसकी ज़िम्मेदारी मुझ पर और मेरे गिरोह पर भी है। हमने इस विश्वास को मज़बूत बनाने की पूरी कोशिश नहीं की। इसको पानी हम ने नहीं पहुंचाया। इसमें हमारे मज़हबी गिरोह की बहुत बड़ी कमज़ोरी है। अब कुछ लोग प्रयत्न कर रहे हैं। इसी तरह हिन्दू भाईयों में भी पूरी कोशिश नहीं हुई बहुत दिनों तक इस तरह की कोशिश नहीं हुई जिससे धर्म की जड़ें मज़बूत हों।

और दूसरी तरफ़ सच्चा देश प्रेम। शायद हमारे यहां पैदा नहीं हुआ। नैतिक ट्रेनिंग का जो ज़माना था वह तो अंग्रेजों से लड़ने में गुज़र गया और इसके बाद का ज़माना आज़ादी व हुकूमत से फ़ायदा उठाने का आया। इसलिए बीच का ज़माना जिसमें हम क़ौम को तैयार करते, Nation को तैयार करते, सोसाइटी को तैयार करते वह हम नहीं कर सके फ़लस्वरूप हमारे यहां सच्चा देश प्रेम नहीं पाया जाता। कोई आदमी किसी ग़लत काम से इसलिए नहीं रोकता कि उससे हिन्दुस्तान को हानि पहुंचेगी, योजनाएं हैं लेकिन असफ़ल, इस्कीमें हैं लेकिन फ़ेल, इनमें ठीक से मेटीरियल ही नहीं लगता। इनमें जो ठीक से सावधानी बरतनी चाहिये वह नहीं हो पाती। देश का पैसा बरबाद हो रहा है, समय अधिक लग रहा है। मैं आपके सामने इसकी मिसालें दे सकता हूँ परन्तु समय इतना नहीं है। दशा यह हो गई है कि दो दिन में जो काम हो सकता है छः महीने लग जाते हैं। लोग काम नहीं करते। दफ़्तरों में कर्मचारी हाथ पर हाथ धरे बैठे गप करता रहता है, देर में आते और जल्द चले जाते हैं। दर्मियान में लंच टाईम और टी टाईम होता है। किसी को इस देश से सच्चा प्रेम नहीं और लगन नहीं है। जर्मन क़ौम को आप देखें दूसरे महायुद्ध ने जर्मनी के प्राख़चे उड़ा दिये थे। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद जब वहां गये तो उनकी आंखें खुली की खुली रह गई। उन्होंने जर्मनी के बारे में अपना बयान दिया था, उसमें कहा था कि मैंने जर्मन क़ौम की क्षमता को मान लिया। मैं मान गया कि जर्मन क़ौम जिन्दा रहने के लाएक़ है। एक हमारा देश है कि पचीस साल आज़ादी मिले हो गए मगर जो चीज़ जहां थी वहीं है हालांकि किसी बात की कमी नहीं है।

दौलत पैदा करने का भूत सवार है। शिक्षित लोग इसके आधिक अपराधी हैं और सबका ध्यान हुकूमत पर है, पार्टी पालीटिकस पर है। व्यवस्था सुधारने पर किसी का ध्यान नहीं है। आज हमारे केन्द्रीय शासक हर समय जोड़–तोड़ में लगे रहते हैं। दूसरे देशों के साथ भी जोड़ तोड़ में और अपनी पार्टी के अन्दर भी जोड़ तोड़ में लगे हुए है। ऐडमिनिस्ट्रेशन पर नैतिक मूल्यों और शिक्षा व्यवस्था को सुधारने पर कोई ध्यान नहीं। लोगों को उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने और उनमें आत्मविश्वास पैदा करने पर जो ध्यान देना चाहिये उसकी उपेक्षा कीं जाती है। क़ौम का अपने देश और भविष्य पर भरोसा बहाल होना आवश्यक है। हर आदमी अपने भविष्य से निराश हो रहा है, अपने देश से मायूस हो रहा है और नतीजा यह है कि जिन के पास साधन है वह लूट घसोट पैसा पैदा करने में लगे हुए हैं। दौलत पैदा करना जुर्म नहीं लेकिन दौलत का भूत सवार हो जाए इस बात से बचना चाहिये।

दूसरी बात जो बहुत ख़तरनाक है वह यह कि इस देश में कोई पार्टी कोई गिरोह ऐसा नहीं है जो इस परिस्थित से बेचैन हो जाए और उसकी रातों की नींद उड़ जाए। इस परिस्थित को इस देश में नापसन्द करने वाले लाखों हैं लेकिन इससे पंजा आज़माई करने वाला एक भी नहीं। यह बेहिसी और बेअमली बड़ी

बाक़ी पृष्ठ २७ पर

ज़िन्दगी के बिगाड़ का वास्तविक उपचार

ख़ुदा का डर

– मौलाना मो. राबे हसनी नदवी

दुनिया का इतिहास यह बताता है कि यदि संसार के पालनहार का डर न हो और आख़िरत में (परलोक में) जज़ा (अच्छा बदला) व सज़ा की भावना न हो तो मनुष्य अपने मनोइच्छा का गुलाम और जीवन के हर मामले को केवल अपने सांसारिक लाभ की पृष्ठिभूमि में देखने वाला बन जाता है और यह बात कभी–कभी इतना बढ़ जाती है कि इसके लिए दूसरों के साथ ज़्यादती बल्कि अत्याचार और निर्दयता करने से भी बाज़ नहीं आता। यह बात क़ौमों के जीवन में भी पाई जाती है और व्यक्तियों की ज़िन्दगी में भी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

मानव इतिहास में अल्लाह के डर और परलोक के ख़ौफ़ से वंचित समाज में इस प्रकार की बड़ी दुखदाई घटनायें, अत्याचार के व्यवहार बराबर होते रहते हैं। कुर्आन में इनके अत्याचारी व्यवहारों को स्पष्ट रूप से बयान किया गया है, और इनके बिगाड़ के बयान के साथ उस बुनियादी कारण को एक मात्र अल्लाह की आज्ञा का पालन न करना बताया गया है।

मिश्र मे फ़िरऔन ने अपने मरने वाले बादशाहों के लिए पहाड़ जैसे मक़बरे बनाने के लिए अपनी जनता से किस तरह ज़ालिमाना ढंग से बेगार लिया और जुल्म व ज़्यादती के द्वारा अपनी बड़ाई के निशानात क़ायम करने की मिसालें पेश कीं फिर अपने सांसारिक लाभ के लिए अपने अधीन अल्पसंख्यक समुदाय, इस्राईल की महिलाओं को अपना गुलाम बनाया ताकि उनसे बिला रोक–टोक सेवा लें और लाभ उठाएं और उनके बच्चों को आमतौर पर क़त्ल करने का तरीक़ा अपनाया कि वह बड़े होकर मुक़ाबले पर न आ सकें। कुर्आन मजीद इस का ज़िक्र इस प्रकार करता है–

अनुवाद : "उनके लड़कों को ज़िबह करता था और लड़कियों को ज़िन्दा रखता था।"

दूसरी ओर आद, समूद और अमालक़ा क़ौमें अपनी शक्ति और बाहुबल का प्रर्दशन करती रहती थीं। जिसको कुर्आन मजीद में यूँ बयान किया गया है –

अनुवाद : "कि हर ज़गह तुम कोई शानदार यादगार का निर्माण करते हो और जब किसी पर ताक़त का प्रयोग करते हो तो बड़े जब्बार और क़हहार (क़हर ढाने वाला) बन कर शक्ति का प्रदर्शन करते हो।"

कुर्आन मजीद ने इन क़ौमों का बयान सम्भवतः इसलिये किया है कि आगे आने वाले लोग समझें कि भविष्य में भी ख़ुदा के इन्कार और आख़िरत (परलोक) को भूलने वालों का यही परिणाम हो सकता है। अतः लोग इसको समझें और अपनी असत्य मान्यताओं और नफ़्स परस्ती (ऐयाशी) से हट कर एक ख़ुदा के बताए हुए सीधे मार्ग पर चलें नहीं तो अल्लाह के अज़ाब का शिकार होंगे।

कुर्आन मजीद में क़ौमों के साथ–साथ व्यक्तियों में इस तरह के व्यवहार की मिसालें भी बयान की गई हैं जो अधिकतर बनी इस्राईल के लोगों की हैं। उनका प्रारम्भिक काल अच्छा व्यतीत होने के बाद उनके बहुत से लोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति और सांसारिक लाभ उठाने में व्यस्त होने लगे और बेईमानी और ख़ुदग़र्ज़ी और नाइन्साफ़ी में लिप्त हुए, जो कि दुनिया से उन के प्रेम व मुहब्बत के कारण और अपनी इन्द्रियों की इच्छा पूर्ति में हुआ। कुर्आन मजीद में यह सब बातें केवल इतिहास बयान करने के लिए नहीं दी गई बल्कि यह इसलिए वर्णन की गईं कि आने वाली क़ौमें और उनके लोग सीख लें और अपने जीवन को सही दिशा दें, और सही दिशा पालनहार की अप्रसन्नता के डर और परलोक में अच्छे कर्मों का फ़ल पाने और सज़ा के भावना से जुड़ी हुई हैं। कुर्आन मजीद में साफ़–साफ़ बताया गया है कि जब इन्सानी रहन–सहन में ख़राबियाँ बहुत आम और भयानक हद तक पहुंच जाती हैं तो पूरा समाज अल्लाह के ग़ज़ब का शिकार हो जाता है, और कभी–कभी उस का प्रभाव पूरे समाज की तबाही की शक्ल में ज़ाहिर होता है लेकिन दुःख की बात है कि मनुष्य अधिकतर अपनी ताक़त और दौलत के नशे में इन सच्चाईयों से आँख फेर

ेता है जिसका बुरा परिणाम उस को ाद में झेलना पड़ता है।

कुर्आन मजीद ने बहुत सी घटनाएं ुसी सिलसिले की बयान की हैं और नका उद्देश्य एक अल्लाह पर ईमान खने वालों के ध्यान को आकर्षित करना ं। इन में से कुछ घटनाएं सत्ता में रहने ाली नस्ल के मातेहत (अधीन) नस्लों को बाने और उन को किनारे लगाने की हैं। ुछ घटनाएं शासन पक्ष की ओर से पनी प्रजा के साथ अत्याचार और अन्याय ौर उत्पीड़न करने की सूरत में सामने ाती हैं और कुछ घटनाएं मालदार और ड़े लोगों की ओर से अपनी झूठी शान व ौकत को दिखाने और दूसरों को नष्ट रने की होती हैं। बाज़ धटनाएं समाज ं भ्रष्टाचार आम हो जाने और अपनी हूदगियों पर निडर होकर कार्य करने ी हैं और बाज़ घटनाएं बेईमानी और ारोबार में धोखा–धड़ी करने और डण्डी ारने के कार्य आम हो जाने की हैं। ऐसी ौमों के सिलसिले में जिनमें उपरोक्त टनाएं आम हुईं और उनको समझाने ालों ने बहुत–बहुत समझाया परन्तु वह ने में परिवर्तन नहीं लाए आख़िर में ऐसी ुसीबत उन पर डाली गई कि पूरी पूरी स्ल तबाह हो गई कहीं भूकम्प से कहीं ूफ़ान से कहीं किसी और आसमानी और मीनी आफ़त से तबाही आई और ईश्वरीय ादेश को ठुकराने और घमण्ड और नावश्यक बाहुबल और ज़्यादती अख़्तियार रने पर सज़ा दी गई।

आज के संसार में ऐसी तमाम ख़राबियां ौजूद हैं और बढ़ती जा रही हैं। इन के ूर करने और इनसे बचने की फ़िक्र रने का कहीं कोई ख़्याल नहीं है। मानव माज भ्रष्ट होता जा रहा है। देखावे और ान व शौकत के लिए विशाल इमारतें, माली फ़ायदे के लिए ग़रीबों के उत्पीड़न की संस्थायें, सत्ता प्राप्ति के लिए हर तरह का जोड़–तोड़ ताक़त और बड़ाई के झूठे प्रदर्शन, सत्ता के बल पर दूसरों को दबाने और उनकी कमज़ोरी से लाभ उठाने के तरीक़े, कारोबार और लेनदेन में चालाकी और धोका–धड़ी धर्म या नस्ल की बुनियाद पर अत्याचार या अधिकार हनन, वह कौन सी ऐसी बातें हैं जो इस समय के मानव समाज में आम नहीं होती जा रही हैं। लेकिन वर्तमान प्रजातंत्र और बराबरी के दावों और नारों और स्वतंत्र विचार और इन्सानी आज़ादी के एलानों के बावजूद अधिकांश ज़गहों पर ज़ोर ज़बरदस्ती, उत्पीड़न और कमज़ोर को कमज़ोर बनाए रखने का सिलसिला जारी है, और बहुत जगहों पर अत्याचार और जुल्म की इतिहास पूर्व काल की मिसालें ताज़ा कर दी गई हैं जिन की गवाही साईबेरिया में देशनिकाला किये जाने वालों की दशा और दक्षिणी यूरोप की अल्पसंख्यक आबादियों के साथ कठोर व्यवहार करने और फ़िलिस्तीनियों के साथ उनको अधिकार से वंचित कर अत्याचार की घटनाओं से मिलती है। संसार के कई सभ्य और स्वतंत्र और प्रजातंत्र का दावा करने वाले देशों में गोरे और काले के बीच ज़ालिमाना भेद–भाव की मिसालें अभी ताज़ा हैं। यह तो सार्वजनिक दायरे की बातें हैं इन के साथ–साथ व्यक्तिगत जीवन के दायरे में खुदग़र्ज़ी, लालच, और बुराई के हालात संसार के अधिकांश क्षेत्रों में खुले रूप में देखे जा सकते हैं, और इसके अतिरिक्त खुदा का डर न होना और आख़िरत (परलोक) के अच्छे बदले और सज़ा से पूरी लापरवाही वस्तुस्थिति को और भी ज़्यादा ख़राब और जवाब देही के लाएक़ बना रही है। ऐसी दशा में ईश्वरीय आपदा किसी समय आ जाना कोई अचम्भे की बात नहीं। इस सिलसिले में मुसलमानों को भी ध्यान देने की आवश्यकता है कि उनमें भी इनमें से बहुत सी ख़राबियां देखी जा सकती हैं। यह सब बहुत डरने की और ख़तरा महसूस करने की बातें हैं। पालनहार यह सब देखता है और इन बातों को जो अत्याचार, ज़्यादती और ख़ुदा–ए–वाहिद (एक ईश्वर) के आदेशों की अवहेलना करनी और आख़िरत में अच्छे कार्यों के बदले और बुरे कार्यों की सज़ा से लापरवाही की दशा में ज़ाहिर होती जाती हैं उसे वह सख़्त नापन्द करता है लेकिन उसकी तरफ़ से छूट और सुधार का अवसर देने का मामला है ताकि अपराधी लोग अवसर का लाभ उठाकर अपने को सुधारें परन्तु यदि वह मुहलत से फ़ायदा न उठाएं और न समझाने से मानें और अपना सुधार न करें तो उनके लिए पकड़ और अज़ाब है। सबसे पहले धर्म और आचरण के सुधारकों की ज़िम्मेदारी है कि खुदा का डर दिलाएं और आख़िरत (परलोक) की पकड़ से डराएं और स्थिति को बेहतर बनाने की तरफ़ ध्यान दिलाएं। हर समाज सुधारक की ज़िम्मेदारी है कि बिगड़े हुए हालात को सुधारने की कोशिश करे और ऐसा जीवन व्यतीत करने की तरफ़ ध्यान दें जिस में अमन–चैन आपसी मेल मिलाप और सहानुभूति हो, मनुष्यता के नैतिक मूल्यों से लगाव हो और अल्लाह के आदेशों पर चलने की चेष्टा हो ताकि देश और समाज सुख, चैन और शांति से अधिक से अधिक लाभप्रद हों और सही मानव समाज क़ायम हो सके।

अनुवाद :

हबीबुल्लाह आज़मी

●●●

दुआ और उसकी फ़ज़ीलत

– मौलाना मो० मन्ज़ूर नोमानी (रह०)

जब यह बात यक़ीनी है और मानी हुई है कि इस दुनिया का सारा कारख़ाना अल्लाह ही के हुक्म से चल रहा है और सब पर उसी की सत्ता है तो हर छोटी बड़ी ज़रूरत में अल्लाह से दुआ करना बिल्कुल स्वाभाविक बात है। इसलिए हर धर्म के मानने वाले अपनी ज़रूरतों में अल्लाह से दुआ (मांगते) करते हैं। लेकिन इस्लाम में इरशाद है :–

अनुवाद : **"और फ़रमाया तुम्हारे परवरदिगार ने कि मुझसे दुआ करो, मैं क़बूल करूंगा।"**

दूसरी जगह इरशाद है:–

अनुवाद : **"कह दो क्या परवाह तुम्हारी मेरे रब (पालनहार) को अगर न हों तुम्हारी दुआयें।**

फिर दुआ के हुक्म के साथ यह भी इत्मिनान दिलाया गया है कि अल्लाह अपने बन्दों से बहुत क़रीब है वह उनकी दुआओं को सुनता और क़बूल करता है। फ़रमाया गया :–

अनुवाद : **"ऐ ! रसूल जब तुम से मेरे बारे में पूछें (तो उन्हें) बताओ कि मैं उनसे क़रीब हूँ। पुकारने वाला जब मुझे पुकारे तो मैं उसकी पुकार सुनता हूँ।**

और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हमको यह भी बतलाया कि अपनी ज़रूरतों को अल्लाह से मांगना और दुआ करना ऊँचे दर्जे की इबादत है बल्कि इबादत का सार है। अतएव हदीस में है कि "दुआ इबादत है।" और एक कथन में है कि दुआ इबादत का जौहर और उसका मग़्ज़, निचोड़ है। दूसरी हदीस में है कि **"अल्लाह के यहाँ दुआ से ज़्यादा किसी चीज़ का दर्जा नहीं"**। इसलिए अल्लाह उससे नाराज़ होता है जो अपनी ज़रूरतें उससे नहीं मांगता।

सुबहान अल्लाह ! दुनिया में कोई आदमी अपने किसी ग़हरे दोस्त या अपने किसी रिश्तेदार से भी बार–बार अपनी ज़रूरतों का सवाल करे तो वह उससे तंग आकर ख़फ़ा हो जाता है लेकिन अल्लाह अपने बन्दों पर इस क़दर मेहरबान है कि वह न मांगने पर ख़फ़ा और नाराज़ होता है। एक और हदीस में है कि:–

जिस व्यक्ति के लिए दुआ के दरवाज़े खुल गये (अर्थात अल्लाह की तरफ से जिसको दुआ की तौफ़ीक (मदद) मिली और असली दुआ करना जिसे नसीब हो गया) तो उसके लिए अल्लाह की रहमत के दरवाज़े खुल गये।" बहर हाल किसी ज़रूरत और मक़सद के लिए अल्लाह से दुआ करना जिस तरह उसको हासिल करने की एक तदबीर है उसी तरह वह एक ऊँचे दर्जे की इबादत भी है जिस से अल्लाह बहुत खुश होता है और उस की वजह से रहमत के दरवाजे खोल देता है। यह शान हर दुआ के लिए है चाहे वह किसी दीनी मक़सद के लिए की जाये या दुनियावी मक़सद के लिए की जाये। मगर शर्त यह है कि किसी बुरे और नाजायज़ काम के लिए न हो। नाजायज़ काम के लिए दुआ करना भी नाजायज़ और गुनाह है।

यहां एक बात यह भी याद रखने की है कि दुआ जिस क़दर दिल की गहराई से और अपने को जिस क़दर आजिज़ व बेबस समझकर और अल्लाह की कुदरत व रहमत के जितने यक़ीन के साथ की जायेगी उसी कदर उसको क़बूल होने की ज़्यादा उम्मीद होगी जो दुआ दिल से न की जाये बल्कि रस्मी तौर से सिर्फ़ ज़बान से की जाये वह दरअसल दुआ ही नहीं होती। हदीस में है कि :–

"अल्लाह वह दुआ क़बूल नहीं करता जो दिल के ग़फलत के साथ की जाये"।

अगरचे अल्लाह हर वक्त की दुआ सुनता है लेकिन हदीसों से मालूम होता है कि कुछ खास वक्तों में दुआ ज्यादा मक़बूल होती है, मसलन फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद, रात के आखिरी हिस्से में, रोज़ा के

इफ़तार के वक़्त ऐसे ही किसी और नेक काम के बाद या सफ़र की हालत में, खासकर जब सफ़र दीन के लिए हो और अल्लाह की रज़ा के लिए हो।

यह भी याद रखना चाहिए कि दुआ के क़बूल होने के लिए आदमी का वली होना या मुत्तक़ी होना शर्त नहीं है, यह बात सही है कि अल्लाह के नेक और मक़बूल बन्दों की दुआयें ज़्यादा क़बूल होती हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि आम लोगों और गुनहगारों की दुआयें सुनी ही न जाती हों। इसलिए किसी को यह सोचकर दुआ छोड़नी न चाहिए कि हमारी दुआ से क्या होगा।

अल्लाह रहीम करीम है जिस तरह अपने गुनहगार बन्दों को खिलाता पिलाता है उसी तरह उनकी दुआयें भी सुनता है। इसलिए अल्लाह से दुआ सब को करना चाहिए। अभी बतलाया जा चुका है कि दुआ इबादत है इसलिए दुआ करने वाले को सवाब तो ज़रूर मिलेगा। अगर कुछ बाद दुआ करने से मक़सद हालिस न हो तो भी निराश होकर दुआ न छोड़ना चाहिए। अल्लाह हमारी ख़्वाहिश (कामना) का पाबन्द नहीं है। कभी–कभी उसकी हिकमत का तक़ाज़ा यही होता है कि दुआ देर से क़बूल की जाये और बन्दे की बेहतरी भी उसी में होती है लेकिन बन्दा अपनी नासमझी की वजह से इसको जानता नहीं इसलिए जल्दबाज़ी करता है और निराश होकर दुआ करना छोड़ देता है।

बन्दे को चाहिए कि अपनी ज़रूरत और मक़सद के लिए अल्लाह से दुआ करता रहे, मालूम नहीं अल्लाह किस दिन और किस घड़ी सुन ले। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दुआ के बारे में फ़रमाया:–

"दुआ बेकार कभी नहीं जाती, लेकिन उसके क़बूल होने की सूरतें अलग–अलग होती हैं। कभी ऐसा होता है कि बन्दा जिस चीज़ की दुआ करता है उसको वही चीज़ मिल जाती है और कभी ऐसा होता है कि अल्लाह बन्दे को वह चीज़ देना बेहतर नहीं समझते इसलिए वह तो मिलती नहीं उसके बजाय कोई और नेमत उसको दे दी जाती है या उस दुआ को उसके गुनाहों का 'कफ़्फारा' (प्रायश्चित) बना दिया जाता है। लेकिन चूंकि बन्दे को इस राज़ की खबर नहीं होती इसलिए वह समझता है कि मेरी दुआ बेकार गई। कभी ऐसा होता है कि अल्लाह दुआ को आख़िरत (परलोक) के लिए ज़ख़ीरा बना देता है अर्थात् बन्दा जिस मक़सद के लिए दुआ करता है वह अल्लाह इस दुनिया में उसको देता नहीं लेकिन उस दुआ के बदले आख़िरत का बहुत बड़ा सवाब उसके लिए लिख देता है।

एक हदीस में है कि :–

"कुछ लोग जिन की बहुत सी दुआयें दुनिया में क़बूल नहीं होती थीं जब आख़िरत में पहुंचकर अपनी इन दुआओं के बदले में मिले हुए सवाब और नेमतों के ढेर देखेंगे तो हसरत से कहेंगे ऐ काश ! दुनिया में हमारी कोई दुआ भी क़बूल न होती और सब का बदला हमें यहीं मिलता।"

बहरहाल अल्लाह पर ईमान रखने वाले हर बन्दे को अल्लाह की कुदरत और उसकी शाने करीमी पर पूरा यक़ीन रखते हुए क़बूलियत की पूरी उम्मीद और भरोसा के साथ अपनी हर ज़रूरत के लिए अल्लाह से दुआ करनी चाहिए और बिल्कुल यक़ीन रखना चाहिए कि दुआ हरगिज़ (कदापि) ज़ाया (नष्ट) नहीं की जायेगी।

अनुवादक : **मो० हसन अंसारी**

●●●

इन्ना अअ्तैनाकल्कौसर

– मौलाना मुहम्मद सानी हसनी

दिलबर व ख़ुशतर नाज़ुक पैकर।
गौहरो अख़्तर ज़ेबा मंज़र।।
जिस्में मुज़क्का रूहे मुतह्हर।
रुए मुनव्वर ज़ुल्फ़े मुअ़म्बर।।
ख़ल्क़ के सरवर रहमते दावर।
शाफ़ए महशर साक़िये कौसर।।
जिनकी सना क़ुर्आन के अन्दर।
इन्ना आतैना कल कौसर।।
जिनके क़दम से सहरा गुलशन।
जिन की नज़र से ख़ार गुलेतर।।
कुफ़्र के पर्वत बन गए राई।
उन को लगाई ऐसी ठोकर।।
मिस्र इराक़ो शाम के फ़ातेह।
सब हैं उन्हीं के दर के गदागर।।
वह हैं हमारे सरवरो आक़ा।
हम हैं उन्हीं के नौकर चाकर।।
उन पे फ़िदा माँ बाप हमारे।
जान तसद्दुक माल निछावर।।
उन की हक़ीक़त को क्या जाने।
मुलहिदो बे दीं काफ़िरों ख़ुद सर।।
ज़िक्र से उन के दिल को सकीनत।
रुह भी शादां लब भी मुअ़त्तर।।
ज़िक्रे ख़ुदा के बाद यक़ीनन।
ज़िक्र है उनका सब से बेहतर।।
ज़िक्र मुबारक विर्दे ज़ुबां हो।
लहज़ा बलहज़ा दिन भर शब भर।।
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।।

●●●

उज्जवल भविष्य की ओर

– मौलाना मुहम्मदुल हसनी रह

परिस्थिति का मुख देखने वालों और साधनों तथा घटनाओं के संकेतों पर चलने वालों की दृष्टि में मुसलमानों के भविष्य की निर्भरता केवल सत्ता के सन्तुलन, संख्या में कम या अधिक होना, वातावरण से समझौता तथा अपने धार्मिक (मिल्ली) अस्तित्व को नये धारों में समाने की योग्यता पर है, उन का सिद्धान्त और नियम यह है कि सबसे पहले हमें यह देखना चाहिए कि वातावरण और समय के फेर बदल हम से क्या बदलाव चाहते हैं, उनके निकट प्राथमिकता इसको है कि सबसे पहले अपने आप को समय की परिस्थिति के अनुकूल बनाया जाय उसके पश्चात् यह देखा जाय कि हमारे सिद्धान्त तथा लक्ष या हमारी सभ्यता एवं संस्कृति इससे कहाँ तक प्रभावित होती हैं इसलिये कि जीवित रहने और उन्नति करने के लिये हमें इन धार्मिक (मिल्ली) हानियों को भी एक सीमा तक सहन करना है।

वह लोग मुसलमानों की समस्याओं के जो समाधान प्रस्तुत करते है, और जिस विधि से उन का मार्ग दर्शन करना चाहते हैं, स्वभावतः उसमें उनकी बुद्धि यही दृष्टिकोण सामने रखती है, और मुसलामानों की शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक समस्याओं के हल के लिये कुछ ले दे कर समझौता कर लेने के दृष्टिकोण का प्रचलन इनमें बहुत है, कभी दबी ज़बान से और कभी खुल कर यही बात फैलाते रहते हैं और इसी दृष्टिबिन्दु को सभी समस्याओं का अन्तिम तथा व्यहारिक समाधान जानते हैं परन्तु क्या यह वास्तविक सिद्धान्त और यथार्थ दृष्टिकोण है ? क्या हम ठन्डे दिल व दिमाग़ से सोचने के पश्चात् इसी परिणाम तक पहुँचेंगे ?

ग़ौर से देखा जाए तो नज़र आयेगा कि यह विचार और यह दृष्टिकोण वास्तव में दो बातों से पैदा हुआ है एक तो मुसलमान को दुन्या की दूसरी क़ौमों पर अनुमान करना, दूसरे इस्लाम और उसकी वास्तविकता से अपरिचित होना।

सबसे महत्वपूर्ण और केन्द्रीय बिन्दु जहाँ से हमको चलना चाहिये वह यह है कि अल्लाह तआ़ला का व्यवहार मुसलमानों के साथ वह नहीं है जो दूसरी क़ौमों से है, अवज्ञाकारी क़ौमों के विषय में तो पवित्र क़ुर्आन ने बार–बार बताया है कि हम ने उनके लिये रस्सी लम्बी कर रखी है और उनको ढील दे रखी है, वास्तव में उनका सांसारिक बनाव, बिगाड़ है, उनका सांसारिक सुख–दुख है, उनकी सांसारिक सम्पन्नता, परीक्षा है, और उनका यहाँ का उत्थान, पतन है, अल्लाह तआ़ला पवित्र क़ुर्आन में घोषित करते हैं –

"लेकिन जिसने नास्तिकता अपनाई, तो मैं उसको कुछ सामयिक लाभ दूँगा फिर उसको आग के दन्ड की ओर पहुँचाने पर विवश करूँगा, और वह पहुँचने की बुरी जगह है" (2 : 126)

दूसरे स्थान पर बताया –

"और आप कदापि उन चीज़ों की ओर आँख उठाकर भी न देखें जिनको हमने नास्तिकों के विभिन्न गुटों को कठिनाई में डालने के लिये दे रखा है, वह तो केवल सांसारिक जीवन की शोभा है और आपके रब (स्वामी) का प्रदान सर्वोत्तम तथा स्थायी है। (20 : 131)

एक और स्थान पर बताया –

"उनके (अर्थात् नास्तिकों के) धन तथा सन्तान आपको आश्चर्य में न डालें, अल्लाह तो केवल यह चाहता है कि इन वस्तु द्वारा उनको सांसारिक जीवन के जंज में फंसाये रखे और (उनकी नास्तिकता कारण) अवज्ञा ही की दशा में उन जान निकल जाये।" (9 : 55)

हदीसों में आता है कि इन्सान किसी और वस्तु पर भरोसा करता और अपने मालिक अल्लाह से बे परव होकर अपने साधनों पर विश्वास क कोई काम करता है तो अल्लाह तआ़ उससे अपना हाथ उठा लेता हैं उसको इसकी परवाह भी नहीं होती वह किस घाटी में मरा तथा विनष्ट हु

अहंकार, अभिमान, घमंड तथा पू पर अति, नुबूवत और रिसालत का अपम अपने ज्ञान तथा कला पर गर्व के का अल्लाह तआ़ला ने उन (सत्य को नका वाली) क़ौमों से अपनी कृपा दृष्टि फेर और जिस प्रकार शैतान को क़ियामत क के लिये बहकाने की छूट दी उसी प्रव उसके पीछे चलने वालों को भी यह दे दी कि वह अपनी उद्दन्डता तथा उन्म का स्वाद चखने के लिये खूब सा बटोर लें, फिर परिणाम प्रत्यक्ष है, कु मजीद में क़ारून की घटना पढ़िये, उ क्या कहा ? उसने अपने धन के बारे कहा "मुझे तो यह सब मेरे ज्ञान द्व मिला है।" (78 : 28)

यह कहा और अल्लाह की राह में न किया, फिर क्या हुआ अपने धन स ज़मीन में धंसा दिया गया।

ख़ुदा का वास्तविक और अस्ल सह छोड़ कर यह क़ौमें हर चीज़ के सा झुकने पर विवश हुई; वह बड़े गर्व कहती हैं कि हमने प्रकृति पर विजय ली और चांद–तारों पर कमन्द डाल

ारन्तु ध्यान से देखिये तो दिखेगा कि ◌्न्हों ने अपना भविष्य कैसी मिट जाने ◌ाली बेजान, आत्म रहित, और निर्दयी ◌स्तुओं से बाँध रखा है, एक पूज्य को ◌ोड़ कर उनको कितने स्थानों पर सिर ◌ुकाना पड़ा और कैसी घटिया-घटिया ◌ीज़ों को अपना इच्छित और अभीष्ट ◌नाना पड़ा, उन्होंने अपने भविष्य का ◌ाधार रोटी और बम को बनाया है, हर ◌ण बदलने वाली राजनीतिक परिस्थिति ◌र रखा है, बल्कि यह कहना भी ग़लत न ◌ोगा कि मानव विचार के भागते पगों के ◌लों पर रखा है, आज यह कोई ढकी ◌ुपी बात नहीं कि शासन के नायक की ◌ुद्रतम मानसिक चूक या भूल या अशुद्ध ◌ोच, करोड़ों मनुष्यों की मृति का कारण ◌था उनके लिये विनाश कारी सिद्ध हो ◌कती है ख़ुदा को छोड़ने और परिस्थिति ◌ा पल्ला पकड़ने का यह परिणाम है कि ◌ल्लाह तआला ने उनके भविष्य को ◌डार के दर्पणों और पर्दों से ऐसे जोड़ ◌िया है कि हिसाब किताब की ज़रा सी ◌ूक से महा युद्ध के अंगारे भड़क सकते ◌, मान और सम्मान की बात पर करोड़ों ◌न्सानों का खून पानी की भांति बह ◌कता है, आधुनिक युद्ध टेक्नीक और ◌ेक्नालोजी के अधिक से अधिक प्रयोग ◌ौर उस पर ज़ियादा से ज़ियादा भरोसे ◌े कारण अब इन्सानों के विनाश और ◌क्षा की निर्भरता केवल कुछ बटनों पर ◌ह गई है, जिन को दबाते ही नाश, ◌िनाश का वह भयानक दृश्य सामने आ ◌कता है जिस का अनुमान स्वयं इन ◌रिस्थिति के दासों तथा स्वयं को भुला ◌ने वाले इन्सानों को भी नहीं है।

अपने पालन हार पर विश्वास तथा ◌ास्था रखने वाली उसी की ओर आवाह्न ◌रने वाली और उस का सन्देश रखने ◌ाली क़ौम के लिये यह शिक्षा नहीं है कि ◌ह परिस्थिति के आधीन हो कर रहे उस के उज्जवल भविष्य का मार्ग यह नहीं है कि वह अपने धार्मिक (मिल्ली) अस्तित्व में काट छांट कर के उस को किसी नये वातावरण के सांचे में ढाल ले, और जो कुछ बच जाए उसी पर सन्तोष कर के बैठ रहे, बल्कि उस का मार्ग केवल वह है जिसे पवित्र क़ुर्आन ने खोल-खोल कर बता दिया है।

"तुम में जो लोग ईमान लायें और अच्छे काम करें उन को अल्लाह तआला वचन देता है कि उन को (इस आज्ञा पालन के पुरस्कार में) पृथ्वी पर सत्ता प्रदान करेगा जैसे उन से पहले लोगों को सत्ता दी थी और जिस दीन (विधान) को अल्लाह ने उन के लिये पसन्द किया है उनके लिये इस दीन को शक्ति देगा, और उन के इस भय के पश्चात् इसको शांति से बदल देगा" (24 : 55)

इस उम्मत का पूरा इतिहास गवाह है कि इसने सदैव प्रतिकूल परिस्थिति तथा कठिनाइयों और कटुताओं को मार्ग की धूल जाना और ख़ुदा से अपना संबंध सुधारने और आदेशें के पालन करने में कमी न की, परिस्थिति की माँग थी की हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के देहान्त के पश्चात् हज़रते अबूबक्र उसामा की सेना (लशकरे उसाम) न भेजें परंतु उन्हों ने भेजा, परिस्थिति चाहती थी रूमियों की बड़ी सेना से हज़रते ख़ालिद थोड़े से सिपाहियों (मुजाहिदों) को लेकर न टकरायें, परंतु उन्होंने इसकी परवाह न की और युद्ध किया, उन्दुलुस में मुजाहिदीन के उतरने के पश्चात् तारिक बिन ज़ियाद का नावें फूँकवा देना और महा सागर में घोड़े डाल देना हालात के विरुद्ध था, लेकिन उम्मत के लोगों ने यह सब जब किया जब वह अपने दीन (धर्म) पर और उस के भविष्य पर पूर्णतया सन्तुष्ट थे, इस के बिना यह सम्भव नहीं हो सकता था।

इस्लाम का सार और उस का सन्देश यह है कि तुम दोषित परिस्थिति को बदलने के लिये इस संसार में भेजे गये हो परिस्थिति की धुरी पर नाचने के लिये नहीं, परंतु इस के लिये पहली शर्त यह है कि जीवन के हर विभाग में अर्थात् उपासना क़ुर्आन पठन, व्यवहार, सामाजिकता, जीविकोपार्जन यानी जीवन के हर मोड़ और हर मैदान में ख़ुदा पर निगाह रखो, ख़ुदा से अपना संबंध शुद्ध रखो, तुम्हारे धार्मिक जीवन में कोई झोल, तुम्हारी समाजिकता में इस्लाम के विरुद्ध कोई बात, तुम्हारे इस्लामी व मानवी अधिकारों और संबंधों में ख़ुदा की कोई अवज्ञा और उस के किसी आदेश का तिरस्कार न हो। उज्जवल भविष्य की ओर हमारा प्रथम पग यही है। यदि हम यह समझते हैं कि यह दूरदर्शिता, हित परचियता और राजनीतिक सूझ-बूझ के विरुद्ध है, और आधुनिक परिस्थिति में इस पद्धति पर सोचना और इस ढर्रे पर चलना कठिन है तो हम को पवित्र क़ुर्आन की ओर आना चाहिये जो हमारे लिये हर समय और हर स्थान पर प्रकाश स्तंभ है, और जिससे हम हर छोटी-बड़ी बात में सम्पूर्ण मार्ग दर्शन प्राप्त करते हैं, वह इन बुद्धि जीवों और ज्ञानियों और आधुनिक परिभाषा में यथार्थवादियों के लिये कहता है -

"क्या आप समझते हैं कि इनमें के अधिकाँश सुनते या समझते हैं वह तो पशुओं की भांति हैं बल्कि और भटके हुए।" (25 : 44)

दूसरी ओर ख़ुदा और उसके रसूल के मार्ग पर चलने वालों, और परिस्थिति तथा घटनाओं से अधिक ख़ुदा पर भरोसा करने वालों के लिये क़ुर्आन मजीद में बार-बार घोषणा है -

"यह वही लोग हैं जिन को अल्लाह ने सत्यमार्ग दिखाया और वही लोग बुद्धिवाले है।" (39 : 18)

●●●

पारदर्शिता (TRANSPARENCY)

– मो० हसन अंसारी

'पारदर्शिता' का शब्द है तो काफी पुराना किन्तु बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में विशेषकर सरकार व शासन की दुनिया में इस शब्द का प्रयोग व प्रचलन हुआ है। पारदर्शिता का अर्थ है आर–पार दिखना, स्वच्छता, निष्कपट भाव, खुलापन, शफ़्फ़ाफ़, आइने की तरह साफ।

That which can be seen through like clear glass, unmistakebly clear.

इस शब्द की मूलभावना अच्छाई का पहलू लिए हुये है। इस का सम्बन्ध दिल की सफाई से है, मन के मैल से नहीं। यह मन का साथी है, 'तन' का नहीं। इस का काम समाज में इन्साफ़ और इन्सानियत को उजागर करना है, लोकतन्त्र की वास्तविक भावना को बल प्रदान करना है। व्यक्ति और समाज को न्याय की तुला पर सही तौलना है। पारदर्शिता लोकतन्त्र की पाज़ेब है। यह 'कटौती' में 'गंगा' उतार लाती है। निष्कपट भाव से ओत–प्रोत यह पारस्परिक विश्वास, प्रेम, सहृदयता, परोपकार की जन्मदायी हैं।

सामान्यजन के लिए इस भारी भरकम लुभावने शब्द का कोई विशेष महत्व नहीं। वह *स्वयं पारदर्शी* होता है, उसके जीवन में हर जगह पारदर्शिता है। छल–कपट, द्वेष–भाव होशियारी (TACTFULNESS), कूटनीति, जुगाड़, साजिश, षडयन्त्र, काकस, हत्या, बलात्कार, आतंक से वह परिचित नहीं। और न आधुनिक सुख–सुविधाओं से सुसज्जित उन कमरों की 'दीवार' बनना उसे पसन्द जहां कलोज़–डोर मीटिंग्स सम्पन्न होती हैं। उस का जीवन सहज और सरल है। वह सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी तथा सर्वगुण सम्पन्न अपने उस मालिक को भली प्रकार जानता और मानता है जिसके अदृश्य हाथों में इस सृष्टि की बागडोर है और जिसकी इच्छा के बिना एक पत्ता भी नही हिल सकता, और जिसको हाज़िर व नाज़िर जानकर सरल स्वभाव का आम आदमी जब क़सम खाता है तो उसके रोंगटों में सिहरन हो उठती है। वह 'दिखावा' नही जानता।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के प्रारम्भ में प्रशान्त महासागर के अन्दर तल में उत्पन्न वनस्पति व जीव जन्तुओं को किसी पारदर्शी कैमरे की सहायता से चित्रित कर एक फिल्म UNDER THE PACIFIC OCEAN फिल्माई गई थी। समुद्र की तलहटी में स्थित यह पेड़ पौधे व जीव–जन्तुओं से कहीं अधिक रोचक, अनोखे और मनमोहक दिखते हैं। उनमें एक बहुत बड़ा फूलनुमा पौधा दर्शकों के विशेष आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। देखा गया कि इस अत्यन्त लुभावनी–चीज़ के रेंज में ज्यों ही कोई मछली आई उसकी पंखड़ियां धीरे से बन्द हो गईं। मछली गायब ! अरे ! यह क्या !! क्या यह एक बड़ा फूलनुमा पौधा नही !!! फ़िल्म देखने वाली हज़ारों आँखें धोखा खा गईं। वास्तव में यह तो एक बड़ी मछली है जिसे देखने वाले बड़ा अच्छा खुशनुमा फूल समझ रहे थे वह कई छोटी मछलियों को देखते–देखते चट कर गया। कुछ यही हाल इस धरती पर विकसित कमोबेश हर समाज का है। काश हम अपने जीवन में सच्ची पारदर्शिता ला पाते। वह पारदर्शिता जो निष्कपट भाव से उत्प्रेरित हो, सेल्फ़ मोटीवेटेड हो। मन की पारदर्शिता ही एक निरोग समाज की संरचना कर सकती है। ●●●

अरबों की तादाद में दुनिया वाले पढ़ें

बचाएं बिचौलियों से

Rs 10/-

A

बवंडर

मासिक

ज़हन की ताज़गी और रुह की पाकीज़गी के लिये

खुद पढ़िए, पढ़वाइए और शुक्रिया पाइये

A 26.4.87 इल्म, एल–16/7, बादशाह नगर कॉलोनी, लखनऊ (उ०प्र०) भारत

ब्रान्च (पश्चिमी उ०प्र०) 20-6-64 अद्भुत, मवाना खुर्द मेरठ

E-mail : musharrafazam@rediffmail.com

isi_azam@rediffmail.com

Ph. : 0522-389590, 268016 Telefax : 262700

सत्रे-औरत

अर्थात नग्न अँग का छुपाना

— कलीमुल्लाह खाँ

इस्लाम जिसकी बुन्याद हज़रत दम अलैहिस्सलाम ने रखी और जिसकी मील हज़रत मुहम्मद, (स०) के ज़रिये , सारी इन्सानियत के लिए फ़लाह व मयाबी का एक दायमी पैग़ाम है। इस्लाम एक मुकम्मल निज़ामे हयात दिया है हर इन्सान की कामयाबी की मंज़िल तरफ़ आसानी से ले जाता है। इन्सान क़िस्मत अल्लाह ने इस्लाम से वाबस्ता है। अगर इन्सान की ज़िन्दगी में लाम जारी व सारी होगा तो वह दुन्या भी हर सूरत और हालत में कामयाब ा और मरने के बाद वाली ज़िन्दगी ी आख़िरत में हमेशा की कामयाबी से किनार होगा।

इस्लाम नाम है अल्लाह की मुकम्मल मांबरदारी का। शरीअ़ते इस्लामी इस मांबरदारी करने का तरीक़ा है। चुनांचे ीअत की मुकम्मल पैरवी करने ही में सान की कामयाबी है। हर मुसलमान मुतालबा है कि वह अपनी पूरी ज़िन्दगी हर मुआमले में और हर मसअले में ीअ़त की पाबन्दी करे। चाहे इबादत मौक़ा हो, चाहे अख़्लाक़ियात और ाशियात का मसअ़ला हो, शरीअ़ते सऊ लामी के मुताबिक होना चाहिए।

इस वक़्त हम शरीअ़त के दो अहम ुकामात जिनका हमारी मुआशरती (समाजी) ज़िन्दगी से गहरा तअ़ल्लुक़ है, का तज़किरा करेंगें उन में से एक हुक्म सत्रे–औरत और दूसरा हिजाब यानी परदा है।

सत्रे औरत (जिस्म के छिपाने वाले हिस्से का छिपाना) :

सत्र का अर्थ है छिपाना, और औरत का अर्थ है जिस्म का छुपाया जाने वाला हिस्सा, लेकिन अब सत्र; औरतुल जिस्म के अर्थ में बोला जाने लगा है, अर्थात् सत्र जिस्म का वह हिस्सा है जिसका हर हाल में छिपाना फ़र्ज़ है। सिर्फ़ ज़ौज़ेन यानी ख़ाविन्द और बीवी इस हुक्म से मुस्तसना या बाहर है और बहालते मजबूरी या बग़रजे–इलाज़ डॉक्टर या हकीम के सामने सत्र खोलने की इजाज़त है। यहाँ तक कि लड़की का सत्र हक़ीक़ी वालिद और भाई के सामने और बेटे का सत्र अपनी हक़ीक़ी माँ और बहन के सामने भी ज़ाहिर नही होना चाहिए।

मर्द का सत्र नाफ़ से लेकर घुटनों के नीचे तक है और औरत का सत्र चेहरा, पहुँचे से हथेली और हाथ और गट्ठे से नीचे पैर के अलावा पूरा जिस्म है। मर्द और औरत दोनों का न सिर्फ नमाज़ के मौक़े पर बल्कि हर हालत में जिस्म के इस हिस्से यानी सत्र को छिपाना ज़रूरी और लाज़मी है।

सत्र का ढकना न सिर्फ नमाज़ में जरूरी है। बल्कि दीगर बदनी इबादत में भी लाज़मी है। अल्लाह का ज़िक्र करने के वक़्त ख़ानए–काबा का तवाफ करने के वक़्त भी सत्र ढका होना अनिवार्य है। वर्ना यह सब इबादतें फासिद हो जायेंगी।

इस सत्र की अहमियत का एहसास होना चाहिये। हमको अपने आप को और अपने घर को देखना चाहिये कि हमारे यहाँ इस हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी तो नही हो रही है। अक्सर देखा गया है कि मर्द घरों के अन्दर सिर्फ ऐसा कच्छा या नेकर पहन कर घूमते या नहाते है जिस से सत्र खुला रहता है। इसी तरह घर में औरतें ऐसे बारीक कपड़े या दुपट्टे ओढ़े रहती है जिस से उनके बदन 'सत्र' का कुछ हिस्सा साफ़ नज़र आता है। सरों का खुला रहना गर्दन और बाहों का नज़र आना और रेडीमेड बारीक कपड़ों मे से जिस्म का उरियाँ होना सत्र के हुक्म की सरासर ख़िलाफवर्ज़ी है और पूरे कुंबे के लिये ख़तरनाक है।

इसी तरह अख़बारात में और टेलीविज़न पर नीम बरहना (आधे नंगे) मर्द और औरतों की तसवीरें देखना भी शरीअ़त के इस हुक्म की दीः व दानिस्तः (जानबूझ कर) ख़िलाफ़वर्ज़ी करना है। अपने सत्र का खोलना और दूसरे के खुले हुए सत्र

का देखना दोनों ही हराम है। यह बात याद रखने की है कि अल्लाह का यह एक अहम उसूल है कि अगर उसके अहकामात की इन्फ़िरादी ख़िलाफ़वर्ज़ी की गयी है तो अफ़राद पर उनका वबाल आता है और इज्तिमाई ख़िलाफ़वर्ज़ी है तो पूरे मुआशरे (समाज) को उसकी सज़ा भुगतनी पड़ती है। इस वक़्त हमारे मुआशरे में जो बेहयाई बेशर्मी और बद–अख़लाक़ी फैली हुई है। वह इसी इज्तिमाई गुनाह की वजह से है। लिहाज़ा हम सब की ज़िम्मेदारी है कि हम खुद भी सत्रे–औरत के हुक्म की पाबन्दी करें और अपने मुआशरे में इस बात की पूरी कोशिश करें कि शर्म व हया का माहौल क़ायम हो। मुसलमानों की मक्की ज़िन्दगी में नमाज़ का हुक्म आ गया था और उसके साथ–साथ नमाज़ के सारे अहकामात भी बता दिये गये थे। नमाज़ की सात शर्तो में से सत्रे–औरत चौथी शर्त है। लिहाज़ा सरवरे दो आलम की हयाते–तैयबा में मजमुई तौर से सारे सहाबए–किराम और सहाबियात सत्रे–औरत के आदी थे और उनके पाकीज़ा मुआशरे में शर्म व हया और पाकीज़गी का एक माहोल बना हुआ था। इस पस–मंजर को आप अपने सामने रखिये और ग़ौर कीजिये कि अहकामाते हिजाब या पर्दा इस मुआशरे के ऊपर क्यों नाफ़िज हुये ? हिजाब के सिलसिले में सब से पहले सूरतुल–अहज़ाब की आयत नं. 53 में इर्शाद हुआ, (तजुर्मा) :

'ऐ मुसलमानो जब तुम नबी स.अ.स. की अज़्वाजे–मुतह्हरात (पवित्र बीवियों) से कुछ तलब करो तो आड़ से या पर्दे के पीछे से मांगा करो। यह तुम्हारे और उनके दिलों की पाकीज़गी के लिये ज़ियादा मुनासिब तरीक़ा है।'

ग़ौर करने की बात यह है कि यह हुक्म सरवरे दो आलम के तरबियत याफ़्ता सहाबाए किराम के लिए हो रहा है और पाकबाज़ बीवियों के लिए हो रहा है जो उनके लिए माओं का दर्जा रखती हैं और उम्मत की मायें कहलाती हैं। इन दोनों को यह हुक्म दिया जा रहा है कि एक दूसरे से हिजाब करो। इस से जाहिर होता है कि हिजाब मुआशरती ज़िन्दगी की इस्लाह के लिये कितना ज़रूरी अमल है और पूरी उम्मत के हर फर्द के लिये अपने मुआशरे को पाकीज़ा बनाये रखने के लिये कितना ज़रूरी है ?

हिजाब के सिलसिले में सूरह अहज़ाब ही की आयत 32 और 33 में अज़्वाजे–मुतह्हरात को ख़िताब करते हुए इन अलफाज़ में वज़ाहत की गयी है।

'नबी की बीवियो ! तुम आम औरतों की तरह नही हो अगर तुम अल्लाह से डरने वाली हो तो नर्म ज़ुबान से बात न किया करो। जिस से दिल की ख़राबी का कोई शख़्स लालच में पड़ जाये, बल्कि साफ सीधी बात करो। अपने घरों में टिकी रहो और पुरानी जाहिलियत की तरह सज धज न दिखाती फिरो। नमाज़ क़ायम करो, ज़कात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो। अल्लाह तो यह चाहता है कि तुम अहले–बैत से गन्दगी को दूर कर दे और तुम्हें पाक कर दे।

ज़रा सोचिये कि नबी की पाक, बा इफ़्फ़त व बाइस्मत बीवियों को महफ़ूज़ रखने और पाकीज़ा ज़िन्दगी बसर करने के लिए हिजाब की कितनी अहमियत बताई गयी है। लिहाज़ा आम मुसलमान औरतों के लिये हिजाब की अहमियत ज़ाहिर है। ऊपर की आयतों में आम मुसलमान औरतों से नबीए–अकरम की बीवियों को मुम्ताज़ किया गया है। इसी तरह मुसलमान औरतों को भी गैर–मुस्लिम औरतों और मुसलमान फ़ासिक़ व फ़ाजि[र] औरतों पर फ़ज़ीलत हासिल है। शरीअत की नज़र में काफ़िर फ़ासिक़ व फ़ाजि[र] औरतें मुसलमान औरतों के लिये गै[र] महरम मर्दो ही की तरह है और इन से भ[ी] हिजाब ज़रूरी है। सूरह अहज़ाब की ह[ी] आयत 59 में हिजाब का हुक्म और वज़ाहत से नाज़िल हुआ है। इरशाद खुदावन्दी है कि :

'ऐ नबी अपनी बीवियों और बेटिय[ों] और अहले ईमान की औरतों से क[ह] दीजिये कि अपने ऊपर अपनी चादर की पल्लू लटका लिया करें यानी चेहर[ा] छुपाने के लिये घूँघट कर लिया करें य[ह] ज़ियादह मुनासिब तरीक़ा है ताकि व[ह] पहचान ली जायें और न सताई जा[यें] और अल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीम है।

इस आयत में सर छिपाने और चेहर[ा] छिपाने का साफ़ अलफ़ाज़ में हुक्म है आज कल की औरतें सर छिपाने को ऐ[ब] समझती है और जो ख़ातून दुपट्टा ओढ़ती भी है तो इस क़दर बारीक होता है कि सर के बाल और उनका हुस्न व जमा[ल] साफ़ नज़र आता है। हज़रत वजी[ह] (रज़ि०) बयान करते है कि रसूले अकर[म] कि ख़िदमत में बारीक कपड़े आये तो उ[न] में से एक कपड़ा मुझे इनायत फ़रमान[े] कि इस से अपना कुर्ता बना लो औ[र] अपनी बीवी को देना कि वह दुपट्टा ब[ना] ले। साथ ही आप ने ताकीद की कि बी[वी] को हुक्म देना कि नीचे कोई मोटा कपड़[ा] लगा ले जिस से जिस्म के हिस्से ज़ाहि[र] न हों।

मुआशरे में ऊपर लिखे हिजाब [के] अहकामात पर अमल करने से शर्म व ह[या] और हिजाब की आम फ़ज़ा क़ायम [हो] गयी। तब हिजाब के अहकामात पू[...]

वज़ाहत के साथ सूरह नूर की आयत 31 में आये। अल्लाह ने वज़ाहत के साथ नबिए–अकरम से इरशाद फ़रमाया कि :

आप मोमिन औरतों से कह दीजिये कि अपनी नज़रे बचाकर रखे और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाजत करें और अपना बनाव सिंगार न दिखायें सिवाये उसके जो खुद ज़ाहिर हो जाये और अपने सीनों पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डाले रहें। वह अपना सिंगार ज़ाहिर न करें अलावा इन लोगों के, शौहर, वालिद, खुसुर अपने बेटे, शौहर के बेटे भाई, भाइयों के बेटे बहनों के बेटे और अपनी मेल जोल की औरतें अपनी लौंडी–गुलाम और वह मर्द जो मर्दानियत से ख़ाली हो और कमसिन बच्चे और वह अपने पाँव ज़मीन पर मारती न चला करें कि अपनी वह ज़ीनत जो छुपा रखी है लोगों को मालूम हो जाये। ऐ मोमिनो ! तुम सब मिलकर अल्लाह की जनाब में तौबा करो शायद तुम फलाह पा जाओ।

इस आयत में मोमिन औरतों को पहला हुक्म यह दिया गया है कि तुम अपनी निगाहें नीची रखो और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो यही हुक्म मर्दों को भी सूरह नूर की आयत 30 में दिया गया है जहाँ इरशादे खुदाबन्दी है :

'ऐ नबी ! मोमिन मर्दों से कह दीजिये कि अपनी निगाहें नीची रखें और शर्मगाहों की हिफ़ाजत करें यह उन लोगों के लिये ज़ियादा पाकीज़ा तरीका है। जो कुछ वह करते हैं अल्लाह उस से बाख़बर है।

इस आयत से यह बात साफ हो गयी के नज़रों की हिफ़ाज़त मर्दों और औरतों दोनों पर फ़र्ज़ है और यह पाकीज़गी का बेहतरीन तरीका है। बदनज़री बदकारी की पहली सीढ़ी है। रिवायत में आता है कि एक मर्तबा एक नाबीना हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मक्तूम (रजि) हुजूरे अक़दस के हुजरए–मुबारक में तशरीफ़ लाये और हज़रत आएश और उम्मे सलमा रज़ि. यल्लाहु अन्हुमा से आप ने उन से पर्दा करने को कहा, तो वह कहने लगीं कि यह तो नाबीना है हुजूरे अकरम ने फ़ौरन फ़रमाया मगर तुम तो नाबीना नहीं हो। कितनी फ़िक्र की बात है कि हमारे मुआमलात हिजाब के सिलसिले में कहाँ तक पहुँच गये है। नवजवान लड़कों और लड़कियों की मख़लूत तालीम (सह–शिक्षा) के नाम पर किस क़दर शाना–ब–शाना मेल–जोल की इजाज़त है और जिसका जवाब ये पेश किया जाता है कि हमें अपनी बच्ची पर भरोसा है। नज़र शैतान के तीरों में से एक मुहलिक तीर है जो आँख के रास्ते से दिल में उतरती है। फिर दोनों फ़रीक़ हमकलाम होते हैं और इस तरह नज़र बदनज़री बदकारी का रास्ता खोलती है।

अगर हम ग़ौर करें तो टेलीवीज़न बरहना या नीम बरहना, अर्ध–नग्न तस्वीरों वाले अख़बार और रिसालों को देखना भी बद–नज़री में शुमार होगा। हमारे नाम–निहाद तथा–कथित दानिशवर बेहयाई, फैशन, टेलीविज़न और तस्वीरों वाली मैगज़ीनों के नये युग की अहम ज़रूरत क़रार दे रहे है। जबकि हक़ीक़त यह है कि इनके ज़रिये हमारा पूरा मुआशरा (समाज) दीनी व अख़लाक़ी (नैतिक) तौर पर तबाह होता जा रहा है और यह चीज़ें वबाई अमराज़ (संक्रामक) रोग की तरह हमारे मुआशरे को अपनी लपेट में ले रही है जिसका हमें एहसास तक नही है। शेर:

वाए नाकामी मताए कारवाँ जाता रहा।
कारवाँ के दिल से एहसासे ज़ियाँ जाता रहा।

सूरह नूर की ऊपर की आयत के हुक्म पर सहाबिया औरतों ने अपनी ज़ीनत, सजावट छिपाने के लिये मोटी–मोटी चादरें काटकर अपने दुपट्टे और ओढ़नियाँ बना लीं। आज कल की औरतें सर छिपाने को ऐब समझती हैं और कोई खातून दुपट्टा ओढ़ती भी है तो वह इस कदर बारीक होता है कि सर के बाल और उसका हुस्न व जमाल साफ़ नज़र आता है।

हज़रत अक़बा इब्न आमिर (रजि.) से रिवायत है कि हुजूरे अकरम ने इरशाद फ़रमाया कि महरम औरतों के पास न जाया करो। एक सहाबी ने अर्ज़ किया कि अपनी बीवी के ससुराली रिश्तेदारों के बारे में क्या हुक्म है ? आप ने फ़रमाया "ससुराली रिश्तेदार तो मौत है।" यानी देवर, जेठ, नन्दोई और दूसरे तमाम ग़ैर महरम मर्दों से पर्दा करना लाजिम और फ़र्ज़ है मगर देवर और जेठ और ससुराली रिश्तेदारों से तो इस तरह बचना चाहिये जिस तरह हम मौत से बचने को ज़रूरी ख़याल करते हैं।

ऊपर की आयत के इस हुक्म में कि औरतें अपने पाँव को ज़मीन पर मारती हुई न चला करें कि अपनी जो ज़ीनत उन्होंने संभाल या छिपा रखी हो उसका लोगों को इल्म हो जाये। ध्यान देने के क़ाबिल बात है कि जब ज़ेवरात को पोशीदा रखने का ऐसा एहतराम है तो ज़ेवर पहनने वाली की आवाज़ और सूरत का ग़ैर महरमों से छिपाना कितना ज़रूरी और लाज़िम है।

सत्र और हिजाब का हुक्म और इस पर सख़्ती कोई गैर फ़ितरी (अस्वाभाविक) चीज़ नहीं है और न ही औरत पर या उसकी आज़ादी पर कोई गैर अक़ली पाबन्दी है बल्कि उन ख़तरनाक मुआशरती सामाजिक बीमारियों और मसायल (समस्याओं) से बचने का तरीक़ा है जो

इन्सानियत के लिए ज़हरे क़तिल है फुहाशी और आवारगी विलोम है हया व इफ्फ़त पाकदामनी का। हया अक़लमन्दी की दलील है जबकि फुहाशी और बेअक़ली का चोली दामन का साथ है।

आज अगर हम मग़रबी मुआशरे (पाश्चात्य सभ्यता) का ग़ौर से जायज़ा लें तो यह बात साफ़ नज़र आती है कि हिजाब और हया को बालाए ताक़ रखकर उन्होंने अपने मुआशरे को अपने हाथों हलाक करने वाली अख़लाक़ी व जिसमानी बीमारियों को शिकार बना लिया। वहां औरत तथाकथित आज़ादी की आड़ में पब्लिक प्रापर्टी बन कर रह गयी है और उसकी पाकीज़ा और खुसूसी निसवानी हैसियत ख़त्म हो गयी है, और कला व कल्चर के नाम पर उरयानी और फुहहाशी की ऐसी ग़िलाज़त फैल गयी है जिसने उनके ख़ानदानी निज़ाम को बिल्कुल तबाह कर दिया है। इन देशों में तलाक़ देने की दर 80 से 90 प्रतिशत तक फ़ैल गयी है, और हर रोज़ अपहरण और सामूहिक बलात्कार की दिल हिला देने वाली ख़बरें अख़बारों की ज़ीनत बन गयी हैं। इलेक्ट्रानिक मीडिया और अख़बारात, ड्रामे, मनोरंजन और कल्चर की आड़ में उरयानी और फुहहाशी की रोज़ बरोज़ तरक्की देने में इन्सान अपनी बेशक़ीमत सलाहियतों को सर्फ़ कर रहा है।

शरीअत ने सत्र–औरत और हिजाब के अहकामात देकर पूरे इन्सानी मुआशरे को फूहहाशी, बेहयाई और बद–अख़लाकी और दूसरे अख़लाकी जरायम से महफ़ूज़ रखने का एक फ़ितरी (स्वाभाविक) और आसान निज़ाम बनाया है। मगर अफ़सोस की बात है कि आज हम इस निज़ामे हयात की क़दर नही कर रहे हैं और रसूले अकरम की बीवियों और बेटियों की तक़्लीद (अनुसरण) छोड़कर बेहया बेग़ैरत और बदकार औरतों के नक़्शे क़दम पर चलने में फ़ख़ महसूस करते हैं। अब वक़्त आ गया है कि हम शरीअत की गिरॉक़दर और मुआशरे को जन्नत नमूना बनाने वाले अहकामात की क़दर करें। उनको सीने से लगायें और उनको दोबारा ज़िन्दा करने की पूरी–पूरी कोशिश करें। यह बयान अकबर इलाहाबादी के अशआर पर ख़त्म किया जाता है कि शायद हमें इब्रत हासिल हो – अशआरः–

बे पर्दा कल जो आईं नज़र चन्द बीवियाँ।
अकबर ज़मीं में ग़ैरते क़ौमी से गड़ गया।।

पूछा जो उन से आप का पर्दा वह क्या हुआ।
कहने लगीं कि अक़्ल पे मर्दों की पड़ गया।।

●●●

.... पृष्ठ १६ का शेष

ख़तरनाक है। बारहा ऐसा हुआ कि बड़ी–बड़ी जंगे हुई और उन्होंने मुल्कों को तबाह कर दिया, बड़े–बड़े फसादी लोग पैदा हुए उन्होंने पूरे देश में ज़हर फैला दिया लेकिन एक गिरोह खड़ा हुआ उसने देश का मिजाज़ दुरुस्त कर दिया, उसकी चूल बिठा दी लेकिन यहां इसके कोई चिन्ह इस समय कम से कम नज़र नहीं आ रहे हैं। कोई पार्टी, कोई टीम, कोई समिति, कोई संस्था कोई इंस्टीटयूट (Institute) यहां तक कि अल्लाहवालों की कोई जमाअत मुसलमानों में या हमारे हिन्दू भाईयों में ऐसी पार्टी पैदा नहीं हुई जो इस गंभीर परिस्थिति से चुनौती लेने के लिए मैदान में आए। मुझे आचार्य विनाबा भावे से बड़ी आशा थी उम्मीद थी कि यह जनसेवा की समस्या है लेकिन इस देश पर बड़ी–बड़ी मुसीबतें आई परन्तु उन लोगों ने कुछ भी ध्यान नहीं दिया और जो परेशानी उस समय आई उसका तोड़, उसका इलाज किसी ने पेश नहीं किया साम्प्रदायिक दंगों में नैतिक दशा बद से बदतर होती चली जा रही है। हुकूमत कोशिश के बावजूद इस पर कामयाब नहीं हो रही है। हुकूमत कोशिश के बावजूद इस पर कामयाब नहीं हो रही है। इसलिए सबसे अधिक तशवीश की बात यह है कि इस परेशान व नाज़ेबा सूरते हाल का मुक़ाबला करने वाला कोई नज़र नहीं आ रहा है। मुल्क के कोने कोने में यूनीवर्सिटियां हैं, उच्च शिक्षा संस्थाएं हैं। एकेडमीज़ (Acadamies) भी हैं और रिसर्च (Research) भी हो रही है, शेरो शायरी भी हो रही है, अच्छी से अच्छी पुस्तकें भी प्रकाशित हो रही हैं बल्कि एक शैक्षिक वातावरण सारे देश पर छाया हुआ है लेकिन यदि कोई काम नहीं हो रहा है तो वह अख़लाक़ (चाल चलन) दुरुस्त करने वाला काम है; व्यवस्था ठीक करने वाला, भरोसा पैदा करने वाला काम है और आपस में प्रेम पैदा करने वाला काम है। और कोई ऐसा प्रचार कोई ऐसी कोशिश जिससे इन्सान के जान की क़ीमत मालूम हो और यह मालूम हो कि इन्सान पर हाथ उठाना कितना बड़ा अपराध है, कितना बड़ा पाप है ऐसी दावत व तहरीक कि जिससे मालूम हो कि इन्सान ख़ुदा का बनाया हुआ है जो इस पर उठाएगा मानो ख़ुदा पर हाथ उठाएगा। वह ख़ुदा की बड़ी प्यारी व प्रिय चीज़ पर हाथ उठा रहा है।

●●●

जीवन में सद्व्यवहार (अच्छे अख़्लाक़)

— अबुल हसन अली नदवी

मित्रों तथा भाइयो !

सब जानते हैं कि हमारे समाज और वर्तमान जीवन व्यवस्था में कोई त्रुटि एवं कमी अवश्य है जिसके कारण जीवन की कल सही नहीं बैठती और उसका झोल दूर नहीं होता। एक खराबी को दूर कीजिये तो चार ख़राबियां और पैदा हो जाती हैं। आज संसार के बड़े–बड़े देश भी इस त्रुटि के अपवादक हैं और महसूस करने लगे है कि आधार में कोई त्रुटि है, किन्तु उनको अपनी फुटकर समस्याओं से छुट्टी नहीं। हम इन समस्याओं की आवश्यकताओं से इन्कार नहीं करते, मगर इन समस्त समस्याओं से अधिक महत्वपूर्ण तथा सर्वमान्य प्रश्न मानवता एवं मनुष्यता की समस्या है। इस लिये कि हमारी पहली स्थिति इन्सान ही की है और यह समस्त विषय उसके पश्चात् आते हैं। जिन लोगों के हाथों में जिन्दगी की बागडोर है उन्होंने जीवन की गाड़ी इतनी तीव्र गति से चला रखी है कि एक मिनट के लिये उसको रोक कर त्रुटि एवं दोष को देखने के लिये भी तैयार नहीं। वह यह नहीं देखते कि गाड़ी ठीक पटरी पर जा रही है या नहीं और इस दोष से उसके यात्रियों तथा भविष्य में आने वाली पीढ़ियों तथा सन्तानों को किन भयंकर आशंकाओं तथा आपत्तियों का सामना करना है। उनको केवल इस बात की चिन्ता है कि इस गाड़ी को चलाने वाले वह हो। उनमें से प्रत्येक, संसार को इस बात की रिश्वत देता है कि यदि गाड़ी का हैन्डिल उसके हाथ में होगा तो वह अधिक से अधिक तीव्र गति से गाड़ी चलायेगा। अमेरिका तथा रूस दोनों ही का दावा है कि वह इस गाड़ी को अत्यधिक तीव्र गति से चलायेंगे परन्तु किसी को भी इस यात्रा की दिशा और उद्देश्य से कोई बहस नहीं।

सामाजिकता की प्रवृत्ति

अब मैं बतलाता हूँ कि वह त्रुटि कहाँ और कैसे हो रही है। आज संसार में बड़े–बड़े संगठन बन रहे हैं। इस समय सामाजिकता पर अधिक बल दिया जा रहा है। हर काम सामूहिक तथा विश्वव्यापी स्तर पर किया जा रहा। हर काम सामूहिक तथा विश्वव्यापी स्तर पर किया जा रहा। यह सामाजिकता एक रुचिकार एवं प्रगतिवादी विचारधारा है, परन्तु व्यक्ति तथा उसकी योग्यता एवं क्षमता हर सामूहिक कार्य की और प्रत्येक संगठन की आधारशिला है और इसके महत्व से किसी भी युग में इन्कार नहीं किया जा सकता। इस युग का भयंकर दोष यह है कि व्यक्ति के महत्व तथा उसके आचरण एवं योग्यता की नितान्त उपेक्षा की जा रही है। भवन निर्माण हो रहा है किन्तु जिन ईटों से वह बनेगा उनको कोई नहीं देखता। यदि कोई इस प्रश्न को छेड़ता है कि ईटें कैसी है, तो कहा जाता है कि ईटें दोष युक्त, अपूर्ण तथा ख़राब भले हों किन्तु भवन सुदृढ़ एवं उत्तम होगा। मेरी समझ में नहीं आता कि सौ दोष युक्त वस्तुओं से एक उत्तम वस्तु कैसे तैयार हो जाएगी। क्या अनेक दोष जब बड़ी संख्या में एकत्र हो कर एक दूसरे में समन्वित हो जाते हैं तो चमत्कार के रूप में एक सुन्दर एवं उत्तम वस्तु प्रकट हो जाती है ? क्या सौ अपराधियों एवं अत्याचारियों के संगठित हो जाने से एक न्याय युक्त दल तथा एक भद्र एवं शीलवान संस्था की स्थापना सम्भव है ? हमें तो यह ज्ञात है कि परिणाम सदैव प्राथमिक ज्ञान तथा मौलिक विचारों के अधीन होता है और पूर्ण सदा अंशों की विशेषताओं की प्रतिमा एवं प्रदर्शन मात्र होता है। आप यथोचित योगफल ज्ञात करना चाहते हैं तो जब तक आंकड़े शुद्ध न होंगे, प्रतिफल अशुद्ध रहेगा। यह कहां का तर्क एवं कहाँ का दर्शन है कि व्यक्तियों के निर्माण की कोई चिन्ता नहीं और एक सुन्दर एवं शोभनीय संग्रह एवं संगठन की आशाएं की जा रही है ?

दोषमुक्त असावधानी

आज विद्यालयों, अनुसंधान–पाठशालाओं, प्रयोगशालाओं, क्रीड़ा स्थलों में मानव जीवन की प्रत्येक वास्तविक तथा कल्पित आवश्यकताओं की व्यवस्था की जा रही है किन्तु उन व्यक्तियों को बनाने के प्रबन्ध के प्रति कोई विचार नहीं किया जा रहा है, जिनके लिये यह समस्त प्रयोजन हैं। क्या यह सब तैयारियां उन मनुष्यों के लिये हैं, जो साँप बिच्छू बन कर जीवन व्यतीत करेंगे, जिनका उद्देश्य भोग विलास, लोलुपता एवं आमोद प्रमोद के सिवा कुछ नहीं ? इस युग के मानव ने जुल्म, अत्याचार एवं भ्रष्टाचार को संगठित किया है और इस विषय में उसने पशुओं को भी मात कर दिया है। क्या कभी साँपों तथा बिच्छुओं और जंगल के शेरों तथा भेड़ियों ने इन्सानों पर एकता करके संगठित रूप से आक्रमण किया है? लेकिन मनुष्य अपने जैसे मनुष्यों को मिटाने

तथा बरबाद करने के लिये संगठनों एवं संस्थाओं को स्थापित करता है और पूर्णरूपेण विश्व से विनष्ट करने के लिये अनेक प्रकार की योजनाएँ बनाता है। इस समय व्यक्ति के प्रशिक्षण, चरित्र निर्माण और मानवता के गुणों तथा आचार, व्यवहार पैदा करने की भयंकर एवं दोषयुक्त उपेक्षा की जा रही है, यही काम सबसे निरर्थक एवं व्यर्थ समझा गया है। मशीन ढालने की कितनी फैक्टरियां है, कागज बनाने के कितने कारखाने है, कपड़े की कितनी मिले हैं, किन्तु वास्तविक मनुष्य बनाने की भी कोई संस्था अथवा प्रशिक्षण केन्द्र है ? आप कहेंगे कि यह शिक्षण संस्थाएं, विद्यालय तथा विश्व विद्यालय लेकिन क्षमा कीजियेगा, वहां मानवता का निर्माण तथा मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाने की ओर कितना ध्यान दिया जाता है ? यूरोप तथा अमेरिका ने कितना धन व्यय करके और कितनी सामग्री तथा उपकरणों का उपयोग करके ऐटम बम बनाया, यदि इसके स्थान पर वह एक आदर्श पुरुष तैयार करते तो विश्व के लिये कितना मंगलमय एवं कल्याणकारी होता, किन्तु इस ओर ध्यान देने की किस को फुर्सत है।

हमारा देश

हमारा देश भारत वर्ष इतिहास में, पुरुषोत्पादक देश माना गया है। इस धरती ने अनेक महान भावों को जन्म दिया है, किन्तु अब शताब्दियों से इसकी ओर से असावधानी बरती जा रही है। हमें कहना पड़ता है कि मुसलमानों ने स्वयं अपने शासन काल में इस कर्तव्य का पालन करने में न्यूनता एवं संकीर्णता से काम लिया। उनका शासन यदि ख़िलाफ़त राशिदा (हज़रत मुहम्मद सल्लाहु अलैहि व सल्लम के चार उत्तराधिकारियों का शासन काल) का आदर्श मात्र होता और वह इस देश के व्यवस्थापक एवं शासक होते और इस देश के अभिभावक तथा नैतिकता एवं चरित्र का निर्माण करने वाले होते तो आज इस देश का नैतिक स्तर यह न होता और इस देश के अधिपति एवं शासन से भारयुक्त ने किये जाते। फिर अंग्रेज आये। उनका शासन तो केवल स्पंज (SPONGE) के समान जिसका काम यह था कि गंगा के मुख से धन दौलत चूस कर टेम्स (TAMES) के तट पर उगल दे। उनके शासन काल में इस देश का नैतिक पतन कहीं से कहीं पहुचं गया। अब हमें स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। हमें चाहिये था कि हम सर्व प्रथम इस मौलिक एवं आधारभूत समस्या की ओर ध्यान देते ! क्या यह देश कभी स्वतंत्र नहीं था? फिर वह स्वतंत्रता की माया से क्यों वंचित हो गया? नैतिक पतन तथा नैतिक निर्बलता के कारण ! किन्तु खेद है कि मार्गों एवं प्रकाश के प्रति जितना ध्यान दिया जाता है, उतना भी ध्यान इस मौलिक विषय की ओर नहीं है।

प्रत्येक सुधारात्मक कार्य का आधार

मैं "श्रमदान" तथा "भूदान" आंदोलनों को अति उदारता की दृष्टि से देखता हूँ, परन्तु मैं इस आस्था को नहीं छिपा सकता कि इससे भी पहले करने का काम नैतिक सुधार तथा उचित अनुभूति एवं चेतना का उत्पन्न करना था। हमें इतिहास से पता चलता है कि प्राचीन युग में भूमि का उचित रूप से बटवारा किया जाता था और अनेक युग तो ऐसे बीते हैं कि वायु एवं जल के समान भूमि को भी एक आवश्यक तत्व एवं मनुष्य का मौलिक अधिकार समझा जाता था। परन्तु तत्पश्चात् मनुष्यों के लोभ एवं लोलुपता ने पीड़ितों को भूमिहीन तथा अनावश्यक व्यक्तियों को स्वामी बना दिया। यदि नैतिक अनुभूति और मानवता का सम्मान न उत्पन्न हुआ तो फिर इसी की आशंका है कि वितरित की हुई भूमि पर फिर अधिकार जमा लिया जायेगा अतः और जरूरतमन्दों को अधिकार से वंचित कर दिया जायेगा। जब तक यह चेतना उत्पन्न न हो और अन्तरात्मा जागरूक न हो, उस समय तक इन प्रयासों के परिणामों तथा वचनों पर भरोसा नहीं किया जा सकता आज नैतिक पतन इस सीमा तक पहुँच हुआ है कि घूस ख़ोरी, चोरबाज़ारी, ग़बन तथा विश्वासघात में कमी नहीं, अपितु लोगों का कहना है कि कुछ अधिकता ही है। धनी बनने की आकांक्षा एवं अभिलाष उन्माद (जुनून) की सीमा तक पहुँच गई है। उत्तरदायित्व की अनुभूति का अभाव है। मनोदशा यह कि एक दूसरे की नेकी की आड़ लेकन बदी करना चाहता है जब सब की यह दशा हो जावे तो वह सदाचार फिर कहां से आयेगा जिसकी आड़ में और जिसके आँचल में दुष्टता छिप सके। मेरे एक मिस्री मित्र ने अपने एक व्याख्यान में इसका एक बड़ा अच्छा उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि एक राजा ने एक रात्रि में यह घोषणा की कि एक हौज़ दूध का भरा हुआ चाहिये प्रत्येक व्यक्ति एक घड़ा दूध इसमें डाल दे और प्रातः अपने दाम ले ले। अन्धेरी रात्रि थी, प्रत्येक व्यक्ति ने यह विचार किया कि मैंने यदि एक घड़ा जल इसमें डाल दिया तो इतने बड़े हौज़ में क्या पता चलेगा सब लोग तो दूध डालेंगे ही। परन्तु संयोगवश हर एक ने यही सोचा और दूसरे के सदाचार एवं **सत्यनिष्ठा** के विश्वास पर विश्वासघात करना चाहा परिणाम स्वरूप प्रातः जब राजा ने देखा तो पूरा हौज़ पानी से भरा था, दूध का चिन्ह मात्र न था। जब किसी बस्ती की यह दशा हो जाय तो फिर उसकी कोई सुरक्षा नहीं कर सकता।

वास्तविक आशंका

याद रखिये इस देश के लिये कोई बाहरी आशंका अथवा भय नहीं है। इस

श के लिये भयंकर आशंका यह नैतिक तन, यह अपराधी मनोवृत्ति, यह धन म्पत्ति की होड़ तथा अपने स्वार्थ हेतु पने भाई का गला काटने की प्रवृत्ति है। या यूनान तथा रोम (अपने समय के न्नतिशील देश) को किसी बाहरी शत्रु ने बाह किया—नहीं, वरन् उन्हें नैतिक रोग नका घुन उनको लग गया था। फिर स समय एक देश का नैतिक पतन मस्त संसार के लिये ख़तरा है। संसार ब ही सुख एवं शांति का जीवन व्यतीत र सकता है, जब संसार का प्रत्येक देश खी और उसकी शासन व्यवस्था मज़बूत ।

ग़म्बरों का कारनामा (ईश दूतों ो कृति)

पैग़म्बरों का यही कारनामा है कि न्होंने चरित्रवान एवं सदाचारी व्यक्ति यार किये। ईश्वर के भक्त तथा उससे रने वाले, मानव से प्रेम करने वाले, सरे के दुःख को समेटने वाले, अपने ाये में न्याय करने वाले, सत्य बोलने था सत्य का साथ देने वाले, उत्पीड़ितों ो सहयोग देने वाले। संसार के किसी क्ति, किसी संस्था अथवा किसी शिक्षणालय ने ऐसे चरित्रवान व्यक्ति यार नहीं किये। विश्व को अपने आविष्कारों र अभिमान है, वैज्ञानिकों को अपनी वाओं पर गर्व है, परन्तु पैग़म्बरों से बढ़ र किसने मानवता की सेवा की, उनसे धिक बहुमूल्य वस्तु किसने संसार को दान की। उन व्यक्तियों ने संसार को लज़ार बना दिया, उन्हीं के कारण संसार ो प्रत्येक वस्तु उपयोगी बन गई और र सम्पत्ति ठिकाने लगी। आज भी संसार जो सदाचारी प्रवृत्ति, जो सत्य एवं ाय और मानवता के प्रति प्रेम पाया ाता है, वह उन्हीं पैग़म्बरों के प्रयासों, यत्नों तथा प्रचार का परिणाम है। यह आधुनिक संसार भी केवल आविष्कारों तथा सांस्कृतिक प्रगति के बल पर नहीं चल रहा है, यह केवल उस सच्चाई, सत्य–निष्ठा, न्याय एवं प्रेम पर आधारित है जो पैग़म्बर उत्पन्न कर गए।

पैग़म्बरों की कार्य विधि

पैग़म्बरों ने चरित्रवान् तथा सदाचारी व्यक्ति किस प्रकार पैदा किये, यह कुछ कम आश्चर्यजनक नहीं है। उन्होंने उनके अन्दर एक नवीन विश्वास की ज्योति जागृत की जिससे समस्त संसार उस समय वंचित था, जिसके अभाव ने समस्त सांसारिक व्यवस्था को अस्त–व्यस्त कर रखा था और मानव इसको खो कर दानव, एक हिंसक तथा लोभी पशु बन गया था अर्थात् ईश्वर के अस्तित्व का विश्वास और मृत्यु पश्चात् जीवन तथा उत्तरदायित्व का विश्वास और इस बात का विश्वास कि यह सत्य पुरुष परमेश्वर का संदेश लाने वाले और मानव जाति का यथार्थ मार्ग दर्शन करने वाले हैं। इस विश्वास ने मनुष्य की काया पलट की और उसको एक बेलगाम पशु से एक उत्तरदायी इन्सान बना दिया।

इतिहास का अनुभव

सैकड़ों वर्ष का अनुभव बताता है कि मनुष्य निर्माण हेतु कोई बड़ी शक्ति नहीं। आज संसार का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि विभिन्न प्रकार के दल हैं, जातियाँ हैं, संगठन तथा संस्थायें विद्यमान हैं परन्तु सदाचारी व्यक्ति दुर्लभ है और विश्व के बाज़ार में ऐसे ही व्यक्ति का अभाव है, मानो व्यक्ति नाम की वस्तु का अकाल है। आशंकापूर्ण बात यह है कि उनकी तैयारी की ज़रा भी चिन्ता नहीं है और सच पूछिये तो यदि निर्माण हेतु प्रयास भी किया जाता है तो उसके लिये उचित मार्ग नहीं अपनाया जाता। इसका एक मात्र रास्ता है और वह यह है कि यह विश्वास फिर उत्पन्न किया जाए और सबसे पहले इन्सान को इन्सान बनाया जाए। इसके बिना अपराध बन्द नहीं हो सकते, दोष दूर नहीं हो सकते। आप एक चोर दरवाजा बन्द करेंगे, दस चोर दरवाजें खुल जायेंगे। खेद है कि जिनको इस मौलिक कार्य करने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है और जिनके ध्यान देने से प्रभाव पड़ सकता है उनको अन्य समस्याओं से फुर्सत नहीं। यदि वह इस विषय की ओर आकृष्ट होते तो इससे समस्त जीवन पर प्रभाव पड़ता और सैकड़ों समस्यायें इससे हल हो जातीं, जिस पर प्रथक रूप से प्रयत्न किये जा रहे हैं और सन्तोषजनक निष्कर्ष नहीं निकलता।

हमारे प्रयास एवं परिश्रम का प्रेरक

हमने जब देखा कि इतने लम्बे चौड़े देश में कोई आवाज़ उठाने वाला नहीं और कोई इसको अपने जीवन को उद्देश्य और अभिमान का रूप प्रदान करने वाला नहीं तो हम और हमारे कुछ साथी इस आवाहन हेतु अपने घर से निकले, हम आपके नगर में आये, आपने हमें मान्यता प्रदान की और रुचि एवं शांति पूर्वक हमारी बात सुनी, इसके लिये हम आपके आभारी हैं और इससे हमें प्रोत्साहन मिलता है, हम इसी आशा पर निकले हैं कि मनुष्यों की इस विस्तृत नगरी में अवश्य कुछ उत्साहयुक्त व्यक्ति पाये जाते हैं। संसार का प्रत्येक कार्य इन्हीं व्यक्तियों के अस्तित्व एवं विश्वास और उन्हीं के साहसपूर्ण एवं उत्साह की आस्था पर किया गया है। हम इस बात की भी आशा करते हैं कि वह अपने को ऐसा व्यक्ति बनाने का प्रयास करेंगे जिसकी आज दुनियां को आवश्यकता है और जिसके बिना इस ज़िन्दगी की चूल बैठ नहीं सकती।

अनुवाद — अतहर हुसैन

●●●

तक्लीफ़ देने वाला मिज़ाह़

● टर्र, टर्र, टर्र – हलो ! सेविन, एट, सेविन, थ्री, वन, ज़ीरो? यस हूम डू यू वान्ट? – मैं सच्चा राही के सम्पादक से बात करना चाहता हूँ, – कहिये मैं बोल रहा हूँ – बधाई हो महोदय बधाई! मैं राज्यपाल जी का पी.ए. हूँ, – आपको भी बधाई हो, क्या हमारी पत्रिका आप तक पहुँच गई ? – हाँ साहिब आप की सुन्दर पत्रिका पहुँची आप बड़े भाग्यवान हैं मैं आप को बधाई देता हूँ, – यह आप का बड़प्पन है कि छोटों को सम्मानित करते हैं, नहीं तो एक से एक मासिक पत्र तथा पत्रिकाएँ आप देखते हैं उनके आगे इस की क्या गिन्ती ? – लगता है आप अभी समझे नहीं, अरे आप की पत्रिका राज्यपाल जी ने देखी और मुझे बुलाकर आदेश दिया कि "सच्चा राही" के सम्पादक को फोन करके बधाई दो और बता दो कि मेरी ओर से इस पत्रिका को दो लाख रुपया भेंट, यदि आप तुरन्त आ जाएँ तो तुरन्त चेक मिल जाएगा – आप का बहुत–बहुत धन्यवाद, मेरी ओर से राज्यपाल जी को लखनवी आदाब पहुँचाइये और कहिये जैसे ही मैं एम्बेसीडर लाऊँगा आपको और गवर्नर जी को सलामी देने उपस्थित हूँगा, थैंक्यू ! हा, हा, हा, हा, ठट्ठे की आवाज़ आई।

उधर की बात इतने ज़ोर से कही जा रही थी कि मेरे पास बैठे मेरे दोस्त को सुनाई दे रही थी, मेरे जवाब से वह भाँप गये और कहा – क्या कोई व्यंग्य (तंज़) कर रहा था ? नहीं भाई आज फर्स्ट अप्रैल है ना ! मेरे उत्तर पर वह खूब हंसे।

● एक विद्यार्थी दौड़ा–दौड़ा अपने गुरू जी के पास आया और कहने लगा – वह तो मैंने देख लिया वर्ना आप के सौ रुपयें गये थे, गुरू जी ने पूछा कैसे सौ रुपये ? कहने लगा जब आपने क्लास से निकलते समय जेब से रुमाल निकाला तो सौ का नोट नीचे आ रहा, मैंने देखा कि केवल बब्लू की निगाह उस पर पड़ी मगर मैं दूर था बब्लू ने नोट उठा लिया, जब तक मैं वहाँ पहुँचूँ आप टीचर्स रूम में आ गये, मैं बब्लू के पास गया और आप का नोट माँगा, वह कहने लगा दस रुपये ले लो और गुरू जी को न बताओं गुरू जी की जेब तो नोटों से भरी ही रहती है, गुरू जी ने विद्यार्थी को सच्चा जाना और बब्लू को बुलवा भेजा, वह विद्यार्थी तो चम्पत हो चुका था, गुरू जी ने बब्लू से डाट कर कहा सौ का नोट निकाल ! बब्लू बोला कैसा नोट गुरू जी ? गुरू जी ने छड़ी उठा ली, सड़ाक पड़ाक जमाते भी जाते और सौ का नोट माँगते भी जाते बब्लू बेचारा रोता भी जाता और कहता भी जाता कैसा नोट, मेरी फ़ीस बाकी नहीं है, आख़िर में गुरू जी ने बब्लू की तलाशी ली तो जेब से केवल अठन्नी निकली, पूछा नोट कहाँ है ? जवाब मिला कैसा नोट उस समय तक भीड़ जमा हो चुकी थी किसी ने दूर से आवाज़ निकाली, ऐप्रिल फूल ! सबने ठट्ठा लगाया, गुरू जी ने सिर झुका लिया और रोवन्धे हो गये।

● एक नौजवान 3 बजे मौलाना ग़ज़नफ़र अली साहिब के पास पहुँचा, अदब से सलाम किया और अर्ज़ किया, हुजूर हम नव जवानों ने एक उमूमी जल्से का इन्तिज़ाम किया है, हमारे अधिकतर नवजवान जुआ शराब में फंस रहे हैं आप थोड़ी देर हम लोगों को अच्छे अख़्लाक की बातें बता कर हम को बुराइयों से बच लीजिये, देखिये बयान से पहले आपको खाना भी खाना है, कोई परहेज़ हो तो बता दीजिये, मौलाना बोले मैं कहीं जाता तो नहीं हूँ लेकिन अगर मुझ से तुम लोगों को फ़ाइदा पहुँच जाय तो अच्छी ही बात है, परहेज कुछ नहीं बस मैं मिर्चे कम खाता हूँ और भाई बड़ा गोश्त नहीं खाता, नवजवान बोला अरे मौलाना आज दिहात से बटेरें आ गई थीं बटेरों की बिरयानी है, मौलाना के मुहँ में पानी आ गया बोले जगह कहाँ है ? नवजवान बोला अरे वही लाल बाग पार्क के पूरब वाली सड़क पर मौलाना बयान 9 बजे से शुरू होगा खाना 8 बजे खाना है, मैं ठीक 7:30 बजे गाड़ी लेकर हाज़िर हूँगा। अच्छा मौलाना अब इजाज़त दीजिये अस्सलामुअलैकुम – व अ़लैकुमुस्सलाम, मौलाना ने कहा और कहा सुनो हमारा लड्डन भी साथ आयेगा। जवाब मिला, अरे मौलाना साहिब क्या बात करते हैं, गाड़ी में पाँच की गुजांइश होगी आप बेतकल्लुफ पाँच चल सकते हैं, नवजवान रवाना हो गया मौलाना ने बेगम से फरमाया खाना मत पकाओ हम दो तो खा ही आयेंगे रही तुम और शाइस्ता तो नाश्तेदान दे देना वहाँ से खाना लेते आऊगाँ, मौलाना ने दो शागिर्दों को भी तैयार किया, मौलाना ने अ़स्र पढ़ी, मग़रिब पढ़ी 7 बजा, साढ़े सात बजा इशा भी पढ़ ली पौने आठ बजा, गाड़ी का कहीं नाम नही, मौलाना ने यह सोच कर कि हो सकता गाड़ी ख़राब हो गई हो रिक्शा

मगांया एक शागिर्द, लड्डन और खुद रिक्शे पर लदे नाशतेदान साथ लिया, खाना जो नहीं पका था, लाल बाग पहुँचे पूरब वाली सड़क देखी सब तरफ़ सन्नाटा था लोगों को बात बताई एक साहिब बोले कमबख्त बदतमीज था अप्रैल फूल मनाने के लिए मौलाना ही मिले थे।

हास्य, उपहास तथा विनोद मनुष्य की प्राकृतिक माँग है परन्तु उसका उद्देश्य आनन्द प्राप्त करना और आनन्द देना है न कि कष्ट पहुँचाना, वह तो मैं समझ गया नहीं तो राजभवन जा धमकता और पुरस्कार की माँग करके कैसी मुहँ की खाता, बेचारा बब्लू कैसा पिटा और गुरू जी अपनी मूर्खता पर कैसे झेंपे। फिर उस विद्यार्थी के विरुद्ध क्या बातें उनके मन में आई होंगी, बेचारे मौलाना ग़ज़नफ़र अली साहिब और घरवालों ने जो कष्ट उठाया उस से मूर्ख बनाने वाले को कौन सा विनोद प्राप्त हुआ, यह पश्चिमी सभ्यता की रिजेक्टेड प्रथा का अन्धा अनुसरण है जिसका त्याग अति आवश्यक है, अप्रैल का महीना बसन्त ऋतु के समान है इस मौसम में जरा जौलानी पैदा होती हैं, तो खुशी मनाने और खुश हो लेने की बहुत सी विधियाँ हैं, होली में होने वाली असभ्य बातें हों या पहली अप्रैल को लोगों को मूर्ख बनाने की रस्म हो इन की किसी भी धर्म में गुजाँइश नहीं, पढ़े लिखे हिन्दू और समझदार ईसाई दोनों इन कष्टदायक विनोद के विरोधी है।

इस्लाम धर्म ऐसे विनोद की जिस में किसी को कष्ट पहुँचे और ऐसा उपहास जिसमें मनुष्य अपने पालनहार को भूल जाय या उस में झूठ सम्मिलित हो, विरोध करता है, इस्लाम का विनोद सीमित है, एक बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी से प्रसन्न हो कर कहा मैं तुम को एक ऊँट का बच्चा दूँगा, परन्तु दिया पूरा ऊँट तो सहाबी के अर्ज़ करने पर फरमाया भाई यह भी तो ऊँट का बच्चा है।

एक बार फरमाया कोई बूढ़ी औरत जन्नत में न जाएगी एक बुढ़िया दुखी हुई आपने फरमाया जन्नत में बूढ़ों को जवान करके दाखिल किया जायेगा, यह सुनकर बुढ़िया हंसने लगी, दौड़ का मुकाबला, हबशियों के वर्ज़िशी करतब आदि अल्लाह के रसूल ने देखे हैं।

अतः हम को चाहिये कि हम हास्य उपहास का आनन्द तो लें परन्तु न किसी को धोखा दें, न कष्ट पहुँचायें, न खुलाझूट बोलें, न हास्य उपहास में खुदा को भूल जाएं, साथ ही पश्चिम के अन्धे अनुकरण से दूर रहें।

नोट : अप्रैल फूल की यह घटनायें सत्य हैं परन्तु पिछले साल की हैं और फर्जी नामों से हैं, सम्पादक भी किसी और पत्रिका का था।

□□□

मोटापा : कारण एवं निवारण

– वैद्य के०एस० अरोरा

मोटापे का अर्थ है 'मेद वृद्धि' या 'देह का मोटा होना और मेद वृद्धि से अभिप्राय ऐसी वृद्धि से है जो देह को मोटा तो करती है किन्तु देह का पोषण नहीं करती इसमें हम जो भी खाते हैं उसमें रस न बनकर केवल मेद की बनती जाती है।

मोटापे के दुष्परिणाम : मोटापा बढ़ने से देह में आलस्य बढ़ जाता है। कुछ भी कार्य करने की इच्छा नहीं होती, थोड़ा सा चलने से ही आदमी हाँफने लगता है। पुरुषों में इस रोग के बहुत दुष्परिणाम होते हैं। सम्भोग शक्ति धीरे–धीरे क्षीण होती जाती है और शुक्र का प्रमाण भी कम हो जाता है। फलस्वरूप धीरे–धीरे आदमी नपुंसक हो जाता है। शक्ति क्षीण हो जाती है। स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा यह रोग ज्यादा होता है। Delivery के बाद अक्सर स्त्रियाँ मोटी हो जाती हैं। इसमें भी अगर समय पर चिकित्सा नहीं की जाती है तो मासिक धर्म अनियमित हो जाता है। प्रदर आदि रोग भी सताते हैं और आगे चलकर बन्धयत्व हो जाता है। गर्भाशय के आगे चर्बी की परत सी बन जाती है। हमेशा आदमी को इस रोग से बचना चाहिए। अगर इस पर काबू न पाया जाए तो हृदय रोग, ब्लड प्रेशर और मधुमेह आदि रोग भी हो जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि मोटापा इन रोगों का द्वार है।

कारण

हमेशा आसन या गद्दी पर बैठे रहना, तली हुई, मेदे से बनी हुई, चर्बी युक्त पदार्थ का अत्यधिक सेवन। दिन में बार–बार खाने की इच्छा होना, भूख न होने पर कुछ न कुछ खाते रहना इन कारणों से मोटापा जल्दी बढ़ता है।

चिकित्सा

सर्वप्रथम रोगी को सप्ताह में दो बार लंघन करना चाहिए अर्थात पूरा दिन गर्म जल पर ही रहना चाहिए (यदि सोमवार तथा बृहस्पतिवार को रोज़ा (व्रत) रख लिया करें तो दोहरा लाभ हो)।

नमक, शक्कर का प्रयोग बहुत ही कम करना चाहिए। गर्म गुनगुने जल से स्नान करना चाहिए। तिल के तेल की मालिश करनी चाहिए।

□□□

इस्लामी व्यवस्था में ही मोक्ष है

यह एक रौशन सच्चाई है कि इस्लाम धर्म मानव स्वभाव के अनुकूल है क्योंकि परम परमेश्वर ने इस के अन्दर इन्सानी मिज़ाज़ से मेल खाती व सहज और स्वाभाविक विशेषता रख दी है। यदि यह बात न होती तो यह बहुत पहले ही विघटन शक्तियों के सामने हार मान कर जीवन के मैदान से भाग खड़ा हुआ होता क्योंकि इस्लाम के दुश्मनों ने इसमें रद्दोबदल कर इसके प्रकाशवान चेहरे पर बदनुमा दाग़ लगाने में कोई कसर उठा नहीं रखी। असत्य विश्वासों के मानने वाले गिरोहों, सत्य के मार्ग से भटके हुए आन्दोलनों और सच्चे मार्ग से हटे हुए धर्मों की ओर से इसे जिन कठिन घाटियों और वादियों से गुज़रना पड़ा और जिन विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा वह इतिहास से छुपा हुआ नहीं है। लेकिन इन तमाम रुकावटों के बावजूद अभी भी वह अपनी पूरी चमक दमक के साथ बाक़ी है और क़यामत (महाप्रलय) तक बाक़ी रहेगा क्यों कि पृथ्वी और आकाश के मालिक ने इसकी सुरक्षा, और इसको सही शक्ल में बाक़ी रखने का फ़ैसला फ़र्मा दिया है। इस की ताक़त और शक्ति उस सर चश्मे (स्रोत) से निकली है जिसके बारे में अल्लाह तआ़ला का इरशाद है (अनुवाद) ***"झूठ का दख़ल नहीं, आगे से न पीछे से, उतारी हुई है हिकमतों वाले सब तारीफ़ वाले की"*** (कुर्आन मजीद)। दूसरी जगह कहा गया है (अनुवाद) ***"हम ने आप पर उतारी है यह नसीहत, और हम इसके निगहबान हैं।"*** (कुर्आन)

प्रारम्भ ही से अल्लाह तआ़ला की यह सुन्नत (विधान) रहती है कि वह हर काल और हर क़ौम में कुछ ऐसे लोगों को पैदा कर देता है कि जो इस्लाम की दावत की ज़िम्मेदारियों को अपने कन्धों पर डाल लेते हैं और अपनी व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन के हर मोड़ पर इसका अमली नमूना पेश करते हैं, उपासना व लेन देन, आचरण व व्यवहार से इस्लाम का नमूना पेश करते हैं। इन्हीं भाग्यशाली बन्दों के बारे में कुर्आन मजीद का कथन है (अनुवाद) ***"चाहिये कि तुम में एक ऐसी जमाअत (गिरोह) हो जो नेक काम की तरफ़ बुलाए और अच्छे कामों का हुक्म करती रहे और बुराई से मना करे, और वही अपनी मुराद को पहुंचाने वाली है।"***

इस संसार में कुछ ऐसे गिरोह भी हैं जो इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ़ अपने सीनों में विरोध और दुश्मनी छुपाए हुए हैं और इस्लाम की सहज और स्वाभाविक राह में रुकावट पैदा कर रहे हैं और इस्लाम की दावत देने वालों की राह में भिन्न–भिन्न प्रकार की शरारतें और षडयंत्र रच रहे हैं परन्तु अल्लाहतआ़ला अपने बन्दों के लिए सत्य व सच्चाई और सदमार्ग के तौर तरीक़ें स्पष्ट कर रहा है और उनके लिए ज्ञान और कर्म, जीवन के नियम व सिद्धांत परलोक के वरदान प्राप्त करने का मार्गदर्शन कर रहा है इसलिए खुदा के सेवक इस्लामी रुह से परिपूर्ण होकर सत्य का प्रचार कर रहे हैं और अच्छाई का हुक़्म देने तथा बुराई से रोकने का कर्तव्य पूरा कर रहे हैं क्योंकि यही वह अचूक नुसख़ा है जिसके द्वा समाज व सोसाइटी के अन्दर सच्च वफ़ादारी और प्रेम व हमदर्दी की बहा आसकती है और ईर्ष्या नफ़रत और दुश्म की आँधियाँ बन्द हो सकती हैं और शरार लोगों की जड़े उखड़ सकती हैं और ए सत्यवादी समाज व सभ्यता की दाग़बे (बुनियाद) पड़ सकती है।

आजकल इस्लाम स्वीकार करने समाचार अचम्भे में डालने वाले रूप सुनाई दे रहे हैं, क्योंकि पूरी दुनिया अप बनाए हुए नियमों और अनुचित जीव शैली से बिल्कुल ऊब चुकी है और दी फ़ितरत (मानव स्वभाव के अनुकूल धर्म को अपना लक्ष्य मानने लगी है, और इस तनिक शक नहीं कि इस्लाम एक ऐस संतुलित व्यवस्था है जो मानवता के लि खुशहाल ज़िन्दगी, दिमाग़ी शांति व आरा और हर प्रकार के दुःख दर्द से छुटका पाने की ज़मानत लेती है। इसके फलदा पेड़ ने अपनी छाया को पूरे मानव समा पर फैला दिया है अतएवं बहुत सी इस्लाम जमाअ़तें और आंदोलन अमन और शां के फैलाने, जीवन पर लोगों का विश्वा बहाल करने और भटके हुए इंसानों क संबंध ईमान की किरनों से जोड़ने प्रयासरत हैं। यदि हम इन प्रवचनों औ कोशिशों की समीक्षा करें तो यह बा स्पष्ट हो जाएगी कि इस्लाम की तर लोगों का आकर्षण दिन ब दिन बढ़ता ज रहा है।

मुसलमान जिन दावती और अध्यय की सरगर्मियों में लगे हुए हैं उन क समाप्त करने के लिए इस्लाम के दुश्म

नी दौड़ धूप में लगे हुए हैं और वह लामी इन्क़लाब से लोगों का ध्यान री ओर मोड़ने की कोशिश कर रहे । लेकिन इसके बावजूद इंसानों के ाम समुदायों में इस्लाम के प्रचार का र्चा हो चुका है और इस सहज और ाभाविक धर्म की और उन कौमों की ज़रें भी उठने लगी हैं जो इंसानी सभ्यता र सज्जनता के कल्चर से वंचित हैं र वह अपने जीवन की समस्याओं में लझ कर अपने दुर्भाग्य और बेचैनी एवं शानी का मज़ा चख रही हैं और मौत बदतरीन फन्दा उनके हलक़ में फंसा ा हैं। उन्हें उस जीवन व्यवस्था की ाज है जो इस बदतरीन सभ्यता के नर्क निकाल कर उन्हें इस्लामी सभ्यता व वस्था की जन्नत में दाख़िल कर दे।

इंसानियत के दुश्मन आज जिस र्दयता और बेदर्दी से नष्टकारी साधनों ा प्रयोग कर के बेगुनाह व निर्दोष लोगों ी हत्या कर रहे हैं वह इस बात का क्का प्रमाण है कि जब वह अपनी जनाओं और अपने लक्ष्य की प्राप्ति में ाकाम हो गए तो उन्होंने विनाशकारी धनों और हथियारों का सहारा लिया। ायद उन्हें यह बात मालूम नहीं कि स्लाम की लायी हुई व्यवस्था जो इंसानी भाव के अनुकूल है हरगिज़ हरगिज़ न विनाशकारी हथियारों और विघटन क्तियों के सामने परास्त नहीं हो सकती। वि के कथनानुसार–

बातिल[1] जो सदाक़त[2] से उलझता है तो उलझे।
फूंकों से यह चिराग़ बुझाया न जायेगा।।

1- असत्य, 2- सत्य।

– अनुवाद हबीबुल्लाह आज़मी

●●●

प्रार्थना

अमतुल्लाह तस्नीम

ऐ मेरे रब, दिले मुज़तर की दुआएँ सुन ले।
हाले ज़ारे दिले बेकल, जो सुनाए सुन ले।।

क़ैद हैं जाल में फ़िक्रों के मिसाले ताइर।
बेक़रारी में निकलती हैं सदाएँ सुन ले।।

देख ले देख ले, हाँ देख ले, हालत मेरी।
सुन ले मग़मूम दिलों की भी दुआएँ सुन ले।।

या इलाही तुझे तेरे ही करम का सदक़ा।
कर न मायूस मुझे मेरी दुआएँ सुन ले।।

हैं ख़ज़ाने तेरे मामूर तो फिर देर है क्या।
माँगने वाले कभी खाली न जाएँ सुन ले।।

जो तलब मैंने किया ख़ास इनायत से दिया।
तेरे क़ुर्बान, मेरी यह भी दुआएँ सुल ले।।

यह मुनाजात कही कह के सुनाई सब को।
दाद इस की तेरे दरबार से पाएँ सुन ले।।

आज तसनीम पे हो तेरे करम की बारिश।
आज नाकाम तेरे दर से न जाएँ सुन ले।।

□□□

तेरी ज़ात आला सिफात है, तेरा नाम आबे हयात है।
तेरी याद वजहे नजात है, तेरी शान जल्ल जलालुहू।।

□□□

"सच्चा राही"

पयामे इन्सानियत

पुल

नदी पर बना यह पुल
किनारों को जोड़ता है;
दूरियाँ कम करता है;
अपने पर टनों का भार सहनकर।
आओ हम सब पुल बन जायें,
और दिलों को जोड़ने
तथा दूरियाँ कम करने का
चला दें एक अभियान।

रचनाकार : मो० हसन अंसारी

देवनागरी लिपी और अ़रबी भाषा

– डा० हाफ़िज़ हारून रशीद सिद्दीक़

यह बात हमारी जानकारी में है कि कुछ प्रकाशकों ने उर्दू की कुछ महत्वपूर्ण साहित्यिक पुस्तकों को देवनागरी लिपि में छापकर सरकारी कोष से लाखों की सहायता ली है, हम उर्दू के लिये उसकी अपनी विशेष लिपि छोड़कर देवनागरी लिपि अपना लेने के महा विरोधी हैं, परन्तु आवश्यकता पर अरबी शब्दों को देवनागरी लिपि में लिखते समय उनके शुद्ध उच्चारण के लिये विशेष चिन्हों के प्रयोग को अनिवार्य जानते हैं।

कहते हैं "ज़रूरत ईजाद की माँ हैं, (आवश्यकता आविष्कार की जननी है) हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है उसकी लिपी देवनागरी है, हमारे बच्चे स्कूलों में शिक्षा पाते हैं, वहाँ उर्दू नहीं पढ़ाई जाती, जो बच्चे उर्दू मीडियम से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करते हैं, या जो दीनी मदरसों से आगे बढ़ते हैं उन की संख्या बहुत ही कम है, हमारे अधिकांश बच्चे, बच्चियाँ, युवक तथा युवतियाँ केवल देव नागरी लिपी जानती हैं, इस दशा को देखते हुए धर्म उपदेशकों ने हिन्दी में लिखना आरम्भ कर दिया और अब अनगिनत इस्लामिक पुस्तक, पुस्तकाएं, मासिक पत्र तथा पत्रिकाएं समाज में आ गई और यह तो होना ही चाहिए था।

परंतु यह बात स्पष्ट है कि इस्लाम धर्म का आधार कुर्आन और हदीस पर है जो अ़रबी भाषा में हैं, अतः इस्लाम से संबंधित कोई भी लेख अरबी शब्दों के बिना पूरा नही हो सकता और अरबी भाषा के कुछ अक्षरों के उच्चारण के लिये देव नागरी (हिन्दी) में अक्षर नहीं हैं, ऐसा कुछ हिन्दी ही में नहीं हर भाषा में है।

इस समस्या के समाधान में बहुत से लोगों ने कोशिशें कीं लेकिन सबसे पहले जो इस कार्य में पूर्णतया सफल हुआ वह हैं आँजहानी पंडित नन्द कुमार अवस्थी लखनवी, जिन्हों ने पूरा कुर्आन करीम हिन्दी लिपी में लिख कर छापा, और उलमा के आदेशानुसार हर पृष्ठ पर अ़रबी मूल भी दिया, अ़रबी के विशेष अक्षरों के लिये जो चिन्ह नियत किये हैं वह बहुत ही उचित हैं अतः हम तो एक अभियान चला रहे हैं कि हिन्दी में इस्लामियात पर लिखने वाले उन नियमों को अपनाएं ओर उनके आविष्कृत अक्षरों को प्रयोग में लाए।

अ़रबी शब्दों के लिखने में विशेषकर कुर्आन मजीद की आयात लिखने में उन नियमों को अपनायें, स्पष्ट रहे कि अ़रबी भाषा में ग़लत उच्चारण से अर्थ कुछ का कुछ हो जाता है, अतः इस्लामी शरीअ़त का यह आदेश है कि किसी भी दशा में ग़लत उच्चारण से कुर्आन न पढ़ा जाय, ग़लत उच्चारर्ण से कुर्आन पढ़ने को महा पाप बताया गया है, इसी प्रकार उस की लिपी के भी कठोर आदेश हैं, मुसहफे उस्मानी की लिपी के अतिरिक्त किसी और अ़रबी स्पेलिंग में कुर्आन लिखना अवैध है, पाप है, अलबत्ता जो लोग अ़रबी भाषा नहीं जानते उनको किसी और लिपी में कुर्आन की आवाज़ सिखाने को नहीं रोका गया जबकि उस लिपी से अ़रबी अक्षरों का शुद्ध उच्चारण सम्भव हो।

देव नागरी लिपी में बिन्दियों की सहायता से विशेष अक्षरों के लिये कुछ अक्षर बना तो लिये गये परन्तु जिस प्रकार सीधी अ़रबी लिपी से पढ़ने में अक्षरों के उच्चारण सीखने पड़ते है उस प्रकार किसी अ़रबी जानने वाले गुरू से सीखे बिना केवल लिपी द्वारा अ़रबी के विशेष अक्षरों का शुद्ध उच्चारण असम्भ है अतः हमारे इन नियमों और अविषकृ अक्षरों के ज्ञान के साथ–साथ इन पढ़ने और शुद्ध उच्चारण के लिये किस गुरू से सहायता लेना अति आवश्यक है विशेष अक्षरों के आविष्कार की जानका से पूर्व कुछ और महत्वपूर्ण बातों क जानना आवश्यक है।

मुतहर्रिक (गतिशील) तथा साकि (गतिहीन) अक्षरों का ज्ञान

ध्यान दीजिए ! "जल" में "ज" मुतहर्रि (गतिशील) है जबकि "ल" साकि (गतिहीन) है, फिर ध्यान दीजिये "ज" क गतिशीलता (हरकत) बिना किसी स्व की मात्रा की सहायता के है, ऐस गतिशीलता को उर्दू, फारसी और अ़रब में ज़बर की हरकत कहते हैं, यदि इस पश्चात् इससे मिला हुआ कोई साकि अक्षर है तो यह स्वभाविक तथा सरलत से निकलता है जैसे– जल, कल, अ आदि परन्तु शब्द के अन्त में बिना किस स्वर की सहायता के इसको गतिशी (मुतहर्रिक) पढ़ने का नियम हिन्दी में नह पाया जाता जबकि अ़रबी शब्दों में इसव अति आवश्यकता है अतः नियम बनाय गया कि हिन्दी लिपी में अ़रबी शब्द

—लिखा जाय ओर अन्त में अक्षर पर यदि हलन्त का चिन्ह न हो ना ही उसके साथ किसी स्वर की मात्रा हो तो उसे गतिशील (मुतहर्रिक) पढ़ें गतिहीन (साकिन) न पढ़ें जैसे इन्न/हम्द/लक आदि इन शब्दों में न, द, क की आवाज़ वैसे निकालें जैसे न, द, क को अलग—अलग पढ़ते हैं इसे सीखना, सिखाना और खुद हिन्दी जानने वाले को इसके पढ़ने में सावधान रहना पड़ेगा, इन शब्दों को गतिशील करने के लिए कुछ लोग "आ" की मात्रा लगा देते हैं जैसे इन्ना, हम्दा, लका लिख देते हैं जिससे लोग न को ना द को दा ल को ला पढ़ते हैं याद रखिये कुरआन के शब्दों को इस प्रकार पढ़ना पाप नहीं महा पाप है अतः जिस अक्षर को साकिन (गतिहीन) पढ़ना हो वह यदि शब्द के बीच में है और सम्भव है तो उसको आधा लिखें, आधा लिखना सम्भव न हो तो उस के नीचे हलन्त चिन्ह लगायें, इसी प्रकार शब्द के अन्तिम अक्षर को साकिन (गतिहीन) पढ़ना हो तो उसके नीचे भी हलन्त चिन्ह अवश्य लगायें और अन्तिम अक्षर को गतिशील पढ़ने के लिए उसे हलन्त हीन रखें और उसके शुद्ध पढ़ने का प्रचार एक अभियान के प्रकार करें कि यह कुरआन के शुद्ध पढ़ने का प्रचार है।

"ए" की मात्रा अर्थात् मझहूलज़ेर अ़रबी भाषा में विशेषकर कुरआन मजीद में "ए" की मात्रा की आवश्यकता नहीं पड़ती अतः अरबी में इस के लिए कोई चिन्ह नियत नहीं केवल एक स्थान पर "मजरीहा" लिखकर सिखाया जाता है कि इस "मजरीहा" को "मजरेहा" पढो, जहां अ़रबी में "ए" की मात्रा की आवश्यकता नहीं वहीं दीर्घ कालीन "ए" की मात्रा की लघु कालीन ध्वनि के लिए हिन्दी में कोई चिन्ह नहीं, परन्तु उर्दू तथा फारसी में यह अति आवश्यक है, कुरआन मजीद में इसके स्थान पर "इ" की मात्रा लाते हैं और इसे मअ़रूफ़ ज़ेर कहते हैं जबकि "ए" की मात्रा की लघुकालीन ध्वनि को मझहूल ज़ेर कहते हैं, मझहूल ज़ेर के लिए परलोक वासी पंडित नन्द कुमार अवस्थी जी ने यह चिन्ह नियत किया था (ㄴ) और कहा करते थे कि दीवाने ग़ालिब लिखकर ग़ालिब को दीवाना न बताओ **दीवान ग़ालिब** लिखा करो, यह बात तो मझहूल ज़ेर की हुई जिसे उपेक्षित करना किसी प्रकार उचित नहीं हो सकता, यहां एक और आवश्यक बात को और आप का ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूँ वह यह कि फ़ारसी से प्रभावित होकर या किसी अ़रब क़बीले की बोली के अन्तर्गत अ़रबी शब्दों में भी मझहूल ज़ेर बोलते हैं, अतः उसके शुद्ध उच्चारण हेतु लघु कालीन "ए" की मात्रा (ㄴ) का प्रयोग अति आवश्यक है।

जैसे **राबेअ़, राफ़ेअ़, नाफ़ेअ़, वासेअ़, लिखें** और छापें इसमें कठिनाई हो तो मअ़रूफ़ ज़ेर से **राबिअ़, राफ़िअ़,नाफ़िअ़, वासिअ़, लिखें परन्तु इन शब्दों को राबे, राफ़े, नाफ़े, वासे लिखना उचित नहीं** और عبد النافع को अ़ब्दुन्नाफ़े, عبدالرافع को अ़ब्दुर्राफ़े **लिखना और पढ़ना तो पाप है। चुप अक्षर** : अरबी और अंग्रज़ी शब्दों में कुछ अक्षर चुप(*Silent*)होते हैं, अ़रबी अंग्रेज़ी में उनका लिखना अनिवार्य है जैसे "Half" में L عبدالنور में ال परन्तु जब हिन्दी में इन शब्दों को लिखेंगे तो हाफ़ और अ़ब्दुन्नर लिखेंगे हाल्फ़ और अ़ब्दुलनूर लिखना अनुचित होगा। इसी नियम के अंतर्गत जिन अरबी नामों का दूसरा भाग अल्ला है उनमें (Silent) अक्षरों का लिखना अशुद्ध है, जैसे عبدالله अ़ब्दुल्लाह, हबीबुल्लाह, रहमतुल्लह लिखना शुद्ध है परन्तु अब्द उल्लाह, हबीब उल्लाह, रहमत उल्लाह लिखना किसी नियम से शुद्ध नहीं हो सकता, इसी प्रकार अ़ब्दुल हलीम, अ़ब्दुल करीम लिखना शुद्ध है परन्तु "अ़ब्द अल हलीम" "अ़ब्द अलकरीम" लिखना अशुद्ध है।

मद्द : अरबी भाषा में विशेषतया कुरआन मजीद में एक ध्वनि **"मद्द"** की है अर्थात् "अतिरिक्त दीर्घकालीन स्वर की मात्रा की ध्वनि" जैसे........ **जा'अ, जी'अ, सू'अ, इसके लिए स्वर की मात्रा के पश्चात् तनिक मोटी "आ" की अर्ध मात्रा का चिन्ह नियत किया गया है,** अतः अ़रबी मद्द के उच्चारण के लिए इस चिन्ह का प्रयोग करें। (⊥)

अब हिन्दी लिपि के उन अक्षरों का अवलोकन कीजिए जो बिन्दियों के सहयोग से अ़रबी के विशेष अक्षरों के लिए नियुक्त किये गये हैं।

ذ	ز	ظ	ض
ज	ज़	ज	ज़
ط	غ	ف	ق
त़	ग़	फ़	क़
عِ	عی	عُ	عُو
अ़ि	अ़ी	अ़ु	अ़ू
عَ	عا	عُو	ۃ متحرکہ
अ़	अ़ो	अ़ौ	त
ث	ص	ح	ۃ موقوفہ
स	स़	ह़	ह्
عَے	مدّ	جزم	زیرِمجہول
अ़ै	⊥	\	ㄴ

अब आप अ़रबी से हिन्दी का उदाहरण मुलाहज़ा फ़रमायें :—
(वल। यग़फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त)

हिन्दी लिपि में कुरआन की आयतें लिखने में इन नियमों का पालन आवश्यक है, इनके अतिरिक्त भी नियम तैयार किये जा सकते हैं लेकिन अगर हर व्यक्ति अलग अलग नियम बनाता रहेगा तो कोई भी नियम व्यापकता न प्राप्त कर सकेगा, फिर भी हम अपने पाठकों के मतों का स्वागत करेंगे।

आपकी समस्याएँ और उनका हल

- मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नद

प्रश्न 1– कुछ लोग नौकरियाँ दिलाने के लिए भी रिश्वत लेते हैं, क्या नौकरी हासिल करने वाला शख्स, जो रिश्वत देकर नौकरी हासिल करता है, उसका कमाया हुआ माल हलाल होगा क्योंकि ऐसा शख्स खुशी से रिश्वत नहीं देता, तो इन हालात में लेने वाला और रिश्वत देने वाला इन दोनो के लिए क्या हुक्म है ?

उत्तर– रिश्वत लेने वाला तो हर हाल में जहन्नम का हक़दार है और रिश्वत देने वाले के बारे में यह कहा गया है कि जुल्म से बचने के लिए रिश्वत दी जाए, तो उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला पकड़ नहीं फरमाएँगें रिश्वत देकर जो नौकरी हासिल की गई हो, उसमें यह हुक्म है कि अगर यह शख्स उस नौकरी का अहल है और जो काम उसके सिपुर्द किया गया है, उसे ठीक–ठीक अन्जाम देता है, तो उसकी तन्ख्वाह हलाल है (अगरचे रिश्वत का वबाल होगा) और अगर वह उस काम का अहल (योग्य) ही नही तो तन्ख्वाह भी हलाल नहीं।

प्रश्न 2– अगर शौहर रिश्वत लेता हो और उसकी औरत इस बात को पसन्द न करती हो परन्तु उसके डर से मना भी नहीं कर सकती, तो क्या उस कमाई के खाने पर औरत को भी अ़ज़ाब होगा ?

उत्तर– शौहर (पति) अगर हराम का रुपया कमा कर लाता है, तो औरत को चाहिए कि प्यार मुहब्बत से शौहर को इस जहर के खाने से बचाये, अगर वह नहीं बचता तो उसको साफ–साफ कह दे कि मैं भूकी रहकर दिन गुजार लूँगी मगर हराम का रुपया मेरे लिए घर न लाया जाए, हलाल चाहे कम हो मेरे लिए काफी है, फिर भी अगर शौहर रिश्वत लेना न छोड़े तो वह अपने खाने पीने और सभी ख़र्चों में यही नियत रखे कि मैं तो अस्ल तन्ख्वाह वाला पैसा खर्च कर रही हूँ, अगर औरत ने इस पर अमल किया, तो वह गुनहगार नहीं होगी, बल्कि रिश्वत और हराम खोरी की सज़ा में सिर्फ मर्द पकड़ा जाएगा और अगर औरत ऐसा नहीं करती बल्कि उसका हराम का लाया हुआ रुपया ख़र्च करती रहती है, तो दोनों इकट्ठे जहन्नम में जाएंगे।

प्रश्न 3– किसी सर्विस मैन को तन्ख़्वाह के अलावा काम के दौरान कोई शख्स खुश होकर कुछ पैसे दे तो क्या वह जाइज है या ना जाइज़? क्योंकि लोग कहते है कि हम उनसे माँगते नहीं हैं और न हम किसी का दिल दुखाते हैं, तो वह रिश्वत नही है। अब आप किताब व सुन्नत की रौशनी में बताएँ कि वह जाइज है या नहीं?

उत्तर– अगर काम कराने का बदला देते हैं, तो रिश्वत है। चाहे माँगे या न माँगे। अगर दोस्ती या अज़ीजदारी में हदया देते है तो ठीक है।

प्रश्न 4– अगर कोई शख्स जिस कम्पनी में काम करता हो, वहाँ से काग़ज पेंसिल, रजिस्टर या कोई ऐसी चीज़ जो आफिस में उसके इस्तेमाल में हो।

(1) घर ले जाए और ज़ाती इस्तेमाल में ले आए तो क्या यह जाइज है ?

(2) या आफिस में ही उसे ज़ाती इस्तेमाल में लाए।

(3) घर में बच्चों के इस्तेमाल में लाए।

(4) आफिस के फोन को ज़ाती कारोबार या निजी काम में इस्तेमाल करे।

(5) कम्पनी की खरीद व फरोख्त व चीज़ों में कमीशन वसूल करे।

(6) आफिस के अखबार को घर जाना आदि।

उत्तर– सवाल नम्बर 5 के अला बाकी तमाम सवालों का एक ही जवाब कि अगर कम्पनी की तरफ से इसव इजाज़त है, तो जाइज़ वरना जाइज नह बल्कि चोरी और खयानत है। सवा नम्बर 5 का जवाब यह है कि ऐसा कमीश वसूल करना रिश्वत है, उसके हराम हो में कोई शक नहीं।

प्रश्न 5– आजकल कैलेन्डर औ डायरिया तकसीम करने का रिवाज अस्ल में तो यह एक इश्तिहार है मग यह चीज़े सिर्फ तअल्लुक वालों को जाती हैं जैसे अगर एक पार्टी किसी ब माली इदारे या गौरमिन्ट डिपार्टमेन्ट व कोई माल देती है तो साल के शुरू में व खरीद के विभाग वालों को डायरी कैलेन्डर तुहफ़े में देते हैं क्या इस तर का तोहफ़ा कुबूल करना उन लोगों व जाइज़ है जो कि किस इदारे के खरीद विभाग मे काम करते हैं, हमें यह डर है कि कही यह रिश्वत तो नही है।

उत्तर– अगर यह डायरियाँ ऐसी कम्प या इदारे की तरफ से छपावाई गई जिनकी आमदनी शरीअत के मुताबि जाइज़ है तो उनका लेना जाइज़ है वर नहीं।

प्रश्न 6– हम एक फैक्ट्री में का करते हैं फैक्ट्री के कानून के मुताबिक स लोगों को नम्बरवार रहने का मकान मिल है लेकिन बहुत से जरूरत मन्द जिसव

म्बर आ जाता है उसे पैसे देकर उसका म्बर खरीद लेते है और मकान एलाट जाता है क्या यह जाइज़ है।

उत्तर– किसी शख्स का नम्बर निकल ना ऐसी चीज़ नहीं कि उसकी खरीद फरोख्त हो सके–इसलिए पैसे देकर म्बर खरीदना जाइज़ नहीं और जिस ख्स ने पैसे लेकर अपना नम्बर दे दिया सके लिए वह पैसे हलाल नहीं, बल्कि नका हुक्म रिश्वत की रकम का होगा।

प्रश्न 7– मैं एक दफ्तर में काम करता हमारे यहाँ अगर कोई शख्स अपनी ाइल देखने आता है कि मेरी फलाँ ाइल है, वह निकाली जाए या मेरी ाइल नम्बर यह है, अगर दिखा दें तो हुत मेहरबानी होगी और यह कि यह ाज़ इसमें से टाइप करके मुझे दे दें, मारे सीनियर क्लर्क इन सब बातों को रा कर देते हैं, वह शख्स सीनियर ाहब को कुछ रकम दे देता है हमारे ीनियर साहब इसमें से हमें भी देते है। छना यह है कि यह रिश्वत तो न हुई ौर अगर हुई भी, तो उसकी जिम्मेदारी मारे सीनियर क्लर्क पर आयेगी या हम र ? अगर इस मसले का हल बता दें, ो बड़ी मेहरबानी होगी ?

उत्तर– फाइल निकालने, दिखाने और ाइप करने की अगर सरकार की ओर से जरत मुकर्रर है, तो इस उजरत का सूल करना सही है, अब अगर कानून में कि वह मुक़र्ररा उजरत संबंधित क्लर्क ा सकता है तब तो उसके लिये हलाल वरनः सरकारी ख़जाने में जमा करना ोगा, खुद कुछ ले लेना रिश्वत है, गुनाह , और गुनाह में वह सब शरीक होंगे, जन–जिन का इसमें हिस्सा होगा।

प्रश्न 8– मज़दूरों को बोनस लेना ाइज़ है या नहीं ?

उत्तर– मालिक खुशी से दे तो जाइज ।

प्रश्न 9– एक बाप अपने बच्चों को नाजाइज़ तरीक़े से कमाई हुई दौलत खिलाता है, यहाँ तक कि बच्चे बालिग़ और समझदार हो जाते हैं और बच्चों को यह मालूम होता है कि हमारे बाप ने हमें हराम कमाई खिलाई, तो क्या बच्चों को अपने वालिदैन से अलग हो जाना चाहिए? अगर बच्चे अभी इस काबिल नहीं हुए कि ख़ुद कमा खा सकें, तो बच्चों को क्या करना चाहिए? क्या बाप का गुनाह बच्चों को भी होगा या सिर्फ बाप ही को होगा ! इस बारे में कुर्आन व सुन्नत के मुताबिक तफसील से बयान फरमाइए ?

उत्तर– बालिग़ होने और इल्म हो जाने के बाद तो बच्चे भी गुनहगार होंगे। इसलिए उनको इस किस्म की कमाई से परहेज़ करना चाहिए और यह मुमकिन न हो तो फिर अलग हो जाना चाहिए हाँ मगर वालिदैन की खिदमत व इकराम में कोई कमी न करें और उनकी जरूरयात अगर हों तो उसको भी पूरा किया करें।

प्रश्न 10– एक शख्स ट्रक खरीदना चाहता है, जिस की कीमत पचास हजार रुपये है लेकिन वह शख्स पूरे तौर पर इतनी ताकत नहीं रखता कि वह इस ट्रक की इक्ट्ठी कीमत एक ही वक़्त में अदा कर सके। इसलिए वह उसे किस्तों की सूरत में खरीदता है लेकिन किस्तों की सूरत में उसे ट्रक की अस्ली क़ीमत से 30 हजार रुपये ज़ियादह अदा करने पड़ते है और एडवांस बीस हजार रुपये और हर महीना 15 सौ रुपये अदा करने होंगे इस तरह शरीअ़त के मुताबिक इस ट्रक की या और इसी किस्म की किसी भी चीज़ की खरीद व फरोख्त जाइज़ होगी या नहीं।

उत्तर– जाइज़ है।

प्रश्न 11– किस्तों पर गाड़ियों की खरीद व फरोख्त सूद के हुक्म में आती है या नहीं।

उत्तर– अगर बेचने वाला गाड़ी के कागज़ात मुकम्मल तौर पर खरीदार के हवाले कर दे और किस्तों पर फरोख्त करे तो जाइज़ है। इसमें उधार पर बेचने की वजह से गाड़ी की अस्ल क़ीमत में ज़ियादती करना भी जाइज़ है, यह सूद के हुक्म में न होगी, लेकिन इसमें यह जरूरी है कि एक ही मजलिस में यह फैसला कर लें कि खरीदार नकद लेगा या कि उधार किस्तों पर ताकि उसी के हिसाब से कीमत मुकर्रर की जाए जैसे एक चीज़ की नकद कीमत 5,000/- रुपये और उधार किस्तों पर उसको 7,000/- रुपये में फरोख्त करता है, तो इस तरह कीमत में ज़ियादती करना जाइज़ होगा और सूद के हुक्म में न होगा।

●●●

बीते हुए 38 वर्षों से प्रकाशित होने वाला प्रिय उर्दू मासिक पत्र
नदवतुल उलमा का द्विभाषी,
अर्धमासिक "तामीरे हयात" लखनऊ।
वैज्ञानिक, साहित्यिक, धार्मिक लेख, वर्तमान स्थिति की समीक्षा तथा मार्गदर्शन।
वार्षिक अनुदान रु० 150/- मात्र
मैनेजर दफ़्तर तामीरे हयात पो०बा० नं० 93
नदवतुल उलमा, लखनऊ

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

– मुईद अशरफ़ नद

हज्जे बैतुल्लाह के अवसर पर अरफ़ात के मैदान में नमरा की मस्जिद से लगभग पच्चीस लाख से अधिक मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए सऊदी अरब के मुफ़तिये आज़म मुफ़्ती शेख़ अब्दुल अज़ीज़ुलशैख़ ने कहा कि वह अक़ीद–ए–तौहीद (एकेश्वरवाद के विश्वास) को समझें और अल्लाह तआला की बन्दगी ही से मुसलमान तमाम समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं। बेलगाम हथियार इंसानियत के लिए ख़तरा हैं और इस्लाम को आंतकवाद से जोड़ना अन्याय है। मुसलमानों को आर्थिक स्वावलम्बन के लिए बेहतर नीति अपनानी होगी। दूसरों के सहारे से बचाने के लिए उपलब्ध प्राकृतिक अपार साधनों के प्रयोग से अच्छी से अच्छी योजनांए बनाई जायें। साज़िशी तत्तुओं से पूरी तरह सचेत रहने की आवश्यकता है। एक दूसरे पर अविश्वास के कारण हम अवनति का शिकार हैं। अफ़सोस है मुसलमानों में एका नहीं है। ग़ैर मुस्लिम मीडिया मुसलमानों की रचनात्मक क्षमता समाप्त कर रहे हैं।

उन्होंने अपने भाषण में कहा कि मुसलमान साइंस की शिक्षा प्राप्त करें। इंसान को इंसान से बचाकर अल्लाह की शरण में लाना ही इस्लाम है और इस्लाम का उद्देश्य संसार से अत्याचार और नाइंसाफी को समाप्त करना है। इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जो मनुष्य और मनुष्यता के सम्मान का पाठ पढ़ाता है। इस्लाम संसार के हर क्षेत्र में होने वाले अत्याचार का विरोध और उसकी निन्दा करता है। इस्लाम हर प्रकार की क्षेत्री, जाति और रंग भेद के भेदभाव को समाप्त करके इंसानियत को बराबरी का सबक़ देता है। आज मुसलमानों से मैं अपील कर रहा हूं कि दीन की दावत को आधुनिक भाषाओं में बुद्धिमानी के साथ संसार में फैलाना मुसलमानों का कर्तव्य है। आज यह इस्लाम के दुश्मन मुसलमानों की नई नस्ल को राह से भटकाना चाहते हैं। ग़ैर मुस्लिम मीडिया मुस्लमानों को निरर्थक चीज़ों में फंसाना चाहता है ताकि इसकी रचनात्मक क्षमता समाप्त हो जाए। आज का दिन वह दिन है जिस दिन यह उतकृष्ट 'वह्य' ख़ुदा की तरफ़ से मुसलमानों को तुहफ़े मे दी गई अर्थात् "आज मैंने तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया" अब इस दीन को लोगों तक पहुंचाना हमारी ज़िम्मेदारी है।

- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भ्रष्टाचार के फैलाव की गणना करने वाली जर्मन संस्था ट्रांसीप्रेंसी इन्टरनेशलन की छटी वार्षिक रिपोर्ट 2001 के अनुसार संसार का एकमात्र सुपर पावर संयुक्त राज्य अमरीका इसराईल के साथ 91 देशों में भ्रष्टाचार के सोलहवीं स्थान पर नज़र आ रहा है। इसका दर्जा चिली और आयरलैंड से ऊपर है। इस संस्था के चेयरमैन के दावे के अनुस अंतर्राष्ट्रीय मालयाती संस्था इस रिपोर्ट को बहुत महत्व देती है अं भ्रष्टाचारी देशों मे धन लगाने से बच हैं।

- अफ़गान अस्थाई हुकूमत के चेयरमै हामिद करज़ई ने अपने पाकिस्तान दौरे में एक प्रेस कान्फ्रेंस में कहा कि पाकिस्तान का अफ़गानिस्तान पर बहु एहसान है, हम रूस के ख़िलाफ जिहा में पाकिस्तान की भरपूर सहायता भू नहीं सकते और न ही तीस लाख अधिक अफ़गान मुहाजरीन (अव्यवस्थि लोगों) को शरण देने को भूल सक हैं। पाकिस्तान हमारा दूसरा घर और रहेगा। हमने अपनी कड़वाह और सन्देह दफ़न कर दिये हैं औ हमारा पड़ोसी देश अफ़गानिस्तान व एक उन्नति प्राप्त देश देखना पसन्द करेगा और उन्होंने कहा कि भारत प्रधानमंत्री और पाकिस्तान दक्षिण एशिया में शांति, उन्नति और भाईचा और खुशहाली का प्रशंसनीय यु प्रारम्भ कर सकते हैं। यही अफ़गान जनता की इच्छा है कि इस क्षेत्र इस कदर शांति हो कि काबुल इस्लामाबाद आएं और इस्लामाबाद चलकर दिल्ली पहुंचें और इसी तर वापसी की यात्रा हो सके।

इस वर्ष विभिन्न देशों से लगभग 25 लाख मुसलमानों ने हज किया। वर्तमान वर्ष हज के इतिहास का सबसे बड़ा हज का दिन था। हज से पहले कुर्आन की पवित्र आयतों से सुसज्जित ग़िलाफ़ ख़ान–ए–काबः को पहनाया गया। काबः के ग़िलाफफ को तबदील करने के विशेषज्ञ उत्सव में सऊदी हुक्काम (अधिकारीगण) विशेष रूप से सम्मिलित हुए। काबः के ग़िलाफ़ की तैयारी पर 17 मिलयन सऊदी रियाल लागत आई। इस ग़िलाफ़े काबः मे कपड़े के पांच टुकड़े प्रयोग किये गए हैं और एक टुकड़ा 6.5 मीटर ऊंचा और 3.5 मीटर चौड़ा है। ग़िलाफ़े काबः को पवित्र कुर्आन की आयतों से सुसज्जित किया गया।

- जरमनी के शहर म्यूनिख में सेक्योरटी कांफ्रेंस को सम्बोधित करते हुए सिकेट्री जनरल ने कहा कि अमरीका को निरंकुश सत्ता से रोकने के लिए यूरोप अपनी फौजी क्षमता बेहतर बनाए। उन्हों ने कहा कि अमरीका और उनके सहयोगियों के बीच फ़ौजी विभाग में बढ़ती हुई दूरी साइंसी चैलेंज में वृद्धि का कारण बन सकती है क्योंकि अमरीका भविष्य में तनहा फौजी कार्यवाहियां कर सकेगा। उन्होंने आगे कहा कि यदि आत्मसुरक्षा की शक्ति बेहतर न हुई तो यूरोप की फ़ौज अमरीकी पालिसी पर यूरोप का प्रभाव सीमित हो जाएगाग। नैटो की प्रभावी हैसियत क़ायम रखने के लिए यह परिवर्तन अनिवार्य है।

●●●

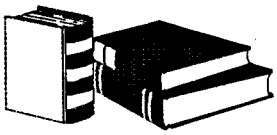

नवीन प्रकाशनों का परिचय

महापुरुष मौलाना सय्यद अबुलहसन अली हसनी नदवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अरबी भाषा सीखने वाले बालकों तथा बालिकाओं के लिये अरबिक रीडरों के दो सेट तैयार किये थे एक सेट का नाम "अलक़िराअतुर्राशिदा" जो तीन भागों में है, दूसरा "क़िससुन्नबीयीन" जो पाँच भागों में है, क़िससुन्नबीयीन में नबियों के क़िस्से हैं जिन को जानने और सुनने के लिये बच्चे क्या बड़े भी उत्सुक रहते हैं और मुस्लिम ही नहीं अमुस्लिम भी इन सच्ची कहानियों को बड़े उल्लास से पढ़ते और सुनते है, विषय तो आकर्षक था ही लेखन शैली ने सोने पर सुहागा का काम किया, चुनांचि उर्दू तथा अंग्रेज़ी में इस के अनुवाद हुये, स्वदेश में तो इन का एक स्थान था ही विदेश में भी इन रीडरों ने स्वीकृति प्राप्त की।

यह सब कुछ हुआ परन्तु अपने देश के केवल हिन्दी जानने वाले विशेषतः हमारे स्कूल कालेज के मुस्लिम छात्र इन सच्ची कहानियों से अपरिचित थे बड़ी आवश्यकता थी कि इन किस्सों को हिन्दी में लाया जाए।

अल्लाह तआला जनाब मौलाना सय्यद अहमद अ़ली साहिब नदवी को पुरस्कारित करे कि उन्हों ने इस आवश्यकता की पूर्ति की और खुदा भला करे "मुहम्मद अलहसनी ट्रस्ट" का जिसने इसे प्रकाशित तथा प्रसारित करके कौम को आभारी किया।

यह किस्से दो भागों में छपे हैं, पहले भाग में हज़रते इब्राहिम, हज़रते याकूब, हज़रते यूसुफ, हज़रते आदम, हज़रते नूह, हज़रते दाऊद, हज़रते सुलैमान, हज़रते ऐयूब, हज़रते यूनुस, हज़रते ज़करीया, हज़रते यहया, हज़रते ईसा, अलैहिस्सलाम के किस्से हैं जबकि दूसरे भाग में हमारे हुज़ूर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संक्षिप्त जीवनी और उनके काल का वर्णन है।

भाषा सरल है और अनुवादन शैली ऐसी है कि डायरेक्ट लिखी हुई पुस्तकें लगती हैं। आशा है कि हिन्दी भाषियों में यह किस्से स्वीकृति प्राप्त करेंगे, प्रकाशक से अनुरोध है कि वह इन्हें कालिजों के टीचरों द्वारा मुस्लिम क्षेत्रों तक पहुंचाने का प्रयास करें।

दोनों भागों में कुछ प्रकाशन त्रुटियां अवश्य हैं परन्तु वह किसी गिन्ती में नहीं हैं, अगले प्रकाशन में स्वयं ही ठीक हो जायेंगी।

पुस्तक का नाम **"नबियों के किस्से"** है, पहला भाग 18×22" के 216 पृष्ठों पर फैला हुआ है जबकि दूसरे भाग में 248 पृष्ठ है कागज तथा प्रकाशन प्रशंसनीय हैं। हर भाग का मूल्य 40/-रुपये है।

मिलने का पता :–

मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम पो० बाक्स 119 नदवतुल उलमा लखनऊ।

एअ़लान

इस पत्रिका में जहाँ भी अल्लाह के रसूल के नाम के पश्चात (स०) लिखा हो, वहाँ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवश्य पढ़ा करें।